कवि-श्री माला

• तमिल •

कवि

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

सम्पादक—अनुवादक

क म शिवराम शर्मा



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक
मोहनलाल भट्ट
मन्त्री
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दीनगर, वर्धा
● ● ●

प्रथम संस्करण—३००
मई, १९६२
मूल्य—रु. २/–
● ● ●

मुद्रक
मोहनलाल भट्ट
राष्ट्रभाषा प्रेस
हिन्दीनगर, वर्धा
● ● ●

आमुख

हर्षका विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा अपने कार्य कालके २५ वर्ष सन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मनाये जानेवाले रजत-जयन्ती महोत्सवके अवसर पर सभी भारतीय भाषाओंके मान्य कवियोंका तथा उनके उत्कृष्ट काव्यका परिचय 'कवि-श्री माला' की पच्चीस पुस्तकोंमें हिन्दी-गद्यानुवाद सहित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके सामने आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ काव्य-सर्जकका निर्णय करना एक कठिन कार्य है फिर भी अपनी सीमाओंको ध्यानमें रखते हुए गण्यमान्य उन-उन भाषाओंके विद्वानोंकी रायसे ही चुनावका कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कवियोंकी रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यका परिचय और कवि विशेषका परिचय दिया गया है। जिस भाषाके ये कवियोंका चुनाव किया गया है उनका चुनाव करते समय सन् १९२ से पूर्वका साहित्य और १९२ से बादका साहित्य—इस तरहसे एक विभाजन-रेखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग सन् १९२० के पूर्वके तथा १९० के बादके साहित्यमें प्रचलित विचार-धारामें एक विशेष प्रकारका आमूलाग्र-सा पाया जाता है।

श्री ग. म. शिवरामजी शर्माने प्रस्तुत पुस्तकमें संकलित साहित्यको चुनने, काव्यांशको सम्पादित तथा अनूदित कर सारी सामग्रीको इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। संग्रहकी आवरण चित्रावलीको सजाने देनेमें श्री एस्. एम्. अवसरकरजी (डीन, सर जे. जे. इन्स्टीट्यूट आफ अप्लाईड आर्ट, बम्बई) का उदार सहयोग मिला है उसके लिए समिति उनकी आभारी है।

इसके अतिरिक्त वर्धा तथा अन्यान्य दृष्टियोंसे भिन्न-भिन्न प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है उनके प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है प्रस्तुत संग्रह पाठकोंको रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

मन्त्री,
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

अनुक्रमणिका

कवि-श्री माला

तमिल



नामक्कल रामलिंगम पिल्ल

तमिल साहित्य परिचय

[१९२० से आजतक]

तमिल भाषा
और
उसका साहित्य

• • •

[आरम्भसे सन् १९२ तक के तमिल साहित्यका संक्षिप्त परिचय कवि-श्री माला तमिल—सुब्रह्मण्य भारती में दिया गया है।]

बीसवीं सदीके तीसरी दशाब्दीके आरम्भके साथ साथ दुनिया भरके इतिहासके एक नये युगका आरम्भ हुआ। सन् १९१४ ई में यूरोपमें एक युद्धका आरम्भ हुआ। अमेरिकाको इस युद्धमें भाग लेना पड़ा और जापानने भी इसमें भाग लिया। इस युद्धका प्रभाव सारे संसारपर पड़ा। इस युद्धके बीचमें ही रूसमें महान विप्लव हुआ। जार नामक एकाधिकारी राजाका पतन हुआ और लेनिनके नेतृत्वमें साम्यवादियोंने शासनका भार उठाया। जर्मनीके कैसर नामक प्रबल राजाका पतन हुआ। अनेकों देशोंके राजा पद-च्युत हो गए।

इस युद्धका प्रभाव भारतपर भी पड़ा। सन् १९१५ में श्रीमती एनी बसेण्टने "होम रूल" आन्दोलन शुरू किया था। करीब उसी समय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक छह वर्षके कारावासके बाद छूटे। उनका भी समर्थन पाकर श्रीमती एनी बसेण्टके आन्दोलनने बहुत बड़ा रूप धारण किया। इसी समय दक्षिण आफ्रिकासे गांधीजी भारत वापस आये। सन् १९१८ में उन्होंने हिन्दीके

प्रचारकी एक विस्तृत योजना बनाई। बंगालमें रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी कीर्ति बढ़ने लगी और उनकी रचनाओंका प्रचार बढ़ने लगा। इन सारी बातोंका परिणाम यह हुआ कि भारतकी सभी भाषाओंके लेखकोंका दृष्टिकोण बदलने लगा।

वैसे ही अंग्रेजोंके आगमनके बाद भारतीय भाषाओंमें गद्यकी उन्नति बढ़ने लगी। इन सभी परिस्थितियोंका परिणाम यह हुआ कि भारतीय लेखकोंका ध्यान राष्ट्रीयता की ओर आकृष्ट हुआ। पुरानी भक्ति-धाराकी गति मन्द पड़ी और देश-भक्तिकी धारा तेजीसे बहने लगी। यही बात हम तमिल साहित्यमें भी पाते हैं।

तमिल साहित्यमें इस समयकी प्रवृत्तिका परिचय पानेके लिए उस प्रदेशकी एक और विशेषताका परिचय पाना आवश्यक है।

मोटे तौरपर यद्यपि तमिल प्रदेशमें भी चार वर्ण—ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र—मान्य हैं तो भी अन्य तीन वर्णोंकी अपेक्षा ब्राह्मणका एक विशिष्ट अस्तित्व रहा। बहुधा क्षत्रिय और वैश्य भी शूद्र कहलाए। ब्राह्मणोंने जीवनके सभी क्षेत्रोंमें अधिक उन्नति की थी राजनैतिक क्षेत्रमें ब्राह्मणेतर इने गिने ही थे। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वराज्यका आन्दोलन जब प्रबल होने लगा तब सरकारकी प्रेरणासे ब्राह्मणेतरोंका "जस्टिस पार्टी" नामसे एक नया दल स्थापित हुआ। यह दल परिस्थिति-वश कुछ समय तक नाम मात्रके लिए ही सफल बना रहा। सन् १९३७ में यह दल कांग्रेस-दल द्वारा बुरी तरह परास्त हुआ और उसका अस्तित्व अब नाम मात्रके लिए रह गया। पर इस दलके प्रभावसे "द्रविड़ कषगम" की स्थापना हुई। "कषगम" का अर्थ है संघ (सभा)। इस संघका तमिल-साहित्यपर बहुत प्रभाव पड़ा।

करीब सन् १९२ तक सार्वजनिक क्षेत्रोंमें तमिल भाषाका प्रयोग बहुत कम होता था। लोग अंग्रेजीमें बोलनेमें ही गौरवका अनुभव करते थे। संगीतकी भाषा भी अधिकतर तेलुगु ही थी। दक्षिण भारतमें प्रचलित संगीतकी शैली उत्तर भारतीय संगीतकी शैलीसे भिन्न है। दक्षिण भारतका संगीत "कर्नाटक संगीत" और उत्तर भारतीय संगीत "हिन्दुस्तानी संगीत" के नामसे प्रसिद्ध है। कर्नाटक संगीतका प्रचार दक्षिण भारतके तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषा-भाषियोंकी अपेक्षा तमिल भाषा-क्षेत्रमें अधिक था फिर भी गीत तेलुगु भाषाके ही होते थे। प्रसिद्ध गीतकारोंकी रचनाएँ अधिकतर तेलुगु और कुछ संस्कृतमें रहा करती थीं। इस परिस्थितिका परिणाम यह हुआ कि लोग तमिल गीतोंकी माँग पेश करने लगे। संगीत सम्मेलनकी स्थापनाके परिणाम स्वरूप "तमिल संगीत सम्मेलन" की अलगसे स्थापना हुई। यद्यपि इस तरहका भेद भाव बहुत लोगोंको बुरा लगा तो भी इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन आन्दोलनोंके कारण तमिल भाषाकी बहुत अधिक उन्नति हुई।

पश्चिमके सम्पर्कने भारतीय भाषाओंपर गहरा प्रभाव डाला। गद्य साहित्यकी धाराका एक नया मार्ग खुला। नये तरहके उपन्यास कहानियाँ जीवन चरित्र यात्रा-वर्णन आलोचनात्मक रचनाएँ आदिकी सृष्टि होने लगी। नये ढंगके नाटक रचे जाने लगे। कविता मुख्य विषय पहले विशेष रूपसे धार्मिक रहा करता था—अब वह नहीं रहा।

पहले हम गद्य-साहित्यको लें। प्राचीन कालमें न लिखनेकी सुविधा थी और न लिखित रचना की रक्षाकी सुविधा थी। यही कारण है कि हमारी भाषाओंमें गद्य-साहित्यका आधिक्य नहीं है। फिर भी यह निश्चित है कि प्राचीन कालसे ही तमिल भाषामें उत्कृष्ट गद्य-रचनाएँ हुईं। इतस्ततः सब प्राचीन गद्य-साहित्यका उल्लेख पाया जाता है। प्राचीन तमिल प्रान्तीय बौद्धों और जैनोंकी तमिल और संस्कृत मिश्रित "मणि प्रवाळ" शैलीकी गद्य-रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। तमिलकी सबसे पुरानी रचना "तोल काप्पियम" की रचना चोल राजाओंके कालकी है। आधुनिक शैलीकी प्रामाणिक गद्य रचनाका आरम्भ १९ वी सदीसे होता है। तमिल भाषाकी सर्व प्रथम छपी पुस्तक सन् १५५४ में पुर्तगालकी राजधानी लिस्बनमें छपी। सन् १५७७ में कोल्लम (यह आजकल केरल राज्यके अन्तर्गत है) नामक नगर में छपी "तम्बिरान वणक्कम" नामक १६ पृष्ठोंकी पुस्तिका भारतमें मुद्रित सर्व प्रथम तमिल-पुस्तक है।

अठारहवीं सदीमें शिवज्ञान मुनिवर नामक शैव लेखकने "शिवज्ञान बोध" नामक काव्यकी टीका रची। उनके समकालीन बस्की नामक ईसाई धर्म प्रचारकने "वेदियर ओघुक्कम" नामक रचना की। उन्नीसवीं सदीमें पाश्चात्य ढंगकी शिक्षाका आरम्भ हुआ। उसके लिए अनेक प्रकारकी पुस्तकोंकी आवश्यकता हुई। अतः अन्य भाषाओंके साथ-साथ तमिलमें भूगोल इतिहास विज्ञान गणित आदिकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इस सदीमें मुद्रणालयों (छापाखानों) की संख्या भी बढ़ी।

इस सदीके प्रमुख लेखकोंमें रामलिंग स्वामी एक हैं। आप प्रसिद्ध कवि थे और प्राचीन भक्त-कवि परम्पराके अन्तिम कवि माने जाते हैं। इनकी "मनु मुरै कण्ड वाचकम" और "जीव कारुण्य ओघुक्कम" प्रसिद्ध गद्य-रचनाएँ हैं। ताण्डव राय मुदलियार नामक लेखक संस्कृत हिन्दी मराठी कन्नड़ तेलुगु आदि कई भाषाओंके विद्वान थे। इनकी कथा-मंजरी नामक कहानियोंका संग्रह एक प्रसिद्ध रचना है। इन्होंने पंचतन्त्र का तमिल भाषामें अनुवाद किया था। "समापति नावलर" व "द्रविड प्रकाशिका" नामक पुस्तक रचकर साहित्यके इतिहासकी परम्परा चलाई। "वीरा सामी चेट्टियार" की "विनोद-रस-मंजरी" एक प्रसिद्ध रचना है। इसमें कम्बन औवै पुगलेन्दि जैसे प्रसिद्ध प्राचीन साहित्य कारोंका जीवन-वृत्तान्त पाया जाता है।

वेद नायकम पिळ्ळैने आधुनिक ढंगके "प्रताप मुदलियार चरित्तिरम" नामक सर्व प्रथम उपन्यास की रचना की। इन्हींका अनुकरण करके राजम अय्यरने कमलाम्बाल चरित्तिरम नामक उपन्यास रचा।

बीसवीं सदीमें गद्य साहित्यकी बहुत अधिक उन्नति हुई। इस सदीमें साहित्यकी गतिमें भारी परिवर्तन तो हुआ ही साथ साथ देशकी स्थितिमें और सामाजिक संगठनमें भी परिवर्तन हुआ। समाचार-पत्र सिनेमा और रेडियोके कारण जनताकी विचार-धारा बदल गई। इस सदीके पूर्व केवल पढ़े लिखे लोग ही साहित्यका आस्वादन कर सकते थे। रेडियो और सिनेमाके प्रभावसे अपढ़ लोगोंको भी साहित्यके रसास्वादनका अवसर प्राप्त हुआ। इधर जनतामें शिक्षाका प्रचार बढ़ने लगा और परिणाम स्वरूप पढ़े-लिखे लोगोंकी संख्या बहुत बढ़ी। इस लिए साहित्यका क्षेत्र सीमित न रहकर अब विस्तृत हो गया। विशेष रूपसे स्वतन्त्रता-प्राप्तिके बाद जबसे वयस्क मताधिकार प्राप्त हुआ तबसे सामान्य जनताका ध्यान शिक्षाकी ओर तथा अन्य अनेक प्रकारके विषयोंकी ओर जाने लगा।

साहित्यके पुनरुद्धारका काम कई प्राचीन रचनाओंके प्रकाशनके साथ आरम्भ हुआ। इस क्षेत्रमें स्वर्गीय महामहोपाध्याय ड॰ वे॰ स्वामिनाथ अय्यरकी सेवाएँ अत्यन्त सराहनीय हैं। आपने तमिल प्रदेश भरमें घूम घूमकर कई उत्कृष्ट प्राचीन रचनाओंका पता लगाया उन रचनाओंका प्रकाशन हुआ और कई लोगोंने उन प्राचीन रचनाओंकी सरल टीकाएँ लिखी। कई प्रकाशकोंने उन रचनाओंके सस्ते संस्करण निकाले। अँग्रेजीकी शिक्षा प्राप्त कई विद्वानोंने अँग्रेजी तथा अन्य भाषाओंकी उत्कृष्ट रचनाओंका तमिलमें अनुवाद किया। भाषाकी उन्नतिको ही अपना ध्येय मानकर कई संस्थाएँ खड़ी हुई और लेखकोंके संघ स्थापित हुए।

बीसवीं सदीको तमिल गद्य-साहित्यका स्वर्ण-युग माना जा सकता है। इस समय देशकी परिस्थितिमें समाज-रचनामें और साहित्यकी शैलियोंमें बड़े परिवर्तन हुए। पश्चिमी शिक्षा विज्ञानकी प्रगति आदिके कारण पुरानी रूढ़ियों एवं परम्परागत विश्वासोंका नाश होने लगा। पत्रिकाओं आकाशवाणी और सिनेमाओंने जनतामें विचारकी एकता लानेमें सफलता पाई। राजनैतिक प्रचार विभिन्न दलोंके नारे निर्वाचन आदिने सामान्य अपढ़ लोगोंको भी पठित-सम्पन्न कर दिया। इन परिस्थितियोंमें चिन्तन-धारा ही बदलने लगी। इस कालमें साहित्यकी सर्जनाका उद्देश्य [illegible] सामान्य जनहित रहा। रचनाओंमें सरलता स्पष्टता और माधुर्यका आगमन हुआ।

तमिल प्रदेशका प्राचीन साहित्य ताड़ पत्रोंपर लिखा गया था। ताड़के पत्तोंपर लौह-लेखनीसे लिखनेका क्रम तमिल प्रदेशमें यद्यपि बहुत कम होने लगा है तो भी अभीतक पूरी तरहसे समाप्त नहीं हुआ है। ताड़-पत्र सैकड़ों वर्ष सुरक्षित

रक्षा जा सकता है। ऐसे ताड़ पत्रोंसे ही स्वर्गीय महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यरने प्राचीन तमिल महा-काव्योंका पता लगाकर उन्हें प्रकाशित किया था। उनके बाद अनेक विद्वान अन्यान्य रचनाओंकी खोजमें लगे। फलतः कई प्राचीनतम तमिल-ग्रन्थ प्रकाशित हुए। कई ग्रन्थोंकी भाषा जटिल होनेके कारण उनकी सरल सुबोध शैलीमें व्याख्याएँ एवं भूमिकाएँ लिखी गईं। प्राचीनतम तमिल-काव्योंके अनूठे दृश्योंको गद्यमें लेकर पुस्तकके रूपमें प्रकाशित किया गया।

बीसवीं सदीके आरम्भमें सी वै दामोदरम पिल्लैने कई प्राचीन रचनाओंको प्रकाशित किया। उ वे स्वामिनाथ अय्यरकी तरह श्री वैयापुरी पिल्लै नामक विद्वानने जीवनभर प्राचीन ताड़-पत्रोंकी खोज करके अनेक प्राचीन रचनाओंको प्रकाशित किया। प्राचीन काव्योंके टीकाकारोंमें पिन्नत्तूर नारायण स्वामि अय्यर, मा मु वेंकटस्वामि नाट्टार, औवै दुरैस्वामि पिल्लै आदि प्रसिद्ध हैं। मु कदिरेशन चेट्टियारने "तिरुवाचकम" नामक भक्ति-ग्रन्थकी टीका लिखी। आर. के षण्मुखम चेट्टियारने नवीन रीतिसे शिलप्पधिकारम नामक प्राचीन महाकाव्यके पुहार नामक काण्डकी टीका रची।

कई विद्वानोंने प्राचीन सब कालीन रचनाओंका संक्षिप्त सारांश लिखा है। ऐसे लेखकोंमें मु वरदराजनार और कि वा जगन्नाथके नाम उल्लेखनीय हैं।

कई विद्वान लेखकोंने उत्कृष्ट प्राचीन रचनाओंके आधारपर तत्कालीन व्यक्तिविशेषोंका परिचय कराया है। डाक्टर मु वरदराजनारकी तिरुवल्लुवर या जीवन प्रकाश टी पी मीनाक्षि सुन्दरनार कृत "वल्लुवर-दृष्ट-देश और काम" रा पि सेतु पिल्लै कृत "ऊरुम पेरुम" (नाम और धाम) तथा पेरिय सामि तूरन कृत भारतिय तमिल आदि ऐसी रचनाएँ हैं।

समालोचना-साहित्यकी परम्परा प्रसिद्ध देशभक्त स्वर्गीय व वे सु अय्यरने चलाई थी। अ मुत्तु शिवन व च ज्ञान सम्बन्ध रा श्री देशिकन चिदम्बर रघुनाथ आचार्य श्रीनिवास राघवन आदि उत्कृष्ट समालोचक हैं।

पत्र पत्रिकाओंमें सर्वोच्च स्थान स्वदेश मित्रन का है। सन् १८८२ ई में श्री सुब्रह्मण्य अय्यर नामक प्रसिद्ध देश-भक्तने इस पत्रका आरम्भ किया था। इस पत्रको चलानेमें आपको असंख्य कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। इसके बाद इण्डिया नामक साप्ताहिक पत्र निकला। इसके सम्पादक सुब्रह्मण्य भारती थे। अपने राजनैतिक विचारोंके कारण यह पत्र तत्कालीन अंग्रेजी शासकोंके कोपका पात्र बना। इस पत्रके बाद भारतीने पाण्डिचेरीसे विजया सूर्योदय कर्म-योगि-आदि पत्र निकाले। पर कोई पत्र दीर्घ-कालीन न रहा।

सन् १८९९ में लोकोपकारी नामक साप्ताहिक पत्र निकलने लगा। शुरूमें इस पत्रमें केवल धार्मिक चर्चा रहती थी पर सन् १९२२ में श्री परलि सु नेल्लैयप्पर इसके सम्पादक बने तबसे इस पत्रमें राजनैतिक चर्चा भी होने लगी।

श्री मलय्यप्पर तमिल प्रदेशके प्रसिद्ध पत्रकार हैं। आप स्वर्गीय कवि सुब्रह्मण्य भारतीके साथ थे। इस सदीके दूसरे दशकमें श्री वो चिदम्बरम पिल्लै नामक प्रसिद्ध देश भक्तने भारत और सिंहलके बीच स्वदेशी जहाज चलाकर देशभरमें स्वदेशी आन्दोलनका बल बढ़ाया था। इसके परिणाम स्वरूप उन्हें सरकारके कोप का पात्र बनना पड़ा। इस सिलसिलेमें श्री मलय्यप्परको २० सालकी सख्त कारावासका दण्ड भुगतना पड़ा। फिर पचास सालकी आयुमें आप गांधीजीके आन्दोलनमें चले गए। तमिल भाषाके प्रसिद्ध साहित्यकारके नामसे प्रसिद्धि प्राप्त स्वर्गीय रा कृष्णमूर्तिको साहित्य-क्षेत्रमें लानेका श्रेय आप ही को है। आप अत्यन्त नम्र स्वभावके मिलनसार और हँसमुख हैं।

सन् १९१६ १९१७ में जब श्रीमती एनी बेसेन्टका आन्दोलन जोरोंपर था तब देश भक्तन नामक एक दैनिक पत्र निकला। तिरु वी के नामसे प्रसिद्ध श्री वी कल्याण सुन्दर मुदलियार इस पत्रके सम्पादक थे। श्री मुदलियार मदरास के वेसली कालेजके तमिल भाषाके प्राध्यापक थे। राजनैतिक आन्दोलनमें भाग लेनेके उद्देश्यसे आपने प्राध्यापकका पद त्याग दिया। कुछ दिन इस पत्रका सम्पादन करनेके बाद आप इस पत्रसे हट गए। तब स्वर्गीय व वे सु अय्यर इस पत्रके सम्पादक हुए। श्री अय्यर इंग्लैण्डमें वीर सावरकरके साथी थे। सरकार आपको कैद करना चाहती थी पर रूप और नाम बदलकर श्री अय्यर महोदय सरकारके पन्जेसे बचकर पांडिचेरी आ पहुँचे। वहां अरविन्द बाबू और सुब्रह्मण्य भारतीके साथ रहने लगे। १९१९ में जब नया शासन विधान अमलमें आया तब अंग्रेज सरकारने राजनैतिक कैदियोंको मुक्त किया। उस समय भारती और अय्यर पांडिचेरीसे मद्रास आ पहुँचे। इसी समय गांधीजी सक्रिय राजनैतिक आन्दोलनमें भाग लेने लगे थे। अय्यरपर गांधीजीका बड़ा प्रभाव पड़ा। आपने आतंकवादको छोड़कर गांधीजीका अहिंसा और सत्यका मार्ग अपनाया।

देश-भक्तन पत्रका एक लेख आपत्ति जनक माना गया। परिणामतः सरकार पत्रपर कार्रवाई चलाने लगी। लेखके लिखनेमें या प्रकाशनार्थ पत्रमें स्थान देनेमें श्री अय्यरका हाथ नहीं था। फिर भी आपने घोषित किया कि सम्पादकके नाते सारा उत्तर दायित्व मैं अपने ऊपर लेता हूँ। उन्होंने उस लेखक लेखकका पता बतानेसे भी इनकार कर दिया। परिणाम यह हुआ कि उन्हें उस लेखको पत्रमें प्रकाशित करनेके कारण जेल जाना पड़ा।

उसके बाद कुछ दिनों तक पण्डित सु गणपत्य्यर इस पत्रका सम्पादन करते रहे। उस समयकी राजनैतिक परिस्थितिमें यह पत्र अधिक समय तक नहीं चल सका।

"देश भक्तन" के बन्द होनेके बाद श्री कल्याण सुन्दर मुदलियार (तिरु वि क) ने नवशक्ति नामक साप्ताहिक पत्र चलाया। कुछ समय तक कल्कि नामक रा कृष्णमूर्ति इस पत्रके उप-सम्पादक थे।

गांधीजीके आन्दोलनके समय मद्रासमें "स्वराज्य" नामक अंग्रेजी दैनिक पत्र स्वर्गीय आन्ध्र-केसरी टी. प्रकाशम्‌के संचालनमें चल रहा था। स्वर्गीय प्रकाशम्‌ने उस पत्रका तमिल संस्करण निकालनेका निश्चय किया। तमिल स्वराज्य दैनिक पत्रका सम्पादन पहले योगी शुद्धानन्द भारती करते थे। उनके बाद स्वर्गीय एम. एस. सुब्रह्मण्य अय्यर उसके सम्पादक हुए। तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितिमें स्वराज्यके दोनों संस्करण अल्पकालीन रहे।

तमिल प्रदेशके डाक्टर पी. वरदराजुलु नायुडु एक प्रसिद्ध देश-भक्त थे। आप एनी बेसन्टके होम-रूल आन्दोलनके समयमें ही प्रसिद्ध हो गए थे। आप "दक्षिणका तिलक" कहलाते थे। आपका तमिल नाडु साप्ताहिक पत्र बड़ा लोक-प्रिय था। कुछ समय तक डाक्टर नायुडुने इस पत्रका दैनिक संस्करण मद्रास शहरसे निकाला।

राजाजीने विमोचनम् नामक मासिक पत्र चलाया था। राजाजीने तिरुचेंगोड़में एक गांधी-आश्रम भी स्थापित किया था और वहांपर रचनात्मक कार्यक्रमका प्रबन्ध कर रखा था। उसी सिलसिलेमें मद्यपान निषेध सम्बन्धी आन्दोलनके लिए यह मासिक पत्र निकाला गया। राजाजी इसके सम्पादक थे और कल्कि कृष्णमूर्ति सम्पादन कार्यमें उनकी सहायता करते थे।

गांधीजीके आन्दोलनके समय प्रकाशित होनेवाले "सुतंतिरच्चंगु" (स्वतन्त्र-शंख) नामक पत्रका लोगोंपर बहुत अधिक प्रभाव था। आठ पृष्ठोंका यह दैनिक पत्र पैसे-पैसेमें बिकता था। सरकारने कई बार इसको रोका। कुछ समय बन्द रहनेके बाद यह पत्र फिर प्रकाशित हो उठता था। इसमें प्रकाशित करनेके लिए बापूजी हरिजन या नवजीवन के लेखोंके प्रूफ पहले ही भेज दिया करते थे और वे लेख तमिलमें अनूदित होकर स्वतन्त्र शंख में प्रकाशित होते थे। कई नौजवान इस पत्रके संचालनमें बड़े उत्साहके साथ सहयोग देते थे। इन नवयुवकोंको सरकार खूब सताती थी। इस पत्रके कार्यालयमें एक भोजन-शालाका प्रबन्ध था। पत्रका जो कार्यकर्ता सरकारकी सजा पाकर जेल जाता उसके परिवारके खान-पानका प्रबन्ध उस भोजन-शालामें होता था। अपने अल्प कालके जीवनमें इसने तमिल प्रदेशके लोगोंको बहुत अधिक प्रभावित किया था।

मणिक्कोडि नामक पाक्षिक पत्रका तमिल पत्र-साहित्यमें ऊँचा स्थान रहा। यद्यपि यह दीर्घ कालीन नहीं रहा तो भी नामी साहित्यकार इसके सम्पादक रहे। आनन्द बोधिनी, प्रचण्ड विकटन आदि कई वर्षोंसे साहित्यकी सेवा करनेवाले पत्र हैं।

तमिल पत्रकारोंमें श्री टी. एस. चोक्कलिंगमका बड़ा आदर-पूर्ण स्थान है। आप "मणिक्कोडि" के सम्पादक थे। इसके बाद गांधी नामक साप्ताहिक पत्रके सम्पादक बने। इसके बाद दिन मणि नामक प्रसिद्ध दैनिक पत्रके सम्पादक

थे। कुछ समय बाद इस पत्रको भी छोड़कर "दिनसरि" नामक दैनिक पत्र निकाला। पर यह पत्र अधिक समय तक नहीं चला। इस समय तमिल भाषाके आठ दस दैनिक पत्र हैं इन सबमें "सुदेश मित्तिरन" (स्वदेश-मित्र) और "दिन मणि" उच्च श्रेणीके हैं।

तमिल भाषाके कई साप्ताहिक पत्र हैं पर सबसे अधिक लोकप्रिय साप्ताहिक आनन्द विकटन कल्कि और कुमुदम हैं। आनन्द विकटन बहुत पुराना पत्र है। करीब पचास वर्ष पूर्व उसका आरम्भ हुआ था। पर करीब तीस वर्ष हुए, श्री एस एस वासन ने उसका सारा भार अपने ऊपर लिया। तबसे इस साप्ताहिक पत्रकी बहुत उन्नति हुई। उन्हें स्वर्गीय कल्कि कृष्णमूर्तिका सहयोग मिला। सब पन्द्रह वर्ष तक आनन्द विकटनका सम्पादन करनेके बाद कल्कि कृष्णमूर्तिने श्री टी॰ सदाशिवनका सहयोग पाकर कल्कि नामक साप्ताहिक पत्र शुरू किया।

यहाँपर कल्कि नामकी कहानी बताना अप्रासंगिक होनेपर भी अनुचित नहीं मानी जाएगी। तमिल वर्णमालाके स्वरोंमें ऋ अक्षर नहीं है। कृष्ण मूर्ति इसका किरुष्णमूर्ति लिखा जाता है। रा किरुष्णमूर्ति बहुधा अपने लेखोंमें अपना नाम "रा कि" लिखा करते थे। आपकी पत्नीका नाम "कल्याणी" है। पत्नीके नामके प्रथमाक्षर कल् और अपने नामका प्रथमाक्षर कि जोड़कर वे अपने लेखोंमें अपना कल्कि नाम देने लगे। यह नाम स्थाई हो गया और उनके नए पत्रका नाम भी यही हुआ।

कलैमगळ उत्तम श्रेणीका मासिक-पत्र है। इसके सम्पादक कि॰ वा जगन्नाथन हैं। तमिल भाषामें अन्य अनेकों साप्ताहिक पाक्षिक और मासिक पत्र निकल रहे हैं। इतना बतलाना अवश्य आवश्यक है कि शायद ही कोई भारतीय भाषा है जिसमें इतनी अधिक संख्यामें इतनी दक्षताके साथ पत्र प्रकाशित होते हों। विशेष महत्वकी बात यह है कि हर पत्रके ग्राहकोंकी संख्या भी बहुत अधिक है। तमिल पत्रोंकी एक और विशेषता यह है कि वे साहित्यकारों को खूब प्रोत्साहित करते हैं। कलैमगळ पत्रकी ओरसे सर्वोत्तम उपन्यासकारको प्रति वर्ष १ ० रुपया पुरस्कार दिया जाता है। आनन्द विकटन ने अभी कुछ महीनों पहले उत्तम नाटककारों और उपन्यासकारोंमें करीब पचास हजार रुपए पुरस्कार रूपमें बाँटे थे। समय-समयपर पत्रिकाओंमें लघु-कथा उपन्यास नाटक आदि की स्पर्धाएँ चला करती हैं और अच्छी रचनाओंको पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

"धर्मपुर आधीनम्" नामक शैव मठका मुख पत्र मासिक "ज्ञानसम्बन्धम्" तमिल और शैव धर्मकी उन्नतिके उद्देश्यसे चलाया जाता है। करन्थै तमिल संगमका "तमिल पोलिल" मासिक और मरै मलै अडिगल नामसे प्रसिद्ध स्वामी वेदाचलका मासिक पत्र "ज्ञान सागरम्" तमिल भाषाकी बड़ी सेवा कर रहे हैं।

कहानीकार तमिलमें अनेक हैं। हर एककी अपनी अपनी विशेषता है। यह कहना कठिन है कि कौन सर्व-श्रेष्ठ कहानीकार है।

स्वर्गीय श्री व वे सु अय्यर ही आधुनिक ढंगकी कहानियोंके सब प्रथम लेखक हैं। आपकी "कुळत्तंगरै अरसमरम" (तलाब तीरका पीपल) आदि कई कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। अन्य कहानीकारोंमें कु प राजगोपालन बी एस रामय्या सोमु कूरल विस्वन पिचमूर्ति पिचमूर्ति की वा जगन्नाथन ल ना कुमार स्वामी ति ज र., वे एम कल्याण आस्मुगम पुदुमिया आदि प्रमुख कहानीकार हैं। हास्य रसात्मक कहानियाँ लिखनेमें कल्कि तुमिलन नाडोडि आदि प्रसिद्ध हैं। एस एस रामामृतमकी तत्वार्थ-पूर्ण कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। राजाजीने अपनी राजनैतिक कहानियोंसे तमिल-साहित्यकी सेवा की है। अकिलनकी कहानियोंका हिन्दी उर्दू कन्नड़ तेलगु अँग्रेजी आदि भाषाओंमें अनुवाद हुआ है। 'पुदुमैपित्तन' नामक कहानीकारने मोपासाँ नामक फ्रांसीसी कहानीकारकी शैलीपर कहानियाँ लिखी हैं।

तमिल भाषाका सर्व प्रथम उपन्यास वेदनायकम पिळ्ळैका प्रताप मुदलियार चरित्तिरम है। इसके बाद वी राजम अय्यरने कमलाम्बाल चरित्तिरम और पी माधवय्याने पद्मावती चरित्तिरम' नामक उपन्यास लिखा। वडुवूर दुरै स्वामी अय्यंगार आरणी कुप्पुस्वामि मुदलियार और कोदैनायकि अम्माळने अनेक उपन्यास लिखे हैं। पर इन उपन्यासोंमें जीवन-तत्व-सम्बन्धी कोई बात नहीं है। इनको अँग्रेजीके रेनाल्ड्सके उपन्यासोंकी अथवा हिन्दीके चन्द्रकान्ता भूतनाथ जैसे उपन्यासोंकी श्रेणीके मान सकते हैं। अकिलन वी एम कल्याण लक्ष्मी आदि के उपन्यासोंमें जीवनका सजीव वर्णन है। ऐतिहासिक उपन्यास लिखनेकी परम्परा तमिल साहित्यमें स्वर्गीय कल्कि चलायी। शिवकामियिन शपथम, पोन्नियिन सेल्वन आदि इसी कोटिके उपन्यास हैं। बंगला मराठी हिन्दी आदि भाषाओंके उत्कृष्ट उपन्यासोंका अनुवाद तमिलमें हुआ है। ऐसे अनुवादकारोंमें का श्री श्री और तं ना कुमार स्वामि प्रमुख हैं। डाक्टर मु वरदराजनार और कु राजवेलु नई पीढ़ीके उपन्यासकार हैं।

जीवन चरित्र

इस सदीमें तमिल भाषामें जीवन-चरित्र सम्बन्धी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। डाक्टर महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यरने सरस शैलीमें अपने गुरु मीनाक्षिसुंदरम् पिळ्ळैकी विस्तृत जीवनी लिखी है। डाक्टर मु वरदराजनारने महात्मा गाँधी रवीन्द्रनाथ ठाकुर और बर्नार्ड शा आदिकी जीवनी लिखी है। नामक्कल कविने कई विदेशी विद्वानोंकी जीवनियाँ लिखी हैं। चिदम्बर रघुनाथनका "पुदुमै पित्तनकी जीवनी प्रसिद्ध है। वेसलनट श्रा म पो सि द्वारा कप्पलोट्टिय तमिलन तथा वीर पाण्डिय कट्टबोम्मन और न सञ्जीवी द्वारा लकसिरसर

पत्र। कुछ समय बाद इस पत्रको भी छोड़कर "दिनसरि" नामक दैनिक पत्र निकालने लगे पर यह पत्र अधिक समय तक नहीं चला। इस समय तमिल भाषाके आठ दस दैनिक पत्र हैं। इन सबमें "सुदेश मित्रन" (स्वदेश-मित्र) और "दिन मणि" उल्लेखनीय हैं।

तमिल भाषाके कई साप्ताहिक पत्र हैं पर सबसे अधिक लोकप्रिय साप्ताहिक आनन्द विकटन कल्कि और कुमुदम हैं। आनन्द विकटन बहुत पुराना पत्र है। करीब पचास वर्ष पूर्व उसका आरम्भ हुआ था। पर करीब तीस वर्ष हुए, श्री एस एस वासन्ने उसका भार अपने ऊपर लिया। तबसे इस साप्ताहिक पत्रकी बहुत उन्नति हुई। उन्हें स्वर्गीय कल्कि कृष्णमूर्तिका सहयोग मिला। पन्द्रह वर्ष तक आनन्द विकटनका सम्पादन करनेके बाद कल्कि कृष्णमूर्तिने श्री टी॰ सदाशिवनका सहयोग पाकर कल्कि नामक साप्ताहिक पत्र शुरू किया।

यहाँपर कल्कि नामकी कहानी बताना अप्रासंगिक होनेपर भी अनुचित नहीं मानी जाएगी। तमिल वर्णमालाके स्वरोंमें ऋ अक्षर नहीं है। कृष्ण मूर्ति शब्द "किरुष्णमूर्ति" लिखा जाता है। रा किरुष्णमूर्ति बहुधा अपने लेखोंमें अपना नाम "रा कि" लिखा करते थे। आपकी पत्नीका नाम "कल्याणी" है। पत्नीके नामके प्रथमाक्षर कल् और अपने नामका प्रथमाक्षर कि जोड़कर वे अपने लेखोंमें अपना कल्कि नाम देने लगे। यह नाम स्थाई हो गया और उनके नए पत्रका नाम भी यही हुआ।

कलैमगळ उत्तम श्रेणीका मासिक-पत्र है। इसके सम्पादक कि॰ वा जगन्नाथन हैं। तमिल भाषामें अन्य अनेकों साप्ताहिक पाक्षिक और मासिक पत्र निकल रहे हैं। इतना बतलाना अवश्य आवश्यक है कि शायद ही कोई भारतीय भाषा है जिसमें इतनी अधिक संख्यामें इतनी दक्षताके साथ पत्र प्रकाशित होते हों। विशेष महत्त्वकी बात यह है कि हर पत्रके ग्राहकोंकी संख्या भी बहुत अधिक है। तमिल पत्रोंकी एक और विशेषता यह है कि वे साहित्यकारों को खूब प्रोत्साहित करते हैं। कलैमगळ पत्रकी ओरसे सर्वोत्तम उपन्यासकारको प्रति वर्ष १ रुपएका पुरस्कार दिया जाता है। आनन्द विकटन ने अभी कुछ महीनों पहले उत्तम नाटककारों और एकांकी-कारोंमें करीब पचीस हजार रुपए पुरस्कार रूपमें बाँटे थे। समय-समयपर पत्रिकाओंमें लघु-कथा उपन्यास नाटक आदि की स्पर्धाएँ चला करती हैं और अच्छी रचनाओंका पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

"धर्मपुर आधीनम" नामक शैव मठका मुख पत्र मासिक "ज्ञान सम्बन्धम" तमिल और शैव धर्मकी उन्नतिके उद्देश्यसे चलाया जाता है। करन्दै तमिल संघका "तमिल पोषिल" मासिक और मरै मलै अडिगळ नामसे प्रसिद्ध स्वामी वेदाचलका मासिक पत्र "ज्ञान सागरम" तमिल भाषाकी बड़ी सेवा कर रहे हैं।

कहानीकार तमिलमें अनेक हैं। हर एककी अपनी अपनी विशेषता है। यह कहना कठिन है कि कौन सर्व-श्रेष्ठ कहानीकार है।

स्वर्गीय वी. व. वे. सु. अय्यर ही आधुनिक ढंगकी कहानियोंके सब प्रथम लेखक हैं। आपकी "कुळत्तंगरै अरसमरम" (तालाब तीरका पीपल) आदि कई कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। अन्य कहानीकारोंमें कु. प. राजगोपालन, बी. एस. रामय्या, सोमु, दूरन, चिन्दम्बरसुब्रमणियन, की. वा. जगन्नाथन, टी. ना. कुमार स्वामी, ति. ज. रा., टी. एस. कण्णन, आरमुदम, गुरु प्रिया आदि प्रमुख कहानीकार हैं। हास्य-रसात्मक कहानियाँ लिखनेमें कल्कि, तुमिलन, नाडोडि आदि प्रसिद्ध हैं। एस. एस. रामामृतमकी तत्त्वार्थ-पूर्ण कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। राजाजीने अपनी राजनैतिक कहानियोंसे तमिल-साहित्यकी सेवा की है। कल्किजीकी कहानियोंका हिन्दी, उर्दू, कन्नड़, तेलगु, अंग्रेजी आदि भाषाओंमें अनुवाद हुआ है। 'पुदुमैपित्तन' नामक कहानी-कारने मोपासाँ नामक फ्रांसीसी कहानीकारकी शैलीपर कहानियाँ लिखी हैं।

तमिल भाषाका सर्व प्रथम उपन्यास वेदनायकम पिळ्ळैका "प्रताप मुदलियार चरित्तिरम" है। इसके बाद बी. राजम अय्यरने "कमलाम्बाळ चरित्तिरम" और पी. माधवय्याने "पद्मावती चरित्तिरम" नामक उपन्यास लिखा। वडुवूर दुरै स्वामी अय्यंगार, आरणी कुप्पुस्वामि मुदलियार और कोतैनायकि अम्माळने अनेक उपन्यास लिखे हैं। पर इन उपन्यासोंमें जीवन-तत्त्व-सम्बन्धी कोई बात नहीं है। इनको अंग्रेजीके रेनाल्ड्सके उपन्यासोंकी अथवा हिन्दीके चन्द्रकान्ता भूतनाथ जैसे उपन्यासोंकी श्रेणीके मान सकते हैं। अखिलन, टी. एम. कण्णन, लक्ष्मी आदि के उपन्यासोंमें जीवनका सजीव वर्णन है। ऐतिहासिक उपन्यास लिखनेकी परम्परा तमिल साहित्यमें स्वर्गीय कल्कि ने चलायी। "शिवकामियिन शपथम" "पोन्नियिन सेल्वन" आदि इसी कोटिके उपन्यास हैं। बंगला मराठी हिन्दी आदि भाषाओंके उत्कृष्ट उपन्यासोंका अनुवाद तमिलमें हुआ है। ऐसे अनुवादकारोंमें का. श्री. श्री. और टी. ना. कुमार स्वामि प्रमुख हैं। डाक्टर मु. वरदराजनार और कु. राजवेलु नई शैलीके उपन्यासकार हैं।

जीवन-चरित

इस सदीमें तमिल भाषामें जीवन-चरित सम्बन्धी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। डाक्टर महामहोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यरने सरल शैलीमें अपने गुरु मीनाक्षिसुंदरम् पिळ्ळैकी विस्तृत जीवनी लिखी है। डाक्टर मु. वरदराजनारने महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और बर्नार्ड शा आदिकी जीवनी लिखी है। अब्दुल रहीमने कई विदेशी विद्वानोंकी जीवनियाँ लिखी हैं। चिदम्बर रघुनाथनकी "पुदुमैपित्तनकी जीवनी" प्रसिद्ध है। शान्त भारती म. पो. शि. द्वारा कप्पलोट्टिय तमिळन तथा वीर पाण्डिय कट्टबोम्मन और म. संजीवि द्वारा मरुदिरवर

की जीवनी प्रसिद्ध है। भगवान विनायकम पिल्लै और सोमसुंदर देसिकरने कई तमिल विद्वानोंकी जीवनियाँ लिखी हैं।

आत्मचरित सम्बन्धी भी कई पुस्तकें तमिलमें लिखी गई हैं। डाक्टर महा महोपाध्याय स्वामिनाथ अय्यरका "एन चरितै" (मेरा चरित्र) नामक्कल राम लिंगम पिल्लैका "एन कदै" (मेरी कथा) स्वर्गीय टी एस एस राजनका "निनैवु अलैगळ" (स्मृति की लहरें) और तिरु वि. क. का "वाष्कै कुरिप्पुक्कळ" (जीवनकी घटनाएँ) प्रसिद्ध हैं। अन्य भाषाओंके प्रमुख आत्म चरित्रोंका अनुवाद भी तमिलमें हुआ है।

रेडियोने तमिल भाषाकी बड़ी सेवा की है। समय समयपर रेडियोपर नाटक खेले जाते हैं। ये नाटक रेडियोपर दृश्य-काव्य न रहकर श्रव्य मात्र हो जाते हैं। कई विद्वानोंके आलोचनात्मक भाषण हुआ करते हैं।

नाटक-साहित्य

प्राचीन तमिल-साहित्यमें काव्यके तीन भेद माने गए हैं "इयल" "इसै" और "नाटकम"। इनको मोटे तौरपर हम पद्य गीत और नाटक मान सकते हैं। प्राचीन तमिल साहित्यमें नाटक सम्बन्धी कई विस्तृत रचनाएँ पाई जाती हैं। आज केरलमें प्रसिद्ध "कथकळि" का वर्णन प्राचीन तमिल साहित्यमें पाया जाता है। दक्षिणकी कन्नड़ तेलुगु तमिल और मलयालम चारों भाषाओंका मूल स्रोत एक ही है। इनमें तमिलको छोड़कर अन्य तीनों भाषाओंने संस्कृतको अधिक उदारताके साथ अपनाया। मलयालम और तमिल करीब एक हजार वर्ष पूर्व तक अभिन्न मानी जाती थीं।

पल्लवकालके बाद महाराजाओंके चरितके आधारपर रचित कई काव्य-मय नाटक खेले गए। "राज राज विजयम" एक ऐसा नाटक है जो तंजौरके प्रसिद्ध मन्दिरमें खेला गया। "कुलोत्तुंगचोल नाटकम" एक ऐसा ही और नाटक है। सन् ११११ ई में कमलालय भट्टरने "पूम्पुलियूर नाटकम" नामक नाटक रचा। अन्य अनेक नाटकोंका उल्लेख पाया जाता है। पर ये नाटक उपलब्ध नहीं हैं। इतना निश्चित है कि बालके योग्य नाटकोंकी रचनाएँ दसवीं सदीके पहले ही होने लगीं थी।

प्राचीन कालमें नृत्य भी एक प्रकारका नाटक ही माना गया था। केरल प्रान्तीय कथकळि सचमुच मूक नाटक है। मद्रास शहरके अड्यार नामक मोहल्लेमें श्रीमती रुक्मिणी अरुण्डेलने कलाक्षेत्र स्थापित किया है जहाँ नृत्य और संगीतकी शिक्षा दी जाती है। नृत्यमें "कुट्राल कुरवंजि" नामक विशेष प्रकार का नृत्य यहाँ सिखाया जाता है। इस कुट्राल कुरवंजीकी रचना त्रिकूट राजप्प कविरायरने सत्रहवीं सदीमें की थी। इसकी गिनती तमिलके नाटक साहित्यमें होती है। ऐसे ही

नोंधिनाटक और मुक्कूटर पळ्ळु नामक नृत्य-विलाप नाटक साहित्यम के अन्तर्गत है। इन नाटकोंमें सामान्य जनताका जीवन बड़ी खूबीके साथ चित्रित हुआ है।

अरुणाचल कविरायर कृत राम नाटक रामचंद्र कविरायर कृत भारत विलासम और शकुन्तला विलासम" तथा गोपालकृष्ण भारती यार कृत नन्दन् चरित्तिरम्" अठारहवीं सदीके प्रसिद्ध नाटक हैं। इन नाटकोंकी शैली गीति काव्य जैसी है।

उन्नीसवीं सदीमें करीब ५ नाटक रचे गए जिनमें सौ छपे हुए हैं। इन नाटकोंके चार विभाग मान जा सकते हैं। १ काल्पनिक मदुरै वीरन विलासम" 'आरवल्ली सूरवल्ली नाटक" "मल्लिगा नाटक" कातव रायन नाटक" पवळक्कोडि नाटक" सावित्री नाटक" 'मीनाक्षी नाटक 'वळ्ळी नाटक" आदि इस वर्गके नाटक हैं। इन नाटकोंकी कथा-वस्तु कल्पित है। अन्तिम तीन नाटकोंमें स्त्रीकी महिमाका वर्णन हुआ है।

२ पौराणिक नाटक इस श्रेणीके नाटक भी महाभारत विलासम "हरिश्चन्द्र विलासम" "शकुन्तला विलासम" नल दमयन्ती नाटकम द्रौपदी वस्त्रापहरण" प्रह्लाद चरित्र आदि हैं। तमिळके "पेरिय पुराणम तिरुविळैयाडल पुराणम आदि पुराणोंके आधारपर भी नाटक रचे गए हैं।

३ ऐतिहासिक नाटक—इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों या घटनाओं पर आधारित नाटक देसिंग विलासम "देसिंग राजा नाटकम आदि हैं। भी टी कल्याण पिल्लैका "रवि वर्मन" नामक नाटक भी इसी श्रेणीका है।

४ सामाजिक नाटक इन नाटकोंमें समाजमें प्रचलित बुरी प्रथाओं पर प्रकाश डालकर समाज सुधारकी आवश्यकता बताई गई है। काशी विश्वनाथ मुदलियार कृत नाटक ब्रह्म समाजके सिद्धान्तोंके प्रचार की दृष्टिसे रचे गए थे। इनका रचा हुआ "डम्भाचारी विलासम" नामक एक नाटक है जिसमें वेश्याओंके जालमें पड़कर बरबाद होनेवाले धनिकोंका सुन्दर चित्रण हुआ है। यही सर्व प्रथम सामाजिक नाटक माना जाता है।

अंग्रेजी शिक्षाके प्रचारके साथ साथ तमिळ लोगोंका ध्यान अंग्रेजी नाटकोंकी ओर गया। इनमें शेक्सपियर के कई नाटकोंका तमिळमें अनुवाद हुआ। मालूम पड़ता है कि उस प्रसिद्ध नाटककारका सिम्बलीन नामक नाटक तमिळ शिक्षितोंको बहुत पसन्द आया। फलतः कोचन वेंकटाचलम इस नाटकका सर सांर्गी" नामसे और कल्याण पिल्लैन सत्यवती नामसे अनुवाद किया है। शंकर दास स्वामीने भी इस नाटक का अनुवाद किया है।

आचार्य सुंदरम् पिल्लैने लार्ड लिट्टन कृत "गुप्त मार्ग" (The Secret way) नामक कथा पर आधारित मनोनमणीयम" नामक नाटक रचा। यह रंगमंचके उद्देश्यसे नहीं लिखा गया इसमें काव्यकी सारी विशेषताएँ पाई जाती हैं।

तमिलमें कई संस्कृत नाटकोंका भी अनुवाद हुआ है। वी. के. सूर्य-नारायण शास्त्रीने ऐसे कई नाटकोंका अनुवाद किया है। उन्होंने नाटक शास्त्रपर एक पुस्तक लिखी है। उनके रूपावती और कलावती नामक दो स्वतन्त्र नाटक भी हैं। इनकी रचनाओंकी भाषा स्वाभाविक और सरल नहीं है। उसमें कुछ कृत्रिमता है।

शंकर दास स्वामी उन्नीसवीं सदीके प्रसिद्ध नाटककार थे। उन्होंने कई प्राचीन नाटकोंका सम्पादन किया। कई स्वतंत्र नाटक लिखे कई नाटक-मण्डलियोंके मार्ग-दर्शक रहे और स्वयं नाटकोंमें भाग लिया करते थे।

पम्मल सम्बन्ध मुदलियार तमिल भाषाके बहुत प्रसिद्ध नाटककार हैं। अभी हालमें सरकारने तथा तमिल भाषा-भाषी जनताने इस अस्सी वर्षसे अधिक आयुके नाटककार का अभिनन्दन किया था। पिछले पैंसठ वर्षोंसे आप नाटकोंकी रचना ऐं कर रहे हैं। इन्हींकी प्रेरणासे सर सी. पी. रामस्वामी अय्यर, सी. ई. गोपाल रत्नम स्वर्गीय आर. के. षण्मुखम चेट्टी स्वर्गीय सत्यमूर्ति जैसे सज्जन नाटककी ओर आकृष्ट हुए और नाटक कलाके कुशल कलाकार हुए। इन्हींके प्रयत्नोंसे मद्रासमें नाटक-कला-समर्थक सुगुण विलास सभा नामक प्रसिद्ध संस्था स्थापित हुई।

आधुनिक तमिल नाटक-साहित्यकी चार अवस्थाएं मानी गई हैं १ पश्चिमका अनुकरणकर यथार्थ नाटक रचना २ उत्कृष्ट काव्यात्मक नाटक रचना (जैसे मनोन्मणीय नाटक) ३ नाटक शास्त्रपर आधारित नाटकोंकी रचना और ४ नाटक लिखनेके साथ स्वयं उनका अभिनय करने के उद्देश्यसे नाटक रचना।

इधर राजनैतिक आन्दोलनके समर्थनमें कई नाटक रचे गए। क्तरिन पेट्टि (चरखेकी जीत) देशीय कोडी (राष्ट्रीय झंडा) बम्बई मेल आदि ऐसे नाटक हैं।

सुदूर दक्षिणके तिरुनेल्वेली जिलेमें अठारहवीं सदीमें कट्टबोम्मन नामक एक वीर देश-भक्त हुआ जिसने ईस्ट इण्डिया कम्पनीका विरोध कर मृत्यु दण्डकी सजा पाई। उसके चरित्रपर आधारित "वीर पाण्डिय कट्टबोम्मन" नामक नाटक आज कल बड़ा लोकप्रिय बना हुआ है।

सामाजिक बुराइयोंकी ओर ध्यान आकृष्ट करनेवाले कई नाटक रचे गए हैं।

एकांकी नाटकोंकी भी तमिल भाषामें बहुत अच्छी उन्नति हुई है। अभी पिछले सितम्बर (१९५१ ई) में मद्रासके प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र आनन्द विकट ने नाटक साहित्यपर २५०० रुपएका पुरस्कार वितरण किया। नाटकपर रु. १२, ५० और ५) तथा २५०) के तीन पुरस्कार और एकांकी नाटकपर व

२५०० रु १५०० और रु १०० के तीन पुरस्कार दिये गए। प्रतिवर्ष विभिन्न केन्द्रोंमें कई प्रदर्शिनियाँ होतीं हैं और हर प्रदर्शनीमें नाटकका कार्यक्रम अवश्य रहता है।

कविताऍं

महाकाव्य और खण्डकाव्यके समान तमिल काव्यके पेरुङ्काप्पियम और सिरु काप्पियम नामक दो भेद माने गए हैं। पेरुङ्काप्पियममें धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थोंका प्रतिपादन रहता है ईश वन्दना नम्रता-प्रदर्शन या भावके विषयका परिचय इन तीनोंमेंसे एकके साथ काव्यका आरम्भ होता है। इसमें पहाड़ समुद्र देश और नगरका वर्णन रहता है। इसका नायक उत्तम श्रेणीका होता है और उसके महान् कार्योंका काव्यमें विस्तृत वर्णन रहता है। चिलप्पधिकारम कम्ब रामायण आदि पेरुङ्काप्पियम है।

उपर्युक्त चार पुरुषार्थोंमें जहाँ एक या अधिकका लोप हो वह सिरु-काप्पियम है।

सिरुकाप्पियम अनेक प्रकारके है। जैसे आट्रुप्पडै कलम्बकम उला परणि पिळ्ळै तमिल पळ्ळुप्पाट्टु और कुरवन्जि।

आट्रुप्पडै काव्यका विषय यह रहता है कि संकटमें पड़े दानीसे दान प्राप्त करनेवाला कैसे धनाकांक्षीको समझाता है कि कहाँ कैसे जाकर किससे क्या पाया और उसको भी वैसे ही दान प्राप्त करनेका मार्ग दिखाता है।

कलम्बकम शब्दसे मिलावटका बोध होता है। इसमें अनेक प्रकारके छन्दोंमें अनेक प्रकारके विषयोंका प्रतिपादन होता है।

उला नामक काव्यमें यह बताया जाता है कि विद्वत्ता धन पौरुष प्रेम दान आदि गुणोंसे युक्त नायकके टहलने निकलने पर कैसे अनेक युवतियाँ उससे प्रेम करने लगतीं हैं।

परणि नामक काव्य करीब करीब हिन्दीके रासोके समान है। कहा गया है कि युद्धक्षेत्रमें एक हजार हाथियोंको मारकर विजय पानेवाले वीरका यश गाने वाला लघु-काव्य परणि है।

पिळ्ळै तमिल में शिशुओंका वर्णन रहता है। इसमें नायकके बचपनका वर्णन रहता है। इस काव्यको "पिळ्ळै पाट्टु" या "पिळ्ळै कवि" भी कहते हैं। प्रसिद्ध वैष्णव भक्त-कवि पेरियाळ्वारकी रचनाओंमें शिशु लीलाका बहुत सुन्दर वर्णन पाया जाता है। कहीं कहीं तो माँ कृष्णके बचपनके वर्णनमें सूरदासके और पेरियाळ्वारके पद एक दूसरेके भाषान्तरसे प्रतीत होते हैं।

पळ्ळुप्पाट्टु किसान-गीत है। इसमें किसान और उसकी दो पत्नियोंके बीचमें पैदा होनेवाले झगड़ोंका वर्णन रहता है।

उत्तर भारतके ब्रजभाषा के समान दक्षिण तमिल प्रबन्धका सृजन होता है। "कुरवंजि" काव्य में "कुरत्ति" (वनवासिनी) व विरहिणी (विवाहके पूर्व नायकका गुणगान सुनकर उसीको पति बनानेका निश्चय करके उसके वियोगमें दुखी रहनेवाली) की हथेली देखकर उसे आश्वासन देना वर्णन रहता है।

आधुनिक काव्य धारामें यद्यपि ऊपर वर्णित शैलियोंका अभाव सा पाया गया है तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि ये शैलियाँ एकदम उठ गई हैं। कहा जा सकता है कि कम्बके बाद तमिल भाषामें कोई महाकाव्य रचा नहीं गया। पर कवियोंकी कोई कमी नहीं रही। उन लोगोंका वर्णनीय विषय या तो ईश्वर या कोई राजा महाराजा होता था। अधिकतर कवियोंका उद्देश्य धनार्जन था। बीसवीं सदीके पूर्वके इन कवियोंकी परम्पराओंके आधारपर दो श्रेणियाँ थीं प्राचीन परम्पराके अनुयायी और नवीन मार्गके अनुयायी।

अठारहवीं सदीके तायुमान स्वामी शिवज्ञान मुनिवर, कच्चियप्पर आदि प्राचीन परम्पराके कवि थे। तायुमान केवल अपना उद्धार नहीं जीव मात्रका उद्धार चाहते थे। ईश्वरसे उनकी प्रार्थना थी कि वे सर्व जीवोंको मेरे ही साथ सम मानकर उन सब पर दया करें। भगवानकी पूजा करने फूल तोड़ने जाते हैं तो उन्हें मालूम पड़ता है कि ईश्वर की ही बनाई लोकमें फूलके अलावा सुन्दर पुष्प भी ईश्वरका बनाया जीव ही है और फूल तोड़े बिना ही वापस चले आते हैं। अब वे अपना ही फूल रचते हैं —

नेञ्चमें कोइल, निनैवे सुगन्धम अन्बे।
मञ्जन नीर पूजै कोळ्ळ वाराय पराबरमे॥

"हे ईश्वर, मन ही मंदिर है चेतना ही सुगंध है, प्रेम ही पवित्र जल है पूजा ग्रहण करने आओ।"

उन्नीसवीं सदीके मीनाक्षि सुन्दरम पिळ्ळै, रामलिंग अडिगळ, आदि भी प्राचीन परम्पराके कवि हैं।

यद्यपि इस सदीमें कविताका एक नया ही दृष्टिकोण देखनेमें आता है तो भी प्राचीन परम्परा बराबर चली ही आती है। रामनाथपुरमके स्वर्गीय रा राघव अय्यंगार ऐसे ही एक कवि हैं। उनकी "पारिकथा" "शाकुन्तलम" आदि प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। उन्होंने भगवद्गीताका पद्यात्मक अनुवाद किया था।

वी. पी. सुब्रह्मण्य मुदलियार, सोमसुन्दर भारती आदि इस सदीके प्राचीन परम्पराके कवि हैं।

प्राचीन परम्पराके कवियोंका उद्देश्य अपना पाण्डित्य प्रदर्शन मात्र था। उनकी कविताओंका रसास्वादन पढ़े-लिखे लोग ही कर सकते थे। जब से पाश्चात्य लोगोंका सम्पर्क बढ़ा तबसे लोगोंका ध्यान सामान्य जनताकी ओर चला गया।

जनताकी भाषामें जनताके ही विषयको लेकर रचनाएँ होने लगी। इसीका परिणाम यह हुआ कि पल्लु कुरवंचि आदि साहित्यकी रचना होने लगी। यह परम्परा सत्रहवी सदी से ही चलने लगी। उन्नीसवी सदीके वेदनायकम पिल्लै इस परम्पराके प्रमुख कवि है। आधुनिक ढंगके सर्व प्रथम उपन्यास "प्रताप मुदलियार चरितिरम" की रचना आपने ही की थी। वे ईसाई थे। उनके विचारोंपर अन्य उत्कृष्ट कवियोंका प्रभाव पड़ा था।

कैयिले माल पिडिप्पदु जप माले।
पक्कत्तिल वैप्पदुवो कम्बक्कोलै॥
मैय्याइतिलम पडिप्पदु धर्म नूलै।
मेलुम मेलुम वलर्प्पदु दुष्मार्क्कलैले॥१॥
ओर पेण वेण्डाम एग्रु कोंडवोम सन्नियासम।
अतिल उल्ल पेण्णइ मोदेल्लाम नेसम॥
पशाप्पति इल्लाद पोतुपवासम।
पसित्ताल ओर पानै पलगैंकुकु नासम॥२॥
उल्लत्तिल अबु लच्चै एनकुम अलुकोल।
उडलै मट्टु ल नीरिल अडिक्कडि शिर मुकोल॥
कल्लतन मानत्तिलिरिमुम अलुवोम।
कालुक्कु नायेमुम कै कट्टि तोवुकोल॥३॥

[इनमें तो हम जप-माला ग्रहण करते हैं पर बगलमें रखते हैं सेंध लगानेके औजार। यद्यपि धर्मग्रन्थोंको पढ़ते है फिर भी हमारी कुमार्गी प्रवृत्ति दिन प्रति दिन बढ़ती ही जाती है॥१॥

एक स्त्री पसन्द नही आई तो सन्यास ग्रहण कर लिया पर प्यार करने लग गए सबकी स्त्रियोंसे। जब भूख नहीं लगती तब तो उपवास कर लेते हैं और जब भूख लगती है तब खूब खा लेते हैं॥२॥

मनका मैल कभी दूर नही करते पर तनका मैल दूर करनेके लिए बार-बार पानीमें डुबकियाँ लगाते है। विग्रहके सामने तो फूट फूटकर रोते है पर एक-एक पाखंडि लिए गए कुत्तेके सामने भी हाथ जोड़कर सुकामी करते हैं॥३॥]

इस बीसवी सदीके चार महान् कवि सुब्रह्मण्यम भारती भारतीदास कवि मणि देशिक विनायकम् पिल्लै और नामक्कल रामलिंगम पिल्लै है। इनमें भारती की चर्चा अन्यत्र हो ही चुकी है। नामक्कल रामलिंगम पिल्लैकी चर्चा हुई पुस्तकमें आगे होगी। इनके अतिरिक्त "भारतीदास" क्रान्तिकारी कवि है। इनकी एक उत्कृष्ट रचना है "पुरट्चि कवि" जिसका अर्थ है "क्रान्तिकारी कवि"। इस रचनाके आधारपर इनका नाम ही क्रान्तिकारी कवि पड़ गया। इनकी रचनाएँ है—"संजीवि क तमिळ रा—२

पर्वदत्तिन सारल" (सजीव पर्वतका साधु) सुतन्तिरम (स्वतन्त्रता) सहोदरत्व आदि साम्यवादी कविताएँ और "एदिरपारा मुत्तम" (अप्रत्याशित चुम्बन) इरण्डुवीडु (दो घर) कुटुम्ब विळक्कु (कुटुम्बका दीपक) अषगिन चिरिप्पु (सौन्दर्यका हास्य) तमिषच्चियिन कत्ति (तमिल-रमणीकी तलवार) आदि खण्ड काव्य।

सुब्रह्मण्य भारतीकी प्रेरणापर इन्होंने "एंगेगु काणिनुम शक्तियडा" (जिधर देखा उधर शक्ति है रे) नामक कविता रची—तभीसे इनका भारती-दास नाम पड़ा।

कविमणि देसिक विनायकम पिल्लैका तमिल काव्य-जगत्में महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी रचनाओंसे उनके सरल एवं कोमल हृदयका परिचय प्राप्त होता है। उनकी कई प्रकारकी रचनाएँ हैं। पर उनके बाल गीत अत्यन्त प्रसिद्ध और लोक-प्रिय हैं। ये गीत बड़े सरल मधुर और कोमल होते हैं।

> दाहमेडु वन्दोर्क्कु तण्णीर अळियामल
> माहुमंगळ ओदि निदुक्क अवमामो? अरमामो?
> पावियिट्टु पूट्ट निदु पत्तिरियैच्चावलिट्टु
> देवि इरुक्कुम कोइलै नीर विरित्ताल पाक्कियमो?

[प्यासको पानी तो नहीं दे पर वेदोंका पठन करता रहे, यह क्या धोखाकी बात है? क्या यही धर्म है? चाभी लगाकर ताला बन्दकर दे और पहरेदार नियुक्त करे और जो देवीके वास-स्थल मन्दिरको जलपार बना दे क्या यह ठीक है?]

इनकी एक और रचना "आसिय ज्योति" (Light of Asia) है। यह अँग्रेजी काव्यके आधारपर रची गई है। इन्होंने उमर खय्यामके (अँग्रेजी अनुवाद) काव्यका अनुवाद किया है।

> वेय्यिर केर्कु निष़लुण्डु
>   वीसुम तेन्नर काट्टुण्डु।
> कैयिल कम्बन कवि उण्डु
>   कलसम निरैय मधुवुण्डु।
> दैयलाल पा उण्डु
>   तेरिन्दु पाडा नी उण्डु।
> वैयम तरुम इन्बम् निधि
>   वाळ्-म स्वर्गम वेरुण्डो?

[धूपके अनुकूल छाया है मलय-मारुतका बहाव है हाथमें कम्बन (प्रसिद्ध तमिल कवि) का काव्य है कलशा भर मधु है मधुर राग युक्त देवी गीत है और समझ कर गानवाली तू है इन सबसे बढ़ संसारमें क्या कोई स्वर्ग है?]

कविमणिकी कविताएँ सगीत मय हैं।

इस सदीके कुछ अन्य कवियोंका संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जाता है

कम्बदासन इनकी कविताओंमें भक्तियुक्त भाव भरा हुआ है। हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय और कवि मणि देसिक विनायकम पिल्लैने इस कविकी बड़ी प्रशंसा की है। इनकी शैली भारतीदासकी अनुवर्तिनी है।

वाणिदासन य भी भारतीदासकी शैलीपर लिखने वाले कवि हैं। तमिषच्चि कोडिमुल्लै तोडुवानम एषिलोवियम आदि इनकी रचनायें हैं।

मुरुगैयन भी भारतीदासकी परम्पराके कवि हैं। आकर्षक शब्द-सञ्चय और उत्साहवर्धक कल्पनाएँ इनकी कविताओंकी विशेषताएँ हैं।

योगी शुद्धानन्द भारतीका स्थान आधुनिक तमिल कवियोंमें ऊँचा है। आप सन् १९२६–१९२७ में "स्वराज्य" नामक तमिल दैनिक पत्रके सम्पादक थ। इनपर श्री रमण महर्षि और योगी अरविन्दका बड़ा प्रभाव पड़ा है। इनके मधुर गीत बड़े लोकप्रिय हैं।

सिनेमाकी उन्नतिके साथ उसके योग्य गीतोंकी रचना बढ़ने लगी। कई उत्कृष्ट कवियोंके द्वारा उत्तम गीत रचे गए जो अर्थ-पुष्टि और पद-लालित्यके कारण लोकप्रिय बने। ऐसे कवियोंमें पाप नाशम शिवम उडुमलै नारायण कवि कम्बदासन आदि प्रमुख हैं।

तमिल साहित्यकी उन्नतिको ही अपना लक्ष्य बनाकर चलनेवाली अनेक संस्थाएँ हैं। प्राचीन कालका 'तमिल संघ' प्रसिद्ध ही है। प्रथम और द्वितीय संघके समुद्रमें विलीन हो जानेपर तृतीय संघकी स्थापना मदुरा नगरमें हुई। पाण्ड्य राजाओंके पतनके बाद इस संघका भी अस्तित्व नहीं रहा। उन्नीसवीं सदीके उत्तरार्द्धमें पाण्डित्तुरै तेवरने मदुरा नगरमें तमिल संघकी स्थापना की। तमिल भाषाकी यह एसी ही संस्था है जैसी हिन्दीकी नागरी-प्रचारिणी सभा अथवा हिन्दी साहित्य सम्मेलन है। इस संघकी ओरसे तमिल भाषाकी परीक्षाएँ ली जाती हैं। इस संघका मुखपत्र "सेन्तमिष" (ठठ तमिल या शुद्ध तमिल) है। इस पत्रका तमिल साहित्य जगमें बड़ा आदरपूर्ण स्थान है।

तंजाऊर जिलेके धर्मपुरम आधीनम" "तिरुवावडुतुरै आधीनम" "तिरुप्पनन्दाल काशीवासी मठम" और अन्य कई प्राचीन शैव और वैष्णव धर्म प्रचारक मठोंकी भाषा सम्बन्धी सेवाएँ बड़ी महत्वपूर्ण हैं। राजा महाराजा और जमीदारोंके न रह जानपर सरकारने साहित्यकारोंको प्रोत्साहित करनेका भार अपने ऊपर लिया है। पर साहित्यकारोंको इन प्राचीन मठोंका प्रोत्साहन अब भी मिलता है।

मद्राससे करीब डढ़ सौ मील दक्षिणकी ओर "चिदम्बरम" नामक प्रसिद्ध धाम है। यहाँ भगवान शिवजी "नटराज" के रूपमें विराजमान हैं। प्रसिद्ध नन्द

पार करनेमें आप सफल हुए। इस नगरमें श्री अण्णामलै चेट्टियार नामक धन वैभव वालोंके प्रसिद्ध दानीने अपने ही प्रयत्नसे "अण्णामलै विश्व विद्यालय" की स्थापना की। यह विश्वविद्यालय तमिल भाषाकी उन्नतिके लिए प्रयत्नशील है।

मद्रास राज्यसे जब आन्ध्र और केरल राज्य अलग हुए तबसे यह तमिल भाषा-भाषी राज्य बन गया। अब राज्यकी ओरसे शासन सम्बन्धी कार्य और कालेजोंकी उच्च पढ़ाईका माध्यम तमिल भाषाको ही बनानेका प्रबन्ध किया जा रहा है। यदि सभी राज्योंके सारे कार्य अपनी ही भाषाके माध्यमसे चलने लगे तो हिन्दीको राज्य-भाषा बनानेके लिए विशेष परिश्रम करनेकी आवश्यकता नहीं रहेगी। जबतक राज्योंमें अंग्रेजीका महत्व रहेगा तभीतक केन्द्रकी भाषा भी अंग्रेजी रहेगी। तमिल प्रदेशमें ही हिन्दीका विरोध कुछ अधिक सबल है। इसका कारण यह है कि वहाँ अन्य राज्योंकी अपेक्षा अंग्रेजी भाषाका प्रचार अधिक है। यदि राज्यके अन्दर तमिल भाषाको उसके योग्य गौरवका स्थान प्राप्त हो जाय तो अंग्रेजीका मोह आप ही छूट जायगा और हिन्दीकी उपयोगिता मालूम हो जाएगी। हर्षकी बात है कि तमिलको राज्य भाषा बनानेका प्रयत्न मद्रास राज्यमें शुरू हो गया है। अब तमिलका भविष्य राष्ट्र तथा राष्ट्रभाषाकी उन्नति सुनिश्चित है।

• • •

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

[कवि-परिचय]

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

• • •

तमिल भाषाके आजकलके कवियोंमें श्री रामलिंगम पिल्लैका स्थान बहुत ऊँचा है। मद्रास राज्य सरकारने उन्हें राज-कवि नियुक्त किया था। इस महान् कविका परिचय स्वर्गीय कल्कि ने एक बार यों दिया था "श्री राम लिंगम पिल्लै उत्तम कवि हैं, सच्चे देशभक्त हैं। देशके लिए उन्होंने महान् त्याग किया और कारावासकी सजा भुगती। आपका चरित्र अति उज्ज्वल है। आप मित्रोंके प्रेम-पात्र हैं और छल प्रपञ्चसे अपरिचित हैं। आप धन या कीर्तिके लोभी नहीं हैं और आडम्बरसे घृणा करते हैं।"

इस कविवरका जीवन-चरित बहुत ही रोचक है। काव्यकलामें तो इस कविवरने बहुत ही अच्छा नाम पाया है चित्रकलामें भी य सिद्ध हस्त हैं। इनके सम्पर्क कथा ई भावपूर्ण हैं।

इनके पिताका नाम वेंकटराम पिल्लै था। वे दक्षिण आर्काट नामके जिले के निवासी थे। केवल तीसरी श्रेणी तककी शिक्षा पाकर बड़ी कठिनाईसे अपना जीवन-यापन करते थे। उस जिलेमें अकाल पड़ा तो उन्हें अपना गाँव छोड़कर सेलम नगर चला जाना पड़ा। वहाँ उन्हें सिपाहीका काम मिला। कुछ ही दिनोंमें हेड कान्स्टेबल बन गए। कुछ समय तक पुलिस इन्स्पेक्टरका काम भी किया था।

ईसवी सन् १८८८ के अक्तूबर की १९ तारीख को कविवरका जन्म हुआ। कहा जाता है कि रामेश्वरम् स्थित भगवान शंकरकी प्रार्थनाके फलस्वरूप

आपका रामलिंगम नामकरण हुआ। नामक्कल कविवरके निवास स्थानका नाम है। आप "नामक्कल कविवर" नामसे ही प्रसिद्ध हैं। "पिल्लै" जाति सूचक शब्द है।

कविवरकी माताने अपने पुत्रका बड़े प्रेमसे लालन पालन किया और अच्छी आदतें सिखाईं। अपने साथ पुत्रको मन्दिरमें ले जाती और उससे कहलाती थी "हे भगवन्! हमें सद्बुद्धि दो हमारी रक्षा करो।" प्रतिदिन कमसे कम तीन बार उससे कहलाती थी "मैं झूठ नहीं बोलूँगा दुष्ट नहीं बनूँगा।" मातासे प्राप्त इस शिक्षाके सुसंस्कारका प्रभाव कविपर पड़ना स्वाभाविक ही था। इस शिक्षाको कवि आज तक नहीं भूले। गान्धीजीके सत्य और अहिंसा नामक दो महान् तत्त्वोंकी भूमिका अपनी माताने कविवरके बचपनमें ही तैयार कर दी थी।

अन्ध विश्वासका उन्मूलन

जिस समय कविवरका जन्म हुआ देश भरमें—विशेष रूपसे तमिल प्रदेशमें—अज्ञानका अन्धकार व्याप्त था। भूत प्रेत पिशाच आदिपर लोगोंका विश्वास था। इन भूत आदिको खुश करनेके लिए न जाने कितनी बकरियाँ जैसे मुर्गियाँ और अन्य जीवोंकी बलि चढ़ाई जाती थी। कविकी माँ इन बातोंका खण्डन करती थीं। एक गाँवमें वेंकटराम पिल्लैके निवास स्थानके पास घना जंगल था जिसमें महुएके पेड़ अधिक थे। ऐसा माना जाता था कि उस वनमें एक बहुत बड़े महुएके पेड़पर पिशाचका निवास था। उसको प्रसन्न रखनेके लिए बार-बार बलिदान-युक्त पूजाएँ हुआ करती थीं। कविकी माँ अम्मणी अम्माके कहनेसे पूजाका यह क्रम बन्द कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पिशाचने पहले एक नवयुवती पर आक्रमण किया। वह युवती इतनी डर गई कि उसे तेज बुखार आ गया। कुछ दिनोंके बाद बहुत जल्दी पूजापाठका प्रबन्ध हुआ तब कहीं वह स्वस्थ हुई। इससे लोगोंका फिर पिशाचपर विश्वास जम गया। कुछ दिन बाद पिशाचने अम्मणी अम्मापर ही आक्रमण किया। अम्मणी अम्माके हाथमें एक लोहेका छड़ था—उसने पिशाचके सिरपर जोरसे मारा। पिशाच किसी तरह छूटकर भाग गया। पुलिस भी तत्परतासे खोजने लगी तो एक चोरोंके दलका पता लगा पर पिशाचके आकारका कोई व्यक्ति नहीं मिला। संयोग वश कुछ दिन बाद अम्मणी अम्मा पड़ोसके गाँवकी हाटमें गई थीं वहीं पिशाचके आकारका एक व्यक्ति उन्हें दिखाई पड़ा। वह अपने सिरपरका घाव छिपानेका बहुत प्रयत्नकर रहा था। यह बात उन्होंने अपने पतिसे कही। वह आदमी पकड़ा गया। मालूम हुआ कि स्थानीय ओझाकी प्रेरणासे वही लोगोंको डराया करता था जिससे लोग पिशाचको प्रसन्न करनेके लिए पूजा बलि आदिका बराबर प्रबन्ध करते रहें।

सङ्कल्पम

दक्षिण भारतका तिरुपति–बालाजी-धाम बड़ा प्रसिद्ध है। तमिल प्रदेशके प्रायः सभी परिवारोंमें इस धामके प्रति बड़ी श्रद्धा रहती है।

तमिल और केरल प्रदेशोंमें सौरमान वर्ष चलता है। जब सूर्य कन्या राशिमें रहता है तब वह मास तमिलमें "पुरट्टासि" कहलाता है। यह करीब-करीब भाद्रपद-आश्विनके महीनोंमें पड़ता है। इस महीनेके प्रत्येक शनिवारके दिन तिरुपति के भगवानकी विशेष पूजा होती है। पूजाका एक अंग यह है कि प्रति शनिवारको घरके बालक घर घर जाकर भिक्षा मांगते हैं। उस मासके अन्तिम शनिवारके दिन भिक्षामें प्राप्त सामग्रीसे ब्राह्मण–भोज कराया जाता है।

तमिल प्रदेशमें शैव और वैष्णव ये दो शाखाएं हैं। शैव लोग माथेपर विभूति लगाते हैं। वैष्णव लोग तिलक (जिसमें दो खड़ी सफेद लकीरोंके बीचमें एक लाल लकीर रहती है) लगाते हैं। यह तिलक "नामम" कहलाता है। प्रति शनिवारको भिक्षाके लिए निकलनेवाले शैव बालक भी "नामम" धारण करते हैं।

जब कवि रामलिंगम सिर्फ पांच छह वर्षके बालक थे तब वे भी उस मासके शनिवारके दिनोंमें भिक्षा मांगने "नामम" धारण करके जाया करते थे। एक शनिवारके दिन उनके पिता किसीसे कुछ बातें कर रहे थे। बालक रामलिंगम भिक्षाटनके बाद अपने घर आया। पिताको देखकर उसके मनमें आया कि कुछ तमाशा दिखाया जाय। वह आड़में खड़ा होकर "गोपाल गोविन्द" का नारा लगाने लगा। (उस नारेसे गृहिणियां समझ जाती हैं कि मामूली भिखारी नहीं किसी भले घरका ही व्यक्ति भिक्षाके लिए आया है।) दो तीन बार आवाज आयी तो पिताने कहा "जाओ बेटा! घरमें सब काममें लगे हैं।" उन्हें पता नहीं था कि अपने ही पुत्रको बेटा कहकर सम्बोधन कर रहे थे। इसी बीचमें रामलिंगमकी बहन एक पात्रमें चावल लिए आ पहुँची। अपने भाईको देखकर वह भी आश्चर्यमें पड़ गई। उसने पिताका ध्यान उस ओर आकर्षित किया। अपने पुत्रके मजाकसे वे बहुत प्रसन्न हुए। वे स्वयं शैव थे—पुत्रको लेकर घरके अन्दर गए। अपनी पत्नीसे कहा "नामम धारण करनेकी प्रथा तो तुम्हारे घर की है। यह क्या है रामलिंगमके माथेपर भी तुमने नामम लगा दिया।" पत्नीने जवाब दिया "मैं क्यों लगाने लगी। यह तो खुद आपके पुत्रकी करामात है।" यह सुनकर वेंकटराम पिल्लैने अपने पुत्रके माथेका वह तिलक मिटाकर उसके स्थानपर भस्म लगा दी। पर बालक रामलिंगम इस पर बहुत रोने लगा। अन्तमें पिताजीने बालकको वही तिलक लगा लेनेकी अनुमति दी।

प्रारम्भिक-शिक्षा

कविकी शिक्षाका आरम्भ नामक्कल नामक नगरकी एक प्रारम्भिक पाठशालामें हुआ। बचपनसे ही उनका चित्रकलासे बड़ा प्रेम था। प्रारम्भिक कक्षाओंमें एक बार अध्यापक गणित सिखा रहे थे। कविवर चित्रमें लगे थे। उस

विषयमें उनकी अभिरुचि नहीं थी। इसलिए वे अध्यापक की पढ़ाई पर ध्यान न देकर अपनी पट्टी पर किसी नाटक कम्पनीके विज्ञापनकी नकल कर रहे थे। कुछ देर बाद जब अध्यापक छात्रोंकी पट्टियाँ जाँचने लगे तब रामलिंगमने अत्यन्त संकोचके साथ अपनी चित्र वाली पट्टी दिखाई। जब अध्यापकने जोर का तमाचा लगाया तभी उसको अपनी भूलका बोध हुआ। यद्यपि पढ़ाईपर ध्यान न देनेके कारण अध्यापकने अपने छात्रको दण्ड दिया तो भी छात्रकी चित्र बनानेकी कुशलतासे वे प्रसन्न भी हुए। वे अपने छात्रको चित्र बनानेके लिए प्रोत्साहन देने लगे।

बचपनमें चित्र बनानेकी कविकी यह आदत बहुत दिनों तक बनी रही। जब आप हाईस्कूलमें पढ़ते थे तब स्कूलके प्रधानाध्यापक ही गणित पढ़ाते थे। गणितकी ओर सदा ही रामलिंगमकी अभिरुचि बहुत कम रही। एक बार अध्यापक बोर्डपर गणित समझा रहे थे और इधर रामलिंगम अपनी कापीमें अध्यापकका व्यंग्य चित्र बना रहे थे। अध्यापकका ध्यान उस ओर गया तो वे बहुत रुष्ट हुए। उन्होंने रामलिंगम को कड़ी सजा दी। इसके फलस्वरूप कुछ समयके लिए कवि की यह प्रवृत्ति दब-सी गयी। पर कालेजमें सम्मिलित होनेके बाद यह प्रवृत्ति फिर जागृत हुई। एक बार प्रिंसिपलने छात्रोंको एक लेख लिखनेको कहा। रामलिंगम अपने लेखको जल्दी ही पूरा करके चित्र बनाने लग गये। अन्य सभी छात्र लेख लिखनेमें ही व्यस्त हुए थे। इस ओर जब प्रिंसिपलका ध्यान गया तो रामलिंगमके लेख और चित्र दोनोंसे वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने रामलिंगमको चित्रकला सम्बन्धी पुस्तक पुरस्कारके रूपमें दी।

कलाप्रेमका दुष्परिणाम

इस चित्र सम्बन्धी आदतका एक भयंकर परिणाम भी निकला। कविका वेंकटवरदन नामक एक साथी था। उसके पिताका देहान्त हो गया था इसलिए वह कोयम्बतूरमें अपने मामाके यहाँ रहता था। कविवरकी पढ़ाई भी कोयम्बतूरमें ही हुई। दोनों एक ही विद्यालयमें पढ़ते थे। दोनोंमें घनी मित्रता हो गई। दोनों एक दूसरेके घर आया जाया करते थे। कविवर तो अपने मित्रके यहाँ प्रति दिन घण्टों रह जाते थे। वेंकट वरदनकी ममेरी बहन सीता नामकी लड़की बार बार कविवरसे मिला करती थी। तमिल प्रदेशकी लड़कियोंको जमीनपर आटेसे चित्र बनानेका बड़ा शौक है। इसके लिए विशेष अवसरोंपर चावलका आटा ही लिया जाता है पर प्रति-दिनके उपयोगमें चूनेकी बुकनी काम आती है। कविवरका चित्रकलासे विशेष प्रेम था। इसलिए सीता कविवरसे अनेक चित्र बनानेका अभ्यास करने लगी। इस कारणसे इन दोनोंमें घनिष्ठता बढ़ गई। एक दिन कविवर दूसरी मंजिलपर बैठ अपने मित्रकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह लड़की ऊपर गई और रामलिंगमको अकेला देखकर चुपकेसे उनकी दोनों आँखें उसने अपने हाथोंसे ढँक दीं। इतनेमें संयोगसे उस लड़कीकी माँ भी वहाँ आ पहुँची। अपनी लड़कीकी यह करतूत उसे बहुत बुरी लगी। उसने अपना

सारा गुस्सा कविवरपर उतारा और उनकी सारी पुस्तकें उठाकर बाहर फेंक दीं और उन्हें घरमें आनेसे मना कर दिया। वेंकट नरसम्मने बहुत समझाया। पर उस नौकीका क्रोध शान्त नहीं हुआ।

उस घटनाके बाद रामलिंगमको सीतासे मिलनेका कोई अवसर नहीं मिला। करीब पन्द्रह साल बीते। रामलिंगम प्रसिद्ध कवि बन गए। एक दिन तिरुचिनापल्लि स्टेशनपर वे किसी गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अचानक उन्हें किसीने "राम लिंगम मामा" कहकर पुकारा। (तमिल प्रदेशमें अपरिचित बड़ोंको "मामा" कहकर पुकारनेकी रीति है।) रामलिंगम पहचान नहीं सके कि पुकारने वाली विधवा कौन है। विधवा ने अपना परिचय दिया कि वही सीता थी। उसके दो बच्चे थे। उसके अनुरोधपर कवि उसके घर गए, और दो दिन वहाँ रहकर अपने घर लौटे।

आजीविकाका प्रश्न

सन् १९०७ ई में कविवर मैट्रिक परीक्षामें उत्तीर्ण हुए और १९०८–१९०९ में तिरुचिनापल्लि शहरके एस पी जी कालेजमें एफ. ए की पढ़ाई पूरी की। सन् १९०९ में उनके कानमें दर्द होने लगा। चिकित्साके लिए वे मद्रास गए। इस चिकित्सामें उनके कानका दर्द तो दूर हुआ पर सुननेकी शक्ति क्षीण हो गई। इस कारणसे उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी। अब रामलिंगम नौजवान हो गए थे और घरपर बेकार बैठ रहना उनके लिए उचित नहीं था। उनके पिताकी बड़ी इच्छा थी कि उन्हें पुलिस विभागमें नौकरी मिले। इसके लिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किया। पर रामलिंगमको यह काम पसन्द नहीं आया। वे चुपचाप घर छोड़कर चल गए। बड़ी कठिनाईके साथ उनके पिताने उनका पता लगाया। घर आनेके बाद पिता के अनुरोधसे उन्होंने स्थानीय तहसीलदारके कार्यालयमें गुमास्ताके पदपर काम करना शुरू किया। पर स्वतन्त्र प्रकृतिके इस नवयुवकके लिए सरकारी कार्यालयका बन्धनमय जीवन सह्य नहीं हुआ। कुछ ही दिनोंमें उन्होंने यह काम भी छोड़ दिया। कुछ दिनों तक वे स्थानीय प्रारम्भिक पाठशालाके अध्यापक बन रहे, पर वहाँ भी उनका मन प्रसन्न नहीं रहा।

कविने चित्र बनानेका अभ्यास जारी रखा। उसमें उन्होंने अच्छी उन्नति की। जब वे सरकारी कार्यालयमें काम करते थे तब भी अपना काम शीघ्र पूरा करके अन्य साथियोंके साथ चित्र बनाया करते थे। उनके भूतपूर्व एक अध्यापक जब अपनी सेवाओंसे अवकाश प्राप्तकर आए तब उनके छात्रों व साथियोंने उनका सम्मान करनेका निश्चय किया। उनका चित्र बनानेका काम कविवरको सौंपा गया। उन्होंने चित्र बनाया और उनका बनाया हुआ वह चित्र स्थानीय म्युनिसिपल मण्डपमें लगाया गया।

एक बार एक अंग्रेज अधिकारी उस मण्डपमें वह चित्र देखकर बहुत प्रभावित हुआ। चित्रकारका पता लगाकर उसने उन्हें अपने पास बुलाया और उनसे एक चित्र

बनानेका अनुरोध किया। उस अधिकारीका एक बच्चा था जिसका करीब चार महीने पूर्व देहान्त हो गया था। उस मृत बच्चेका एक फोटो था। अधिकारीकी इच्छा थी कि कविवर उस फोटोके आधारपर एक चित्र बनायें जिसमें वह बच्चा सजीव-सा दिखाई पड़े। उन्होंने पचास रुपएका पारिश्रमिक देनेका वादा किया। कविवरम चित्र बनाया। चित्रको देखकर अधिकारी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी थैली खोल कर उसमें जितने रुपये थे वे सब रामलिंगमको दे दिए।

इस घटनाके बाद कविवरम चित्रकलाको ही अपनी आजीविकाका साधन बनाया।

उत्तर भारतकी यात्रा

श्री पा. वे. माणिक्क नायकर नामक उच्च सरकारी पदाधिकारी कविवरके मित्र थे। सन् १९११ ई. में पंचम जार्ज महाराजका राज्याभिषेक महोत्सव दिल्लीमें मनाया गया था। अपने मित्र माणिक्क नायकरजीके प्रस्तावपर कविवरम प्रदर्शनीमें अपने चित्र भेजे और स्वयं भी उन चित्रोंके साथ दरबारमें गए। कविवरके चित्रोंमें एक चित्र था जिसमें यह दिखाया गया था कि बादशाह पंचम जार्ज गम्भीर मुद्रामें बैठे हुए थे और उनके सिरपर भारत-माता मुकुट रख रही थी। वह चित्र बहुत उत्तम माना गया। स्वयं बादशाहने उसकी बड़ी तारीफ की थी। इसपर कविको पुरस्कार तो मिला ही, साथ साथ उनकी कीर्ति भी बढ़ी और उनके चित्रोंकी माँग बहुत बढ़ी।

दिल्लीके समारोहके बाद श्री पिल्लैजीने अपने मित्रके साथ उत्तर-भारत भरका भ्रमण किया। सीमा प्रान्तमें पठानोंके द्वारा उन्हें कुछ कष्ट भी उठाना पड़ा। काशी, प्रयाग, गया आदि तीर्थोंमें जाकर उन्होंने विधिवत पूजा आदि कार्य किए।

गीत-रचना

तमिल प्रदेशमें सदा ही नाटकको प्रोत्साहन मिलता आया है। नगरोंमें रंगमंचपर खेले जानेवाले नाटक तो हैं ही, लगभग गाँवोंमें भी बड़ी तैयारीके साथ नाटक खेला करते हैं। यह खेल करीब करीब रातभर हुआ करता है। यह अक्सर मैदानमें खेला जाता है। केवल पात्रोंका अभिनय रहता है, पर न रंगमंच रहता है और न परदा। मैंने एक नाटक देखा जिसमें भीम और जरासन्धकी लड़ाई थी। कभी भीम जरासन्धका पीछा करता करता करीब सौ दो सौ गज आगे बढ़ जाता और सारा दर्शक-वृन्द उसके-साथ-साथ आगे बढ़ता। उतनी दूर जानेके बाद जब जरासन्ध कुछ प्रबल होता तब वह भीमका पीछा करने लगता और दर्शक वृन्द फिर उनके साथ-साथ चलते। यथा स्थान पहुँचनेपर फिर नाटककी कथा आगे बढ़ती।

श्रीरामलिंगम पिल्लै हास्य-सम्वाद नाटकके बड़े प्रेमी थे। तमिल देशमें अनेक सुन्दर नाटक अभिनीत हो गए हैं। इनमें सिद्धाप्पा नामक एक अभिनेता बहुत

ही प्रसिद्ध हुआ। यह छह मास अपनी अल्प आयुमें ही नाटक मंचन गया। उसका कण्ठ अत्यन्त मधुर था और उसके संगीतकी सब लोग प्रशंसा करते थे। वह अपने नाटक-मण्डलके साथ नामक्कल (कवि रामलिंगम पिल्लै जिस नगरके निवासी थे) आ पहुँचा। उसके नाटकोंके लिए उपयुक्त गीत भी पिल्लेजी रचा करते थे और किट्टप्पा उन्हें गाया करता था। अफसोस बात है कि कविवरके इस मैत्रीका सफल्य नहीं हुआ। कविवरका ध्यान नाटक रचनाकी ओर नहीं गया।

विवाह

श्री पिल्लै जब तिरुच्चिरापल्ली नगरमें सेंट जोसफ कालेज इण्टरमीडियट क्लासमें पढ़ते थे तब उनका विवाह हुआ। उनके पिताकी बहुत दिनोंसे बड़ी इच्छा थी कि अपने पुत्रका विवाह शीघ्र सम्पन्न कर लें। उन्होंने अपने पुत्रके योग्य एक कन्या भी देख रखी थी। पर कवि विवाह करना नहीं चाहते थे। एक बार इस बातपर वे घर भी छोड़कर चल गए। पर अन्तमें उन्हें विवश होकर अपने पिताकी बात माननी पड़ी और उसी कन्यासे उनका विवाह हुआ। विवाहके कुछ समय तक अपनी पत्नीके प्रति कविका रूखा बर्ताव था। पर उस साध्वीकी सहनशीलताका उनपर इतना प्रभाव पड़ा कि कवि अपने व्यवहारपर पछताने लगे और अपनी पत्नीसे प्रेमका व्यवहार करने लगे।

विवाहके कई वर्ष बाद तक उनके कोई सन्तान नहीं हुई। लोगोंने उन्हें बहुत समझाया कि वे दूसरा विवाह कर लें। स्वयं उनकी पत्नीने उनसे इस आशयकी प्रार्थना की। उस समय कविकी साली विवाह योग्य हो गई। कविकी पत्नीका आग्रह था कि वे उस युवतीसे विवाह कर लें। कवि इस बातके लिए तैयार नहीं हुए। दैवेच्छा प्रबल है। कुछ समय बाद अचानक कविकी पत्नीका देहान्त हो गया। इस घटनासे कवि बहुत व्याकुल हुए। लोग डरने लगे कि कहीं इस बातका कविके मनपर कोई बुरा प्रभाव न पड़े।

कुछ समय बाद कविका मन स्वस्थ हुआ। उन्होंने पत्नीकी इच्छा पूर्ण करनेका निश्चय किया। अपनी सालीसे उन्होंने विवाह कर लिया। पहली पत्नीका नाम "मुत्तम्मा" था और दूसरीका "सौभाग्य" पर अपनी पहली पत्नीकी स्मृतिमें उन्होंने दूसरीका "मुत्तु मीनाक्षी" नामकरण किया। कविके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। बड़ी पुत्रीका नाम मुत्तु रखा।

राजनैतिक क्षेत्रमें

सन् १९०६-७ में श्री पिल्लैजी राजनीतिकी ओर आकृष्ट हुए। बंग-भंगने देश भरको विक्षुब्ध कर दिया था। श्री पिल्लैजी भी इस घटनासे प्रभावित हुए। तिलक महाराज लाजपतराय आदिके भक्त बन गए। सन् १९१६-१७ में वे श्रीमती एनी बेसण्टके आन्दोलनमें सक्रिय भाग लेने लगे। अपने एक धनी मित्रके सहयोगसे

उन्होंने तिरुचिरापल्लीमें एक राजनैतिक सम्मेलन कराया जिसमें श्रीमती बसन्टका प्रभावोत्पादक भाषण हुआ। उस सम्मेलनमें एक प्रदर्शिनीका भी प्रबन्ध किया गया था। उसमें कविवरके चित्र प्रदर्शित हुए। इन चित्रोंकी बड़ी प्रशंसा हुई। स्वयं श्रीमती बसन्टने कुछ चित्र खरीद लिए।

गान्धी-भक्ति

काशी विश्वविद्यालयके प्रारम्भिक समारोहके अवसरपर गान्धीजीने राजा महाराजाओंके फिजूलखर्चीका खण्डन करते हुए एक भाषण दिया था। इसका प्रभाव कवि श्री रामलिंगम पर पड़ा। उनका दृढ़ विश्वास हो गया कि यह स्पष्ट वक्ता ही भारतका उद्धार कर सकता है। तबसे आप गान्धीजीके भक्त बन गए। गान्धीजीके विचारोंका प्रचार करने लगे। सत्याग्रह आन्दोलनमें आपने एक वर्षका कारावास भी भोगा है।

राजकवि

स्वतन्त्रताके पूर्व हमारे देशमें अनेक धनी जमींदार, राजा और महाराजा थे जो कलाकारोंका आदर करते थे। इन राजा-महाराजाओंका समर्थन संगीत साहित्य आदि कलाओंकी उन्नतिका साधन बना हुआ था। पर स्वतन्त्रताके बाद जब राजा महाराजाओंका अस्तित्व ही जब नहीं रह गया तब सरकारने ही कला और कलाकारों को प्रोत्साहन देनेका भार अपने ऊपर ले लिया। मद्रासकी सरकारने राज-कवि नियुक्त करनेका निश्चय किया। उन दिनों मद्रास राज्यके अन्तर्गत तमिल तेलुगु कन्नड़ और मलयालम भाषा-भाषी लोग थे। सरकारने चारों भाषाओंके राज-कवि नियुक्त किए। श्री रामलिंगम पिल्लै तमिल भाषाके राज-कवि नियुक्त किए गए।

इस समय कविजी मद्रासकी लेजिस्लेटिव कौंसिलके सदस्य हैं।

राजाजीकी सम्मति

कवि रामलिंगम पिल्लैकी कविताओंकी विशेषता यह है कि वे अत्यन्त सरल और साथ साथ अत्यधिक प्रभावोत्पादक हैं। उनकी कविताओंको सुनकर 'नमक सत्याग्रह' के दिनोंमें राजाजीने कहा था "मुझे बड़ी चिन्ता थी कि इस समय कवि भारती नहीं रहे। पर यह कमी आपने (कवि पिल्लैने) दूर कर दी।"

भारतीकी सम्मति

श्री पिल्लै एक बार कवि सुब्रह्मण्य भारतीसे मिलने गए। उन दिनों श्री पिल्लैकी कीर्ति बढ़ी नहीं थी। भारतीने कहा कि वे कोई गीत सुनायें। श्री पिल्लैने एक छन्द सुनाया। यह नाटकीय मंचपर गानेके लिए रचा गया था। इसमें श्री रामचन्द्रके वनवासके समयका वर्णन था। उसका पहला चरण यह है

तम्मरशें पिरर आळा विड्डु विङ्ङ्
ताम अर्वाय कै कट्टि निग वैयम।

[अर्थात् 'अपना राज्य अन्योंको दे कर स्वयं नग्न होकर रहनेकी शोभा।"]

यह पहला चरण सुनते ही भारती बोल उठे "क्या कहा 'अपना राज्य अन्योंको देकर स्वयं नग्न होकर रहनेकी शोभा" वाह! वाह! हमारे देशकी अबकी स्थितिका कितना सुन्दर चित्रण है! तुम निस्सन्देह प्रतिभा शाली हो। तुम्हारी कविताएँ अवश्य कालप्रिय बनेंगी।

कविका व्यक्तित्व

श्री रामलिंगम पिल्लै अत्यन्त नम्र स्वभावके हैं। अहंभाव तो उनमें नाम मात्रके लिए भी नहीं है। उनकी दृष्टिमें सब मनुष्य समान हैं। न कोई किसीसे बड़ा है न कोई छोटा। इस समभावका बीजारोपण उनके बचपनमें ही हुआ था। कविवरकी माता वैष्णव परिवारकी थी और पिता शैव परिवारके थे। इस कारणसे कविके मनमें दोनोंमें समताका भाव जागृत हुआ।

मुसलिम परिवारसे मेल

कवि जिस समय तीन चार सालके बच्चे थे तब उनकी माता सर्किल इंस्पेक्टर (दारोगा) के घर जाया करतीं थी। दारोगा मुस्लिम थे और उनकी पत्नीसे कविकी माँ बार-बार मिला करतीं थीं। तब अपने बच्चेको भी साथ ले जाया करतीं थीं। उस मुस्लिम महिलाका उस बच्चेसे बड़ा प्रेम हो गया। वह उसको बचपनसे वहीं खिलाया-पिलाया और सुलाया करती थीं। यहाँ तक कि जब वह बच्चा अठारह वर्षका नौजवान बन गया तब भी बिना किसी रोक-टोकके उस परिवारमें जाया करता था—वो मानो उस परिवारका ही अंग बन गया। आजकल भी दक्षिण भारतके मुस्लिम परिवारोंमें पर्दा प्रचलित है। उन दिनों तो कड़ाईसे पर्दा प्रथाका पालन होता था। इस अनुभवका ही परिणाम है कि कविको सर्व धर्म समानत्वका सिद्धान्त प्यारा हुआ।

कविका "एन कदै" (मेरी कथा) नामक आत्म-चरित उनकी एक उत्कृष्ट रचना है। इनकी गद्य रचनाएँ भी कम नहीं हैं। "मलैक्कळ्ळन" (पहाड़ी डाकू) और "अवुदायुद अर्पुदम" (प्रभुकी करामात) इनके उपन्यास हैं। "अवनुम अवळुम" वह (पुरुष) और वह (स्त्री) नामक कविता की कथा वस्तु अत्यन्त रोचक है। इनकी "तिरुक्कुरळ पुदु उरै" नामक तिरुक्कुरळकी टीका अत्यन्त लोक प्रिय है। "तमिलन इदयम" (तमिल-वालेका हृदय) "सगोलि (शंख ध्वनि) "कवितांजलि" "गांधि अंजलि" "तमिष तेन" (तामिल-मधु) आदि कविताएँ अत्युत्तम अर्थोंकी हैं।

इनकी कविताएँ स्वभावतः ही गानात्मक हैं। इसी कारण जनता इनको आसानीसे अपनाती है। संगीतके कारण साहित्यिक महत्त्वका—अर्थ पुष्टिका कोई लोप नहीं होता।

तमिऴन एन्रोर इनमुण्डु
तनिये अवर्क्कोरु गुणमुण्डु।
अमिऴ्दम अवनुडै वऴियागुम
अन्बे अवनुडै मोऴियागुम॥

"तमिऴ जाति नामक एक समूह है—उसका एक विशिष्ट गुण है। उसका मार्ग अमृतमय है। प्रेम ही उसकी वाणी है।

उनमें उत्साह पैदा करनेकी अपार शक्ति है —

तमिऴनेन्रु सोल्लडा
तलै निमिर्न्दु निल्लडा

[कहो मैं तमिऴियन हूँ। अपना सिर ऊँचा किए खड़े रहो।"]

इसमें सन्देह नहीं कि कविवर्य कवियोंने तमिल प्रदेशके लोगोंको—विशेष रूपसे छात्रोंको—बहुत प्रभावित किया है।

कविके मनोभावको समझनेके लिये उनका एक पद यहाँ उद्धृत करना अनुचित नहीं होगा।

इसमें गांधीजीके विषयमें कवि स्वयं कहता है—

कुत्तीट्टि ओरु पुरत्तिल कुरुवेन्नुम
कोडारि ओरु पुरत्ती पिळक्कट्टेनुम।
रत्तम वरत्तडियाल रत्त मुम्बारित्तु
नाल पुरमुम नकर नरेत्तु नसिम लिरुव॥
सत्तनैयुम नान पोरुत्ते अहिंसै कात्तुम
सर्वर्गळुम अन्बोल सकलरुक्कोलिक।
ओतु मुहम मलर्न्दुसिरित्त सिरित्तिरुन्तुम
उसिर तुरक्काल मुत्ते एन उयर्न्द आसै॥

[एक ओर तो मुझपर भाला चोट पहुँचाता रहे, दूसरी ओर मेरे शरीरको कुल्हाड़ी तोड़ती रहे, चारों ओरसे गालियाँ सुनाते हुए लोग इतनी लात मारें और लाठीका ऐसा प्रयोग करें कि मेरे शरीरसे खून निकल पड़े। इन सबको सहकर मैं हँसता हुआ अहिंसाका पालन करूँ और सबको ऐसे ही करनेका उपदेश देकर मुख प्रसन्न रखूँ। ओठोंपर हँसी लाऊँ और मृत्युको प्राप्त करूँ—यही मेरी सबसे बड़ी इच्छा है।]

• • •

नामक्कल रामलिंगम पिल्लै

[काव्य-सञ्चय]

१ सूरियन वरुवदु याराले ?

सूरियन वरुवदु याराले ?
      चन्दिरन तिरिवदुम याराले ?
कारिरुळ वानिल मिन्मिनि पोल
      कण्णिर पडुवना अव एन्न ?
पेरिडि मिन्नल एदानाले ?
      पॆरु मळै पॆय्वदु एवराले ?
यारिवॆल्लाम अधिकारी ?
      अदै नाम एण्णिड वेण्डावो ? ।।१।।

तण्णीर विपुल्लवुम विर्र यिनी
      तरैयिल मुळैत्तिडुम पुल एदु ?
मण्णिल पोट्टु विर्र योन्ड
      मरम्बोडि यावदु याराले ?
कण्णिल तेरिया शिशुवै एल्लाम
      करुविल वळर्प्पदु यार वेले ?
एण्णि पार्तिल इवैयॆल्लाम
      एदो ओर विन्दै इरुक्कुमन्रो ? ।।२।।

एत्तनै मिरुगम ! एत्तनै मीन !
      एत्तनै अळगिय परप्पना पार !
एत्तनै पूच्चिगळ पुळु वगैगळ !
      एण्णत्तोलैया चेडि कोडिगळ !
एत्तनै निरंगळ उरुवंगळ !
      एत्तना वट्टुम एण्णुंगाल
अत्तनैयुम तर ओरु कर्तन
      यारो एङ्गो इरुप्पदु मेय ।।३।।

१ सूर्य आता किससे है ?

सूर्य किससे (प्रेरित होकर) आता है? चन्द्र किससे आता है? घोर अन्धकार पूर्ण आकाशमें जुगनू जैसे दिखाई पड़नेवाले क्या हैं? भयंकर बिजलीका चमकना और गरजना किसके कारण होते हैं? वर्षा किसके कारण होती है? इन सबका मूल कर्ता कौन है? क्या इस बातपर हमें सोचना नहीं है? ॥१॥

ज्यों ही पानी पड़ता है त्यों ही जमीनसे बिना बीजके भी घास उगने लगती है—यह किसके कारण होता है? मिट्टीमें जो एक बीज बोएँ तो वह पेड़ या पौधेके रूपमें किसके कारण परिणत होता है? दृष्टिगोचर न होनेवाले शिशुओंका गर्भमें पालन करनेवाला कौन है? अगर सोचो तो क्या यह नहीं विदित होता कि इन सबका एक मूल कारण है? ॥२॥

कितने जानवर हैं! कितनी मछलियाँ हैं? कितने रेंगनेवाले जीव और कितने उड़नेवाले जीव हैं? कितने कीड़े-मकोड़े हैं? असंख्य पेड़-पौधे और लताएँ हैं। कितने रंग और कितने रूप हैं? इन सब पर विचार करो तो विदित हो जाएगा कि इन सबका जन्मदाता एवं कर्ता अवश्य कोई होगा ॥३॥

मस्ला वेन्वार शिता पेरगळ
　　　मरम मरि एन्वार शिमा पेरगळ
पत्लान मवन परा मण्डसतिल
　　　चापुम् सम्व एन्वारमळ !
घोस्साक विळगा, 'निर्वाणम्'
　　　एन्नम शिता पेर घोस्वारगळ
दस्तामित्वरि पल वेशुम
　　　पूवो मोर पोरळ इवस्किराते ।।४।।

मनप्पोरळै नाम निनैसे ।
　　　मनपक्म मन्वापकुकाविडुवोम
एन्नप्पकिमाय एवर अवन
　　　एप्पडि टोपुवास ममपकेसा ?
निम्बे पिररै पेशामल
　　　निनविलुम केडुवस मेप्पामल
वनिप्पोम अवे वर्णमिडुवोम
　　　वापवोम सुममाय वापुम्विडुवोम ।।५।।

———

कुछ लोग उसको 'अल्ला' कहते हैं कुछ लोग हर या हरि कहते हैं। कुछ लोग उसको परम मण्डल वासी समर्थ पिता कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वह अकथनीय निर्वाण है। अनेक लोग इन रीतियोंसे जिसका वर्णन करते हैं वह कोई तो अवश्य ही है ।।४।।

उस परम तत्वका स्मरण कर हम सब प्रेम-पूर्वक रहें। कोई उसे चाहे जैसे माने—हमें इससे क्या मतलब? बिना पर-निन्दा किए, मनसे भी अन्योंकी बुराई किए बिना हम उसकी वन्दना करें और सुख-पूर्वक रहें ।।५।।

---

२ तमियरिन पेरुमै

तमिया उनविकु सरणम वापृतु
      वरणिक्कोस्लाम वधि काट्टा ।
ममुवाम एन मोपि , मर मे एन वधि
      मन्नो उयर निर्के ' एन्न वोसुम् ॥१॥

अणमुम वणमुम गामणमुम वोह्मुम
      तपत्तु क्षेपित्तु तमिय नाट्टिल ।
पैयण मुपुवुम वर्णगिरुम गुणगळै
      वापृमवर उमुड मुखोर्गळ ॥२॥

एगो पिरम्ववर मुह्र पेरुमैये
      एत्तिप्पणिन्नवर तमिय माट्टार ।
ईमे मगे एन्न पुरपुगळै
      एन्नम पिरित्तिमर तमिय माट्टार ॥३॥

एनु तमियारलर एन्न कारमताल
      रमपृनु मिवुवविलै तमिय माट्टार ।
पेशुम तमिपकळ फिक्स्तुवै पोरु म
      पेस्सैपुवैय वर्गळ पाला पेर्गळ ॥४॥

महूमवु पिरम्वु मस्रोव वेलाम मवार
      महिमै पिळैपुमिम्ब तमिय माट्टिल ।
महमगिपम्वु पिनम मामूर आप्पवमै
      मारार तोपुगिरार अरियायो ? ॥५॥

२. तमिल भाषा-भाषीकी महिमा

हे तमिल भाई ! 'अमृत भरी भाषा है, धर्म भरा मार्ग है और प्रेम मेरा जीवन लक्ष्य है' कहकर सारे संसारको मार्ग दिखानेका तुम्हें यह अवसर मिला है ॥१॥

शैव और वैष्णव, श्रमण (जैन) और बौद्ध धर्म तमिल प्रदेशमें पनपे। तुम्हारे पूर्वज उन उत्तम गुणोंसे युक्त जीवन बिताते थे जिनका सारा संसार कद्र करता है ॥२॥

जो बुद्ध न जाने कहाँ पैदा हुए उनको आदरके साथ तमिल प्रदेशने माना। तमिल भाषावालोंने कभी यहाँ-वहाँका अन्तर नहीं माना ॥३॥

ईसा मसीह तमिल प्रदेशके नहीं, इस कारणसे तमिल लोगोंने उनकी उपेक्षा नहीं की। तमिल भाषा भाषियोंमें ईसाको माननेवाले अनेक हैं ॥४॥

मुहम्मद साहबका जन्म तो किसी अन्य देशमें हुआ, उनकी बड़ाई होती है तमिल प्रदेशमें। क्या तुम नहीं जानते कि नागूरके भगवानकी प्रफुल्ल मन होकर प्रतिदिन कौन आराधना करते हैं ?* ॥५॥

---

* तमिल प्रदेशके तंजौर जिलेमें नागूर नामक नगरमें एक मसजिद है जहाँ हिन्दू और कुछ ईसाई लोग भी बड़ी श्रद्धाके साथ जाया करते हैं।

उलगिन मक मेलाम ओम्बोर कालत्तिल
मोडि पुगुन्दविन्द तमिय नाट्टिल ।
कलहम शिरुमिन्रि कट्टि यणत्तवर्
नाडु बळत्तगळ तमिय नाट्टार ॥६॥

तमुमिर मोप्पिनुम पिरर कोर्ळ अञ्चिडुम
वमम बळर्तगळ तमिय नाट्टार ।
मसुयिर यावयुम तनुयिर एग्विडल
मनि किडम्कुगन तमिय मोयिये ॥७॥

कोल्ला विरतमे मस्तार बयियेन्ड
कूरि मडम्व कुगम कुल्लामुत्तोर ।
एल्ला विरतितुम एवत्म मविसिडुम
एड्ड मुडमकुन इल्लरा माम ॥८॥

उलमम मुपुत्तुम कलहम उमु पार
उन पेकम कडमैगळ पल उम्पु ।
विलगुम पडि शोमुम बेरि कोष्व पेष्वोल्लाम
विळमक वियित्तेपुवाम् तमिया ॥९॥

इम्बिय ताय ममम मोन्नु किळमकैयिल
इन मुरै पेशुगिन्दार ! इयिवागुम ।
अन्यपेरियवळिन अडिमै विळगरुतुम
अन्य मिगै नियत्तक्किमलाम ॥१०॥

तमिपणल कायग मल तमिय मोयि बळर्न्मे
तोगिडुम इम्बियसाय तवमपसित्त
कुमिपुम मुरैमुमेमनकूडि ममिवरेलाम
कोण्डिकुल विमुत्तोम कुमस्यत्तिल ॥११॥

संसारके सब धर्म समय समयपर आकर तमिल प्रदेशमें समा गए। तमिल भाषा भाषियोंने किसी प्रकारके झगड़ेके बिना उन्हें गले लगाकर अपनाया ॥६॥

तमिल देशवालोंने ऐसे धर्मका पालन किया जिसमें अपनी जान चाहे दे देनी पड़े पर पर-हत्यासे दूर रहना पड़ता था। तुम्हारी तमिल भाषा ही है जिसमें यह उपदेश बार-बार मिलता है कि तुम्हारे ही प्राणके समान सभी जीवोंके प्राण हैं ॥७॥

तुम्हारे पूर्वज मानते थे कि न मारनेका व्रत ही सज्जनोंके योग्य है। तुम्हारा गृहस्थ धर्म ऐसा है कि सब लोग सब तरहसे उसकी प्रशंसा करते हैं ॥८॥

दुनिया भरमें झगड़ा फसाद बढ़ रहा है। तुम्हारे महान् कर्तव्य कई हैं। हे तमिल भाई! लोगोंको अलग-अलग करनेवाली (लोगोंमें फूट डालनेवाली) उत्तेजक बातोंको रोकनेका प्रयत्न करो ॥९॥

भारतमाताका मन तो दुखी है और हम जाति-भेदकी बातें करें—यह तो बुरा है। उस आदरणीय माताकी दासताकी बेड़ियोंको काटकर संसार भरमें प्रेम भाव स्थापित करो ॥१०॥

तमिल प्रदेशकी जय हो। तमिल भाषाकी वृद्धि हो। हमें धारण करनेवाली भारतमाताका तप सफल हो। बुदबुद और फनके समान इस संसारके सभी मनुष्य हिल मिलकर रहें ॥११॥

कोल्लामे पोय्यामे इरप्पुम दोर्म
　　ककूद् रवे मेय भाम गुणमाम एन्न
मल्लणमे अरम वळर्त तमिय माडोम्रे
　　मानिलत्तिल अमैवि मिक्क माडाम एन्नम।
वल्लाण्मै ममवतुयरा वायम्नु वेग
　　वळ्ळुवने मरुवडियुम यग्दाम् एन्न।
चोल्लाले पुगयचोल्ला वरुणे चोति
　　मुरून ऐंगळ गाँदि महान मामम वायगा ।।४।।

अप्पु गुण्डु विदैगळुम अपुमा वोल्ला
　　अप्पासुवकप्पाळाम अरिवाय मिकुम।
इप्पयङ्कु पेरुंगवने एस्साम वस्ला
　　इरैवनेये मूच्चाग इयुत्तु पेसि।
तुण कोण्डु अवनगळै तोडर्न्द पाँदि
　　तूयवने इम्मियत्ताय चोत्ति मायुम।
अन कम्बु मद वैरियै अडविक तेस्स
　　अवम वयिये मक्कळुक्कु अमैवल वेण्डुम ।।५।।

शान्त वयि उलगमेल्लाम पोट्र वेण्डुम
　　सत्तियत्त अरियणैयिल एट्र वेण्डुम।
मामरक्कुळ पोरवैरिगळ मरैय वेण्डुम
　　मक्कळिडम अन्बरंगळ निरैय वेण्डुम।
सोर्न्दुवरुम एयै एस्साम सुगिक्क वेण्डुम
　　सुवर्गळे अरणाइपि वयिक्क वेण्डुम।
गाँदि महान तिय नामम वाया वेण्डुम
　　कडवुळेय पेरुकरुणे काक्क वेण्डुम ।।६।।

———

इस ससारमें तमिल देश ही वह शान्ति पूर्ण प्रदेश है जो इस तत्त्वपर आधारित धर्मका पालन करता आया कि न मारना और असत्य न बोलना नामक दो गुणोंका सयोग ही सत्य ज्ञानका मार्ग है। हममें सदाचार लानेके लिए ही जो हुए थे ऐसे वल्लुवर (प्रसिद्ध तमिल सन्त कवि) ही फिरसे उत्पन्न हुए हों—ऐसे वचनोंसे अवर्णनीय करुणाकी ज्योति पवित्र गांधीजीकी जय हो ।।४।।

अणुवमकी भी विद्या जिसके पास पहुँच नहीं सकती जो परे-से-परे ज्ञानमय है और जो असमान अपार करुणा-मूर्ति है उस सर्व समर्थ परमात्माको अपनी साँस बनाकर बोलनेवाले उसीका सहारा लेने वाले और उसकी कृपा प्राप्त पवित्र गांधी ही भारतकी ज्योति है। बाँधनेका मर्म जानकर धार्मिक द्वेषको बाँधन (वशमें रखने) के लिए उन्हीं गांधीका मार्ग अपनाना लोगोंके लिए आवश्यक है ।।५।।

गांधी मार्गका सारा ससार आदर करे। सत्यको सिंहासनारूढ़ करें। मनुष्योंके बीचस लड़ाई दूर हो जाए। लोगोंमें प्रेम और धर्म बढ़े। दीन-दरिद्र सुखी हों। पवित्र लोग ही राज्य शासन करें। महान् गांधीके पवित्र नामकी जय हो। करुणामय भगवान सबकी रक्षा करें ।।६।।

———

४　कर्तिर्मिञि रत्तमिञि

कर्तिर्मिञि रत्तमिञि
　　मुद्दमोन्द बरगुडु ।
सत्तियसिम नित्तियतें
　　मन्मुम यास्म हाववीर ।। (कर्ति) ।।१।।

ओप्पिमप्पि गुण्डु विद्दिक
　　गुयिर परिस मिञ्जिये ।
मप्पर्कासिक कप्पिरावा
　　हाण्डे योन्द पुत्तुमये ।।　(कर्ति) ।।२।।

मुदिरे इस्से पार्स इस्से
　　कोस्सुम माता इस्संये ।
एदिरि एन्द माकमिस्स
　　एड्_म आतो इस्सवाम ।। (कर्ति)।।३।।

कोपमिस्से तापमिस्से
　　शापम कूरलिस्सम्ये ।
पापमामा दोमूग मोन्दम
　　पन्नुमाता इस्संये ।। (कर्ति)।।४।।

कप्पहिस्से कोट्टिस्से
　　कार्वेमिन्द माविरी ।
पण्डु शोपुद पुण्यिपम हान
　　पजितवे माम पाकवे ।। कर्ति) ।।५।।

गाँधि एन्द शान्त मूर्ति
　　तेएन्नु काट्_म सोमेरी ।
माम्बरसकुळ तोर्मे कुप
　　मापुम वेयम् मार्गमे ।। (कर्ति) ।।६।।

४ बिना तलवार या रक्तके

[यह कविता उस समय रची गई थी जब 'नमक सत्याग्रह' का आरम्भ हो रहा था। इस कवितान आर्योंमें उत्साह पैदा किया और घर-घर-इस कविताका प्रचार होने लगा था।]

खड्गरहित और रक्तरहित एक युद्ध आ रहा है। सत्यकी नित्यतापर विश्वास करने वाले सब लोग उसमें सम्मिलित हों ॥१॥

(लुक-छिपकर) पास पहुँचकर गोली चलाने और प्राण हरण करनेका यहाँ कोई काम नहीं। यह अभूतपूर्व एक नया ही युद्ध है ॥२॥

इसमें न घोड़ा है न हाथी है। किसीको मारनेकी इच्छा नहीं है। यहाँ कोई विरोधी नहीं है। प्रहार करनेकी कोई इच्छा नहीं है ॥३॥

यहाँ कोप नहीं है ताप नहीं है शाप दिया नहीं है। पाप युक्त कोई काम करनेकी इच्छा नहीं है ॥४॥

ऐसा युद्ध न कभी देखा न सुना। हमारा पूर्व-कृत पुण्य सफल हुआ कि हमें यह देखनेका अवसर मिला ॥५॥

गांधी नामक शान्त मूर्तिने (अनेक मार्गोंमें) चुनकर हमें यह मार्ग दिखाया है। मनुष्यकी बुराईको नष्ट करनेके लिए सृष्ट यह दैवी मार्ग है ॥६॥

---

६ मक्कट चेल्वम

पेट्रिडुम शेल्वत्तेल्लाम
    पेरियदु मक्कट चेल्वम ।
उट्रिडुम इन्बत्तेल्लाम ।
    उयन्ददु मक्कळिन्बम ।।
मट्रैये उलगिलेन्द
    मनिदनुम मडवरोणावु ।
शाट्रैये मदिप्पु नामुम
    सरियरा नडप्पो मागा ।।१।।

शिरन्दिडुम इन्बमाना
    शिशुवदु ममदकु वन्दु ।
पिरन्दिदु मुडुम पिन्नुम
    नाम नेम्मुम पिर्यगळाले ।
अरम्बन कुपन्द इन्बम
    अनुबविप्पदकु मुन्नाल ।
इरन्दिडुम अबनेप्पोला
    इस्पोल तुन्बमुण्डो ।।२।।

उदविमिर्गुरैत्त वेन्दम
    उडल मिग मेलिन्द वेन्दम ।
मरियिनिगुरैन्द वेन्दम
    अयगिन इयम्बवेन्दम ।।
पिरविमिल कुरगळेल्लाम
    पेतुवर कुड्डत्ताले
कादविमिल अमन्द वस्तार
    कवलुळिन कुट्रमुण्डो ? ।।३।।

४ सन्तान भाग्य

प्राप्य सभी सम्पदाओंमें सन्तानकी सम्पत्ति सर्व श्रेष्ठ है। प्राप्य सभी सुखोंमें पुत्र-सुख उत्तम है। इस बातका कोई किसी तरहसे खण्डन नहीं कर सकता। हम भी इसको मानकर उचित जीवन बितायें ॥१॥

उत्तम सुख देनेवाला शिशु हमारे यहाँ जन्म प्राप्त करनेके पूर्व ही या पैदा होनेके बाद हमारी ही त्रुटियोंसे हमारे वात्सल्य-सुख पानेके पहले ही मर जाता है—इससे बढ़कर दुखकी कौन सी बात हो सकती है ॥२॥

आकारका छोटा है, तन बड़ा दुबला है, बुद्धिकी कमी है, सौन्दर्यकी हानि आदि जो जन्म जात कमियाँ हैं वे माँ-बापकी त्रुटिसे ही गर्भमें ही शिशुमें आ जाती हैं। इन कमियोंमें भगवानका कोई दोष नहीं है ॥३॥

विवि विलवकरिंचु वापुनु
विमसमै ममतुळेल्वि ।
मविवियमै बोषु गुरु
मार्गसिस निन्द मामुम ।।
पुवलबरे वेद्_ मद्_म
बुद्वियाय वळमों मामाल ।
इवमुरा बन्व मवकळ
इळमयिल इरप्पुवुडो ? ।।४।।

विवितमै पोद्दि तूवुम
विळे निलम पयु पात्तु ।
मुद्दिवुम मिक्का वासें
पुवलिडा वेलि मुद्दि ।।
पत्तियिर्कोत्तु पम्म
पयिरदु सॅपुवुविह्वाल ।
पोतैयाय सोगैयाग
तोम्हमो पोसेल पोल्वम ।।५।।

विधि-निषेधका ज्ञान पाकर तदनुसार जीवन चलाए परम-पवित्र भगवानका ध्यान करके सद्बुद्धिसे शुद्धाचरण करे और सन्तान प्राप्तकर बुद्धि पूर्वक उसका पालन करे तो सुख देनेवाले शिशु अल्पायुमें क्यों मरेंगे ? ॥४॥

जहाँ बीज बोना है उस जमीनको ठीक-ठाक कर जानवर चर न जाएँ, इस उद्देश्यसे चारों ओर घेरा डालकर यदि श्रद्धापूर्वक खेती की जाए तो सस्य खराब क्यों होगा ? ॥५॥

मोरु मरुंदु

वेयुपत्तमिकक मामिट्ट अम्मम
तीमै मळर्दु तिणप्पुं एळे ।
वैयित्त मऴयोले करविगळ कोप्पु
कण्णिल वेरिकोण्ड पार्व मरुप्पु ।।
वेय्यिपुपुवेत्तवे तुशि तुविप्पोम
वेत्त पोंगुम मनम पडुम पाडुम ।
वैयसित्त एगुम मनिदर्गळ याक्कम
वापूर्कैयिम इन्बम इयम्बमर पायम ।।१।।

अम्मिकेंरे वम्म मनिदर्प्पिरप्पे
मारपि पुळ्ळोमार्गळ शिरप्पे ।
'पुम्मतुमके मुट्.म अरिवै वोलुत्ति
मुट्. मतिविकरार करै कोळ्ळुत्ति ।।
इन्बम मळैम्बवर यारेयुम काणोम
एदुवदु मनमळै कोत्तुवर वोणे ।'
एनवते मन्दु मक्क्षेम वेरे
एगुवर याक्न अरितार्गळ इन्रे ।।२।।

कोळिन्नायकुम्नापुवम मवक्ळ मरम्मार
पूविण्यपगुवल पूवकुरैम्मार ।
नम्मिन मडुंगि मोर्दुगु पिगार्गळ
आणायम पात्तुप्पर्पुगुणिगारगळ ।
वंजनपट्ट वसिम्मैयिस्कामल
वानत्तिल वन्दे एविक तिस्कामल ।
कुणुकुपर्वगळ पेणळै कोस्मार
मोरत्ते वीरत्तिल पोरेम्ब स्रोम्मार ।।३।।

एक दया

देवांश-युक्त मानव बुराइयोंमें फँसकर दुखी क्यों है? हाथमें हत्याके हथियार लिये आँखोंमें मदा रखता है। धूपमें तड़पनेवाले कीड़के समान तड़पता है और वदनापूर्ण व्यथित-मन रहता है। संसारके सभी मनुष्य जीवनके सुखसे वञ्चित हैं॥१॥

कहते हैं कि प्रेमका प्रदर्शन करनेके लिए ही मानव-जन्मकी सृष्टि हुई। आजके सभी विज्ञ इस विस्तारमें डूबे हैं कि (अनजान मनुष्य) बुराईमें ही अपनी सारी बुद्धि लगाकर आत्मियोंको मारते और गाँवोंको जलाते फिरते हैं—फिर भी कोई सुख नहीं पाते। स्वयं ही क्यों भाइयोंको मारते हैं? क्या इसकी कोई दवा (इसको दूर करनेका उपाय) नहीं है? ॥२॥

लोग प्रेमालाप करना भूल गए हैं। उनमें हिल मिलकर रहनेकी रीति नहीं रही। एक दूसरेसे डरते हुए अलग-अलग रहते हैं। आकाश देखते हुए (निराश होकर) छिपनेका यत्न करते हैं। न उनमें निष्कपट बल है न उसे मैदानमें उतरनेका साहस। निरीह बच्चोंको और स्त्रियों को मारते हैं। इस घोर-कर्मको समर कहते हैं॥३॥

माळुक्कुवाळाम विस्सुक्कु विस्साम
वर्गीमिक्क मायुक्म तीर्मिडिक मस्साम ।
माळुक्के आळ मिग्ग मेवक्कु मेराम
आण्मेयुम माद्सुम योयक्कु पोराम ॥
माळुक्कु माळवक्कु मळिळक्क वमिल
मरिपोलुम कुरि सेयुम वळ्ळर्गळोप्प् ।
पाळुक्कु वाय वेक्कुम वालरै कोस्वार
पाक्तै नामरीकम्मेन कोसवार ॥४॥

पुन्निरा विद्पळ वेण्डु वद्रोम
एम्मेसमोपला पुवुमेंगळ वेद्रोम ।
वन्निरन सेव्वाय मध्यत्तोवुम
समधि पेशा वयिगळै लेवम ॥
अवमिस्कापसा आक्तिगळ चद्ःम
मडि तडि शाल्वैये विद्दिड मद्ःम ।
तन्निरम ओाम्ब पविलितम्म ऐमो
वरमियिल मक्कळ तविप्पु पोस्वो ॥५॥

इतमै तीमैक्कुम एद् मस्नु
इम्मिय कामिगळ काव मस्नु ।
उत्तमर याक्म उवक्कुम मस्नु
उलगत्तिल पुम्मस ओपिक्कुम मस्नु ॥
सत्तियम सास्तम इरप्पु वारक्के
समनिडे अन्वेमुम तेनिल कुर्वेगु ।
पत्तियम वेपुव मिग प्योडुम उप्पाक
पापक्कुळ वेवक्कुम पोरिलै कप्पाय ॥६॥

इनके औजार भी कैसे हैं—तलवार-तीर जैसे। अगर ये अस्त्र न रहें तो मल्ल-युद्ध हो जाए। एक मनुष्य दूसरसे भिड़ जाए—पौरुष प्रकट करे—इसका नाम है समर'। दिन प्रति दिन आधी रातमें छुपी छिपी घात लगानेवाली लोमड़ी जैसे दूध (पीने) के लिए मुँह लगानेवाले शिशुओंकी हत्याको सभ्यता कहते हैं ॥४॥

हमन कितने ही यन्त्रोंकी विद्या खूब पढ़ी कितनी ही नूतनताएँ पाई। ऐसी अनन्त शक्ति पाई कि चन्द्र और मंगल ग्रहोंसे बातें कर सकें। इतनी शक्ति पाकर भी हम मारपीटको छोड़ देनेका कोई मर्म सीख नहीं सके। दुनियाके सभी दुखी हैं—यह क्या झूठ है? ॥५॥

इन सब बुराइयोंकी एक दवा है। उस दवाका पता लगाया——भारतीय ज्ञानियोंने। इस दवाकी बड़े बड़े लोग प्रशंसा करते हैं। यह दवा दुनियाके दुखोंको दूर कर देगी। सत्य और शान्ति नामक दो औषधियोंका सम भाग लेकर प्रेम नामक शहदमें घोलो, परमेश्वरका स्मरण नामक पथ्यका पालन करो। इसका सेवन करनेपर देखो लड़ाई नामको भी नहीं रहेगी ॥६॥

———

८ किळियुम पथियम

आदि मुतमिरत्त किळिये अईय बयि तेड़ु ।
मादन तिरुवडिये किळिये माडि नयम पाड़ु ॥१॥

इन्द पेद मिरुलिल किळिये इव्वे पडि परक्क ।
सोन्बम उमाविरुमैयो किळिये दोस्कडि वाय तिरदु ॥२॥

काट्टिनिले पिरम्बाय किळिये काड़ेमबे परम्बाय ।
दूट्टिनिले किडक्क किळिये कूसमैयो उमक्कु ॥३॥

तग मणि कूण्डिल किळिये तणि इरुम्बाकुम ।
अगुबुवमिरत्तिन किळिये आमवनेयुमरक्कु ॥४॥

सोन्व मेस्लाम मरन्दु किळिये शुद्धमेस्लाम मरन्दु ।
इम्मवम्पदि इरुक्क किळिये इव्वे कोण्डायो नी ॥५॥

पच्च मरनिळले मेल किळिये पाडुरत्त नी इयम्बाय ।
इव्वे उयिर मेले किळिये इमुम एवर्कागा ?॥६॥

मोडि इरे तेडि किळिये उण्डु नी मरम्बाय ।
माडि पिरर तोडुक्क किळिये नाणमिग्गिप्पुगिरताय ॥७॥

काट्ट_ पया बगोय किळिये काणुवल नी मरम्बाय ।
पोट्टुवे उपिडरवल किळिये बुद्दि मतिपृग्बाये ॥८॥

सोन्व मोंयि मरम्बाय किळिये सोमडु दोस्डु गिग्राय ।
इन्द विवम बापुम किळिये इम्बमुगस्केडु ? ॥९॥

८ तोता और तरीका

[इस कविताके हर चरणमें किळिये शब्द आता है—जिसका अर्थ है "हे तोते!" तमिल भाषामें तोतेको स्त्री माना जाता है।]

हे तोते! अपनी पूर्व स्वतन्त्रताको पानेका मार्ग निकालो। परमेश्वरके चरणका आश्रय लेकर जयगीत गाओ ॥१॥

इस विशाल पृथ्वीपर मनमाने उड़नेका क्या तुम्हें अधिकार नहीं है? कहो तो ॥२॥

वनमें पैदा होकर तुम हवाके समान (निर्बाध होकर) उड़ते थे। पिंजड़ेमें बन्द रहते क्या तुम्हें संकोच नहीं होता? ॥३॥

रत्न जड़ित सोनेके पिंजरेमें रहो तो भी वहाँ स्वतन्त्रताका आनन्द कहाँ? ॥४॥

अपनोंको भूल करके परिवारका त्याग करके यों रहनेकी क्या तुम्हारी इच्छा है? ॥५॥

हरे पेड़ पर बैठे-बैठे गीत गाना तुम्हारे लिए अब साध्य नहीं है। अब अपनी जान पर ममता किस कामकी? ॥६॥

दौड़ धूप कर खाना प्राप्त करनेका श्रम तुम भूल गए। औरोंके आश्रयमें रहकर उनका दिया हुआ (अन्न) तुम निर्लज्ज होकर खाते हो ॥७॥

वनके कई फलोंको देखना (भी) तुम भूल गए। जो कुछ दिया गया उसीको खा लेते हो—इतना-बुद्धि भ्रष्ट हो गए हो ॥८॥

अपनी निजी बोली भूलकर जो कुछ रटाया जाता है वही रटते हो। ऐसे जीनेमें तुम्हें कौनसा सुख मिलता है? ॥९॥

पन मुकस्त पपिवक किळिये उत्तरवासालुम ।
मगदु सेय सुपिरे किळिये भागोयुवन वहित्ताय ॥१०॥

एण्मनुनपिकरुम्बास किळिये एत्तम भरामाडि ।
कण्णे तिरणदु मुमे किळिये कार्दवि मुत्तिरमाम ॥११॥

मत्त वपि शोस्नुवेन किळिये माडि तेरिम्मुक्कोळ नी ।
मस्मरू वपि विडुत्तु किळिये भम्भिन वपि तेडु ॥ ॥१२॥

मुट्टु उवेत्तुवरा किळिये मूवावुमासे ।
चेट्टू वपिगळ नी किळिये शोपृविकुम कात्तिविस्से ॥१३॥

शोमवै शोल्लावे किळिये शोरिड़ उम्मावे ।
एस भवेत्तासुम किळिये एनेन्व पेळावे ॥१४॥

रेग रगावेन्व किळिये ईमिवम पेसावे ।
एगे एंगे एन्व किळिये एळनाम शोल्लावे ॥१५॥

कोम्निन मपिपावे किळिये गोम्निन पुणपावे ।
अम्निन मर्नुगावे किळिये माडि मवक्कावे ॥१६॥

कोच्च मजमालन किळिये कोपित्तुक्कोम्बासुम ।
माडि उपिर वापुणा किळिये भागावेन्व शोस्वाय ॥१७॥

कोस्सुवमेग्गासुम किळिये कोळ्ळामुमळ्ळावे ।
मेस्सुवमेग्गासुम किळिये मेनि मडुगावे ॥१८॥

वेट्टू_प मेगासुम किळिये वेट्टू_ए एग्गिरुप्पाय ।
कट्टिडा वम्मासुम किळिये शोवम एग्गिरुप्पाम ॥१९॥

अगर आज्ञा हो कि अपने ही कुलकी निन्दा करो तो तुम वैसे ही करके अपने प्राण प्रेम पूर्वक धारण करते हो ॥१०॥

अगर तुम निश्चय मात्र कर लो तो देरी कहाँ ? पलक मारते मारते स्वतन्त्रता सामने आ जाए ॥११॥

मैं अच्छी बात बताऊँगा जरा मान लो। दुखका मार्ग छोड़कर प्रेमका मार्ग अपनाओ ॥१२॥

पिंजरा छोड़कर आना तो तुमसे होनेका नहीं अनुचित काम करनेवाली जातिके तो तुम नहीं हो ॥१३॥

जो रटाया जाए वह न रटो, जो खिलाया जाए वह न खाओ चाहे जितनी बार बुलाएँ, जवाब न दो ॥१४॥

रंगा-रंगा* मत बोलो। 'कहाँ-कहाँ' कहकर हँसी का पात्र मत बनो ॥१५॥

चहक कर खुशी न मनाओ। दीन होकर स्तुति न करो। मारे डरके काँपो मत। झूमते न चलो ॥१६॥

तुम्हें जिसने खरीदा वह मालिक रुष्ट हो तो भी कह दो कि अधीन होकर प्राण धारण करना ठीक नहीं है ॥१७॥

यदि वह कहे कि मार डालूँगा तो भी डरना मत। यदि वह कहे कि (कच्चा) चबाऊँगा तो काँपने मत लगो ॥१८॥

यदि वह कहे कि बोटी-बोटी काट डालूँगा तो उसका निरा वचन (धमकी) समझना। यदि तुम्हें बाँधने (बन्धनमें डालने) आए तो अपनी परीक्षा समझना ॥१९॥

---

* अक्सर तोतेको तमिल देशमें 'रंगा एंगे' रटाया जाता है। रंगा भगवानका नाम है और 'एंगे' का अर्थ है कहाँ ?

पोरवै कासमडि किळिये शोग्गिवुवायो नी ?
वेयमर्यप्पोरुतास किळिये वेंट्रि मुनवागुम ॥२०॥

इन्दप्पडि पिडवक किळिये इयला वेगवम ।
उगन एजमानम किळिये उणदप्पडि मडप्पाय ॥२१॥

इप्पडि नो मडम्मार किळिये एण्णियेण्णि पार्त्ते ।
ओप्पि पजमानम किळिये पोवनै शेमुवाप्प्डि ॥२२॥

कारिय मुमासे किळिये काशळ पिरसैपेरद ।
वीरिपम पेशामल किळिये विट्टिवुवागुमैमे ॥२३॥

कोदि शिरगुमर्सो किळिये कूड्डार मल पिरिसु ।
मावन पुगप पाडि किळिये माट्टिशैयुम् परप्पाय ॥२४॥

मीण्ड पेर वामम किळिये मीयविर्मै परन्तु ।
माप्पवन समिभियै किळिये अण्डि सुणमवैवाय ॥२५॥



यह तो परीक्षाका समय है—क्या तुम घबड़ाओगे ? यदि संकट सह सको तो विजय तुम्हारी होगी ॥२०॥

तुम ऐसा बर्ताव करो कि तुम्हारा मालिक जान जाए कि यह स्थिति (अधिक समय तक) टिक नहीं सकती ॥२१॥

तुम ऐसा बर्ताव करो तो खूब सोचकर तुम्हारा मालिक कोई मार्ग निकालनेका यत्न करेगा ॥२२॥

वह जान जाएगा कि तुममें रत्ती भरका भी काम नहीं है और बिना चूँ किए तुम्हें छोड़ देगा ॥२३॥

तुम अपने पर सँवारकर निस्सन्ताप फलाभोग और भगवानकी स्तुति गाते हुए चारों ओर उड़ोगे ॥२४॥

अनन्त आकाशमें उड़ते हुए तुम भगवानका सान्निध्य पाकर सुखी होओगे ॥२५॥

---

९. तालाट्टु

आरारो, आरिररो
    अम्मा नी कण्णुरंगु ।
पेरेडो, कुरेवुडो
    पेट्रवर गळ यारेवरो ॥
सीराय्म कावेरी
    सेवो तिरुवरुळास ।
मारामल वन्दुविल
    मामणिये कण्णुरंगु ॥१॥

मायवरे पुरळुम
    कावेरी मादुरगे ।
एऐ पडगोट्टि
    एम कणवन आलासुम ॥
पूऐ कुडितुरंगुम
    कुडितनम वान एणालुम ।
कोयेगळ मलवम्मा
    कुरेन्दल वमक्केडु मिल्ल ॥२॥

९. लोरी

[कावेरी नदीमें बहता हुआ शिशु मिला। मल्लाहकी पत्नी उसका पालन कर रही है उसको सुलाती हुई यह लोरी गाती है। तमिल प्रदेशकी लोरीमें आरारो आरिररो शब्द आरम्भमें अवश्य रहते हैं। इन शब्दोंका भाव यह है कि न मालूम कौन अब (इस वंशमें शिशु होकर) पैदा हुआ है।]

आरारो, आरिररो! माई मेरी! तू सो जा। न जाने तेरा क्या नाम है कहाँ घर है और माँ-बाप कौन हैं। इस उत्तम कावेरी देवीकी कृपासे हमारे लिए अप्राप्य तू उत्तम रत्न हमें मिला सो जा ॥१॥

मेरा पति खूब गहरी और चौड़ी कावेरीपर (नाव चलानेवाला) गरीब मल्लाह है। हमारा परिवार रूखा-सूखा खाकर सन्तुष्ट होकर सो जानेवाला है। तो भी हम दीन नहीं हैं। तुम्हें किसी बातकी कमी नहीं रहेगी ॥२॥

माळ कणवरेण्णि
    मल्स मस्स बाम्बळत्तिस ।
भाळ मिरट्टु गिरा
    मधिकारम इस्सैयम्मा ॥
यळै पोपुविल्लामल
    वैसी बोम्पुम बोयमंबाल ।
कालि कुल बेयवम
    कातिडुवाळ कम्पुरंगाय ॥३॥

मदिकारम एग्य बोसिक
    मणियायम सेपवरियोम ।
सविमकार तविरताम
    सम्पाबितुम्बविस्स ॥
तुवि पाडि पोम पडि
    सुगितिलक्कुम सूवरियोम ।
नविकेडु मंडु पिर
    कारयमळ इस्सैयम्मा ॥४॥

पाडु पयक्करियोम
    यम्बु तुम्बु बोयवरियोम ।
मूडु पुरिम्बरियोम
    पोय शात्थि बोलविस्से ॥
नीति मेरि तवरि
    निवै सोस्स निग्वविस्से ।
एडुम ओव वेकुदि
    इंगु वरा क्कायमिल्ल ॥५॥

अच्छे वतनपर दिन गिननेवाले और मालहतोंका बाँटने वाले हम नहीं हैं। हम हमेशा हर काम करते रहने वाले जीव हैं। काली माई हमारी कुल-देवी है वह रक्षा करेगी तू सो जा ॥३॥

अधिकारका नाम लेकर हम अन्याय नहीं करते। धोखा धड़ी या षड़यन्त्रसे कमाकर खानेवाले हम नहीं हैं। हम झूठ-मूठ तारीफ करके सुखी जीवन नहीं बिताते। हमारी दुर्गति कभी नहीं होगी ॥४॥

हम बढ़ बढ़ कर बातें करना नहीं जानते बहस नहीं करते। हम धोखा देना नहीं जानते झूठी गवाही कभी नहीं दी। नीति और न्यायकी भूलकर भी निन्दा नहीं करते हैं। कोई कारण नहीं कि हमारी कोई बुराई हो ॥५॥

कवि-श्री माला

वेसै विगि कूसि कोळ्ळुम
विद्‌पळ मट्रियोम ।
कूलिविगि वैसै कोळ्ळुम
कोडुम्बावम सेयवरियोम ॥
कासैयेन्नम मासैयेन्नम
कासमिगि पाडु पट्‌ ।
मासु पणम वरासुम
मन्न सुकम सेयुडु वैप्पोम ॥६॥

तेरि पुदैलु वैलु
वयिरार तिन्नामल ।
वादि पक्षिलु नोनु
वम्बवर निन्ने कोस्कि ॥
मोदि मोळिनु कोळ्ळुम
उसुसरस्स मीगळम्मा ।
नादि मोर तीम्बुवरा
ज्ञायमिस्से इल्लिवरो ॥७॥

कोवम मिपुम्मानुम
कुत्तु मच्चे वम्मानुम ।
पावम पयिमळुक्कु
भयम्मोळणुम एगळुक्कु ॥
मोवन इबक्कुमहू‌म
वेहुम उवनुम अम्मा ।
देवि सुधैयिवण्णाळ
तेळ्ळुमुवे कण्णुरणु ॥८॥

हम बिना काम किये पारिश्रमिक लेनेकी विद्या नहीं जानते। बिना पारिश्रमिक दिये काम लेनेका महान पाप हमने कभी नहीं है किया। सुबह हो चाहे शाम खूब मेहनत करते और जो कुछ भी मिलता है उसीमें सुख मनाते हैं।।६।।

हम वे निकम्मे लोग नहीं हैं जो पेटभर खाना न खाकर पैसे जमा करते हैं और भूखे प्यासे आनेवाले दीन दुखियोंको भला बुरा सुनाकर छिप जाते हैं। हमारे पास भला दुख क्यों आएगा।।७।।

क्रोधके आवेशमें या मारपीटमें भी पाप और बुराईका भय माननेवाले हम लोगोंके शरीर, प्राण रहते बेकार नहीं रहेंगे। देवी हमारी रक्षा करेगी। हे अमृतमयी! सो जा।।८।।

पळ्ळि पडिप्परियोम
    पट्टणत्तु पेच्चरियोम ।
वेळ्ळ तुणि मरियोम
    वीण पिसुक्कु क्षेयवरियोम ॥
कळ्ळ पिपेप्परियोम
    कावेरि शालियम्मा ।
चळ्ळ पडि इंगुनक्के
    ओद कुरैयुम इस्लयम्मा ॥९॥

हम शालाकी शिक्षा से परिचित नहीं हैं। नगरवासियोंकी वाणी नहीं जानते। युद्ध शस्त्र हम नहीं जानते व्यर्थके झगड़े हम नहीं जानते। चोरी हम नहीं जानते। कावेरी माकी सौगन्ध है। यहाँ तुझे किसी बातकी कमी नहीं है ॥९॥

१० मघनुम मपक्षुम तिरुम्बिय नाळ्

मपपन ओग मनिव तिस्मी—मंगे
मेविरि लविरि यारमिस्से ।
शिम्मर एम्म्म एवरमिस्से—पट्टम
तेदि असैन्दिडुम मचकळिस्से ॥ १ ॥

उस्सकु पसुप्पेर मस्सवर्गळ—पोडु
पोसन सोपविड् बस्सवर्गळ ।
मालक्कुम एविस्म मोरंगळ सेप्पामल
अप्पप्पो तीर्पुगळ सेप्पिडुवार ॥ २ ॥

मस्सवर केट्टवर एम्बवेल्लाम—मये
राजांगम पट्टम पवविमस्स ।
सोल्लिस मडत्तियिल सूरत्तिल वीरत्तिल
पुरुरेम्ब पसर मनुवरे ॥ ॥ ३ ॥

कल्वेरो एन्टोव कट्टिडमुम— अवै
कण्डु मडुंगुवल अंगिसैमे ।
मल्लामिस्सामसे मावम पोस्मुवम
मंगंगे मीति नडत्तिडुवार ॥ ४ ॥

वीविल्कु वीवियोर मीदि स्तसम—पसु
वीट्टुक्कु अंगोव पाळिक्कवम ।
नौविमके मोदि यसेम्बु सेसाविट्टु
निसै केट्टु पोगिर सिम्बै यिस्क ॥ ५ ॥

पळ्ळि प्पडिप्पुक्कु शम्बळम—वपुम
परोद्पैक्कु कटटप्पणामेमपुम
पिळ्ळैगळ पम्माड, पिसुम पमामेम्ब
पिसिम पिडुगुवल मणिस्सपे ॥ ६ ॥

१० स्त्री और पुरुष (दोनों) का प्रिय देश!

वहाँ राजा नामक एक मनुष्य नहीं है मंत्री या तंत्री कोई नहीं है। छोटा कोई नहीं है न उपाधिके पीछे भटकने वाले लोग ही। ॥१॥

गाँवके दस जने जो सार्वजनिक (बातोंपर) विचार करनेमें समर्थ हैं किसीका कोई पक्ष लिए बिना समय समय पर निर्णय करते रहेंगे। ॥२॥

वहाँ अच्छे बुरेका आधार राजकीय उपाधि या पदवी नहीं है वचनमें चरित्रमें शूरतामें और वीरतामें बहुत लोगों द्वारा माना जाना ही आधार बनेगा। ॥३॥

वहाँ न कचहरी (अदालत) नामक कोई इमारत होगी और न कोई उसे देखकर डरेगा। निर्भय होकर सभी अपने अपने दायित्वको जानते हुए नीतिका अनुसरण करते कराते रहेंगे। ॥४॥

हर मार्ग पर एक न्यायालय हर दस घरपर एक पाठशाला (यह वहाँका क्रम होगा) न्यायपर इधर-उधर भटककर (बहुत) धन करके बरबाद होनेका क्रम वहाँ नहीं है। ॥५॥

पाठशालामें पढ़नेके लिए शुल्क फिर परीक्षाके लिए शुल्क, उसके बाद बालकोंके गेंद खेलनेके लिए और शुल्क आदि शोषण वहाँ नहीं है। ॥६॥

वैत्तयिस्सावयर यारमिस्से—मुट्र्म
  मीप्पक्कंगो पले पिस्से ।
कूलियिस्सावयर यावमिस्स—शुम्मा
  कुम्बिट्टु तिमृगिग्र कुम्बलिस्से ॥ ७ ॥

कूनुम कुस्कनुम मोण्डि मुडंगळुम
  मोज्बम, मबस्कुम पंजमिस्से ।
दानम कोडुप्पवेनृरिस्सामल—पोवु
  धर्म मेगरे वैत्तु तोंगिडुवार ॥ ८ ॥

मोप्पि ममगळित्तेस्कोळ्म—अंगे
  वेदु उद्युत्तु कळित्तिडुवार ।
तम्पिवम शोभृविड तोग्गावे—अवन
  वण्वने तम्पिड वेम्बावु ॥ ॥ ९ ॥

वाडु पयकुणडु नेरमिस्सै—अगे
  वम्बिजत्तु मापा मुडियावु ।
मूडु स्रेय पंचमम एडु मिस्से—मुट्र्म
  शोम्बिवजुगिस्क वपियुमिस्सै ॥१०॥

कळ्ळै कुडिप्पदु कूडादु—अंगे
  कामा कळगपळ कप्पविस्से ।
कोळ्ळै पविस्तिड तेवयिस्से—एग्गम
  कोम्बनुम पारस्कुम पञ्जमिस्से ॥११॥

कावेरी नीर वट्टि पोववितसै—ओर
  कासवाय मेसितरि एगुमिस्से ।
नाकनुम कूट्टु गळ एडुबकोप्पोडुम
  मक्कळर मयमेग्र वाळ्ळमिस्से ॥१२॥

वहाँ कोई बेकार नहीं रहेगा। अयोग्य लोगोंके लिए वहाँ स्थान नहीं है यों ही (झूठी) नम्रता प्रदर्शित कर खाने वालोंकी टोली नहीं है। ॥७॥

कुबड़े अन्धे लँगड़े लूले कम हैं। उन्हें भी किसी बातकी कमी नही है। वहाँ दान देनका क्रम नहीं है—सामूहिक (दान) धर्मका प्रबन्ध रहेगा। ॥८॥

सभी सन्तुष्ट और प्रसन्न मनके साथ खा पहनकर सुखी रहेंगे। न बुराई करनेका विचार होगा न उसका दण्ड देनेकी आवश्यकता रहेगी। ॥९॥

वहाँ तर्क वितर्कके लिए समय नहीं रहेगा धोखा देना असम्भव होगा। जुआ चोरी किसी तरहकी नहीं रहेगी। सुस्त रहकर सुखी होनेका कोई मार्ग नहीं होगा। ॥१०॥

वहाँ मद्य-पान मना है। काम जनित कलह वहाँ नहीं होता। लूट मारकी कोई आवश्यकता ही नहीं है किसीको किसी बातकी कोई कमी नहीं है। ॥११॥

कावेरी (नदी) का जल कभी सूखता नहीं है। नहरका मिस्त्री* नामक कोई व्यक्ति नहीं है। कभी भी वहाँ पहरे और बन्धनकी कोई आवश्यकता नहीं है। चोर भयका वहाँ नाम भी नहीं है। ॥१२॥

---

*जहाँ बाँध बनाकर नहरोंमें पानी बहानेका प्रबन्ध रहता है वहाँ पानीके बहावपर ध्यान रखनेवालोंको नहरका मिस्त्री कहते हैं।

पण्णयक्कारगॆळ एल्लावम— एंगुम
पट्टिणि एन्गिर सॊल्लेतु ।
गण्णियम अट्रवर याव मिल्लै—ओर
कासिल्लम पण्ण एन्नतु ॥१३॥

कन्नतुम कॆट्टतुम एन्पडि पोनालुम
कण्णॆरिवन्तु पोय सॊन्नतु मय ।
कण्णवर उण्मैय सॊल्लवुम वाय पोत्ति
कै कट्टि निर्किंड्रुम कष्टमिल्लै ॥१४॥

कोडुस प्पकत्तैयुम वॊगुवर्क्कु—मित्तम
कोर्ट वाशलिल कात्तिरुप्पुम ।
अडुत्तप्पिरविविल पोगुम मट्रुम—मॊन्ने
अस्सल अडम्बिड्रा तोन्रुवैयिल्ल ॥१५॥

तुक्कत्त शोलिल अयुवकुम—वॆगु
तूरम नडन्तु पिरन्तु शोल्लि
पक्कत्तिल निन्रवर एनेन्न वेलूकवुम
पट्ट्र पोवतुम शाट्र मिल्ल ॥१६॥

तीव्रुप्पडारेन्न शोमालुम-अगे]
तीव्रुवल वेण्डि तिरियाविल्लै ।
वेव्विय सुगंगळ यावुम पिररै मोस
वेव्व मट्रुम उण्डु वेरेवर्क्कु ?॥१७॥

कोयिल कुळपलुम वेमारुन्तु—आनाल
कुम्बिड पोवातिल सन्वैयिल्लै
वायिल अपा तपम वण्णमॆल्लामिल्लातिल
वेस्तु पियैत्तिड तेवैयिल्लै ॥१८॥

वड्डिवकिल पोड्रा पणमुमिल्ल—अंगे
वड्डिवकिल वड्डि सेम शाट्रुमिल्लै ।
पेट्टिविल शाविमुमिल्लामल—वेरम
पेण्णिल पुरव्विडवुम नाणयगळ ॥१९॥

यहाँ सभी खेतीका काम करते हैं—फिर भूखका नाम भी यहाँ कैसे रहेगा? गम्भीरता-शून्य यहाँ कोई नहीं है। छोटापन यहाँ नहीं हो सकता। ॥१३॥

चाहे जो देखा हो या सुना हो पर कचहरी (अदालत) में आकर झूठ भी कहा जाय वह सत्य ही माना जाता है। पर उस देशमें जो कुछ देखा उसे सच-सच कहते किसीको डरनेका कोई कष्ट नहीं उठाना होगा। ॥१४॥

दिया हुआ पैसा वापस पानेके लिए प्रति दिन अदालतमें हाजिरी देनी पड़े और फिर भी अगले जन्मकी प्राप्ति तक तंग हो होकर थकनेकी स्थिति हो ऐसी बात यहाँ नहीं है। ॥१५॥

अपना दुखड़ा रोनेके लिए (अपने दुखकी बातें सुनानेके लिए) बहुत दूर जाकर कुछ कहो तो भी सुनने वाला चूँ भी न करे ऐसी निर्दय स्थिति यहाँ नहीं है। ॥१६॥

छुओ मत कहने पर यहाँ कोई छूनेके लिए आतुर होकर नहीं फिरता। सुखके लिए आवश्यक जितने साधन दूसरोंके पास हैं उतने ही अपने पास पाकर कोई असंतुष्ट क्यों होगा? ॥१७॥

मन्दिर और तीर्थ बहुत हैं पर (पहले कौन करे) ऐसा पूजा सम्बन्धी झगड़ा नहीं है। मुँहमें राम और बगलमें छुरी रखनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। ॥१८॥

सूदपर लगानेके लिए किसीके पास पैसा नहीं है। सूदपर सूद लेनेका कानून नहीं है। पेटीकी कोई चाभी नहीं होती। साख जबानपर ही चलती है। ॥१९॥

वानियम तवसम अस्सामस—अगे
　　तगमुम चेळ्ळियुम घोस्यमस्स ।
नाणयमाट्रेग्र नाटक बाळगळ
　　माणरिका पित्तसाट्टु मिस्सै ॥२०॥

चिमम कुपर्णकु सालिकट्टि—चेगु
　　घोरिगरम तालि अवत्तालुम ।
वसम केडुतवन पावचै कुर्सैसिडुम
　　वध्य वपचकगळ कम्बवित्सै ॥२१॥

माट्टु नकु पमभर माउमिस्सै—पिरर
　　माट्टिम मेल बाठीयिस्सावचनास ।
शूट्टु नकु शूडुम कोडुत्तिडुवार—पगी
　　कुष्टर बम्बालुम कुरत्तिडुवोम ॥२२॥

———

धान्य और अनाज ही यहाँ सम्पत्ति है न कि सोना और चाँदी। सिक्का-परिवर्तन नामक मुसभ्य धोखाबाजी यहाँ नहीं है। ॥२०॥

छोटीसी बच्चीका मगल-सूत्र बाँध दिया जाए (विवाह कर दिया जाए) वह शीघ्र ही वितन्तु (विधवा) हो जाए और उस अभागिनका जीवन बरबाद कर दिया जाए, ऐसी कुरीति यहाँ नहीं है। ॥२१॥

देशका कोई शत्रु नहीं है। दूसरोंके देशपर कोई कुदृष्टि नहीं है। गरम बातोंका गरम जवाब दिया जाएगा और दुष्ट आए तो उन्हें भगा दिया जाएगा। ॥२२॥

———

वामियम तवसम अस्सामस—अंगे
तगमुम वळ्ळियुम पोल्यमस्त ।
माणयमाट्रेग माटक आसगळ
मागरिका पित्तसाट्ट मिल्लै ॥२०॥

पिस कुपम्वैवु तामिकट्टि—वेगु
पोम्पिरम तासि अरुत्तालुम ।
पश्म केडुसवन पायव कुर्मैत्तिडुम
पम्ब वयवकगळ कण्डविस्सै ॥२१॥

माट्ट्रपु पगवर पारुमिस्सै—पिरर
माट्टिम मेम आलैयिस्सावरमास ।
शूट्ट्रपु सूडुम कोडुत्तिवुवार—पर्ग
कुप्टर व वासुम कुरत्तिडुवोम ॥२२॥

---

११ नूतन वर्षकी बधाइयाँ

आजके दिन हमारे जीवनमें एक नए वर्षने प्रवेश किया है। इस अवसरपर हम ईश्वरकी पूजा और प्रशंसा कर उसको सिर नवावें। बुराइयाँ हट जाएँगी संकट टल जाएँगे स्थिति उन्नत होगी कीर्ति फैलेगी कार्यमें अभिरुचि बढ़ेगी मनमें प्रेम और सत्कृतिके भाव भरेंगे। दान और धर्मकी वृद्धि होगी। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि प्रिय बन्धु जनोंके साथ रहते हुए गृहस्थ धर्मका पालन कर आप मंगलमय जीवन बिताएँ। ॥१॥

सत्य और शान्तिका सहारा लेकर सन्मार्गमें प्रवृत्त होनेका मार्ग बताने वाले उत्तम मनुष्य गान्धीका मनमें स्मरण करके और सब लोकका पालन करने वाले परमात्माको सिर नवाकर आज चित्तिरै (चैत) मासके नववर्षके शुभ दिनपर उत्तम संस्कार वाली तमिल माताकी कीर्ति गान करता हुआ म आशीर्वाद देता हूँ कि सब तरहका श्रम पाकर आपका कौटुम्बिक जीवन समृद्धि पाए। ॥२॥

११ पुत्ताण्डु वाप्तुगळ्

पुतुन्दु मनतु वाप्विल
पुवियवोर आप्विमाळे ।
पूवाने पुरिन्दु पोवि
ईवान वर्षांग निर्पोम ॥
उगुम्बिडुम सीमै यावुम
ओपिन्विडुम तुम्बमेल्लाम ।
उयर्म्बिडुम सिसैमे कीर्ति
ओंगिडुम कारियसित्ति ॥
मिगुम्बिडुम इन्बम मेम्बिवल
मिरविडुम अन्बुम पण्बुम ।
मेविडुम वळमम वानम
मेविम शुडुम शूया ॥
मगिप्म्बिडुम उळ्ळत्तोडु
मनैयरम शिरक्क नीगळ ।
मंगळम पेरुगि वाया
मनमारा वाप्तुगिरोम ॥१॥

सत्तियमुम शान्तमुमे तुणगळाय ।
धर्मार्थ वधि नडक्कुम कोळगै तन्द ॥
उत्तमनाम गाँधियरै उळ्ळ तेण्णि ।
उत्तगाळुम परम्पोरुळ वणगिनिन्द ॥
चित्तिरैयाम पुत्ताण्डु तिरुनाळ काणुम ।
धीर मिगुम्ब तमिप् तायिन पुदल्वरावि ॥
मेल नलम पेरुगि उळ्ळ कुतुम्ब वाप्क ।
मे-मेळुम शिरप्पडैय वाप्तुगिरोम ॥२॥

———

२२ वह (स्त्री)

[यह अंश कविकी 'वह्' और 'वह' नामक रचनासे उद्धृत है। तमिल भाषामें 'वह्' शब्दके तीन रूप हैं, एक पुरुष सूचक दूसरा स्त्री सूचक और तीसरा जीव जन्तु या निर्जीव वस्तु सूचक। केवल मनुष्य जातिके स्त्री-पुरुष सूचक शब्द अलग-अलग हैं। जीव-जन्तुओंको सूचित करनेवाला शब्द स्त्री और पुरुष जाति दोनोंके लिए प्रयुक्त होता है।]

यदि उसे हिरन* कहा जाय तो उसमें (भय भीत होकर) चौंक उठनेकी आदत नहीं है। मीन सी आँखो वाली कहा जाए तो मछलीमें कालिमा नहीं है। यदि मधु भाषिणी कहा जाए तो मधुमें तृप्ति पदा करनेका गुण है। यदि चक्रचन्द्र-तुल्य आभा माना जाए तो उसे मुख प्रकाश विहीन मानना पड़ेगा। ॥१॥

यदि मयूर सी शोभा वाली कहा जाए तो मोरसीका पुच्छ नहीं होता। यदि कोकिल वचनी कहा जाए तो कोयलमें सप्त-स्वर (उच्चारण) की समता नहीं है। धूप सी स्वर्णिम कान्तिवाली कहा जाए तो धूपमें ताप है। तीक्ष्ण कटाक्ष माना जाए तो उसमें केवल नाश है सृष्टि नहीं है। ॥२॥

* तमिलमें स्त्रियोंको हिरन या मोर मानने की प्रथा प्रचलित है।

१२ अपळ

मान एना मचळे चोमाल
मळ्ळुवल मच्चु पिल्लसे ।
मीम पिपि उवमाळेगाल
मीमिले कक्मे इस्से ॥
तेन मोयिकुवमे घोमाल
तेमिट्टू_वल तेनुकुण्डू ।
कून पिर मेद्रि एग्राल
कुर मुगम इरम्कुण्पोगुम ॥१॥

मयिलेमुम शायलेयाल
तोगे पेम्मयिलुविकस्से ।
कुयिलेमुम कुरलाळ एग्याल
पयिशो कुयिलुविकस्से ॥
वेयिलोळिमेमि येग्राल
वेयिलिले वेय्यमुण्डु ।
मयिलेमुम पार्वे एग्राल
मयिविमि मालक मिल्ले ॥२॥

१९ वह (स्त्री)

[यह कल कविकी 'वह' और 'वह' नामक रचनाका अनुवाद है। तमिल भाषामें 'वह' शब्दके तीन रूप हैं, एक पुरुष सूचक दूसरा स्त्री सूचक और तीसरा जीव-जन्तु या निर्जीव वस्तु सूचक। केवल मनुष्य जातिके स्त्री-पुरुष सूचक शब्द अलग-अलग हैं। जीव-जन्तुओंको सूचित करनेवाला शब्द स्त्री और पुरुष जाति दोनोंके लिए प्रयुक्त होता है।]

यदि उसे हिरन* कहा जाय तो उसमें (भय भीत होकर) चौंक उठनेकी आदत नहीं है। मीन सी आँखों वाली कहा जाए तो मछलीमें कालिमा नहीं है। यदि मधु भाषिणी कहा जाए तो मधुमें तृप्ति पैदा करनेका गुण है। यदि वक्रचन्द्र-तुल्य माथा माना जाए तो उस मुख प्रकाश विहीन मानना पड़ेगा। ॥१॥

यदि मयूर सी शोभा वाली कहा जाए तो मार्दिम पुष्ट नहीं होता। यदि कोकिल वचनी कहा जाए तो कोयलमें सप्त-स्वर (उच्चारण) की क्षमता नहीं है। धूप सी स्वर्णिम कान्तिवाली कहा जाए तो धूपमें ताप है। तीरसा कटाक्ष माना जाए तो उसमें कष्ट मात्र है तृप्ति नहीं है। ॥२॥

---

* तमिलमें स्त्रियोंको हिरन या मोर कहलाना बहुत प्रचलित है।

चन्दिरनवमम एन्नास
    चन्दिरन मरुनाळ तेयवान ।
अम्बरपेण पोल एन्नास
    अवळै नाम पार्तविस्म ॥
डोम्बिर मगळ पोल एन्नास
    तिरुपिनै कन्धार यारे ।
सुन्दर वडियेग्रासुम
    दोत्तिरले वनिमै इस्लै ॥३॥

तूमनै मेगम एन्नास
    मेगत्तिल कवर्नै कोम्बम ।
काम्बळै कोपोलेग्रास
    केट्टवे कम्बविस्लै ॥
मोन्बुम बाडिप्पोगुम
    मुस्लैवान पत्सुमत्तीडो ?
एम्बिरै एग्गिट्टासुम
    इयर्कैयिल एपिसैपोक्कुम ॥४॥

विरलगळ पवळम एन्नास
    वोपैये मीट्ट कामो
कुरवळै वाकमेग्रास
    सगोमि कुमुरिनकूमुम ॥
करमदै कमसम एन्नास
    मार्बैयिल कमसम कूम्बुम ।
मोह मरम मूपमि तोळुक
    कुवमै येन्दरैक्कामा ॥५॥

यदि चन्द्र-मुखी कहा जाए तो चन्द्र दूसरे ही दिन घटने लगता है। यदि देवकन्या कहा जाए तो उसको हमने कभी देखा नहीं है। यदि लक्ष्मी-सी कहा जाए तो उसको भी किसने देखा है? यदि सुन्दर आकार वाली कहा जाए तो उन शब्दोंमें पर्याप्त बल नहीं है। ॥३॥

यदि केशोंको मेघ कहा जाय तो मेघकी कालिमा कम है। 'कान्दळ' (नामक) पुष्प तुल्य यदि हाथको कहा जाए तो उस पुष्प का केवल नाम सुना है उसको देखा किसीने नहीं। सूँघते ही मुरझाने वाला कुन्द भला दाँतोंके समान हो सकता है? यदि अलङ्कृत कहा जाए तो प्राकृतिक शोभाकी हानि होगी। ॥४॥

यदि उँगलियोंको प्रवाल कहा जाए तो उससे भला वीणा बजाई जा सकती है? यदि कण्ठको शंख तुल्य बताया जाए तो शंखकी ध्वनि रुक-रुककर निकलती है। यदि हाथको कमल माना जाए तो सन्ध्याको कमल सङ्कुचित हो जाता है। गिरा वृक्ष जो बाँस है उसको कन्धेकी समता देना क्या उचित होगा? ॥५॥

कुन्निप् एन मूक्के नोक्कास
कूर्मैयुम नेर्मै यिल्ले ।
मनिपवळ पाडस एन्नास
वेवरे अमुवमुण्वार ॥
तमिप् एमुम इनिमै एन्नाल
तनिसमिय इण्णोविल्लै ।
कमप् मणम वेहम एन्नास
कनियिन तापे काण्बाळ ॥६॥

पपस उवम कोस्कि
पच्चितगळ्ळुक्कुक्कूड् ।
कपमै पुरिम्बिडावा
कट्टू रै पिसिक्काट्टम ॥
कोर्पसा मनुक्क वेच्चाम
मुक्कमाय कोस्सप्पोस्तास ।
मर्पुव मयगु मुट्टम
इयर्कैयिल अर्मैन्द नंगै ॥७॥

कण्णवर मरक्क माट्टार
केट्टवर कायप्पोवार ।
मण्णैयिस पयणिमोर्गळ
मवळै विट्टगला माट्टार ॥
पेण्णु पळ वन्नु वन्नु
वेस्सुवर्गावो कोळ्ळवार ।
मण्णैयुम माळिप्पुमेस्साम
माससमाम मवळ मार्वास ॥८॥

'बुदबुदा' यदि नाकको माना जाए तो उसमें न नुकीलापन है न सीधापन। उसके गीतोंको यदि अमृत-मय कहा जाए तो केवल देवता अमृतके स्वादसे परिचित हैं। यदि तमिप का माधुर्य माना जाए तो आजकल ठेठ तमिल प्रचलित नहीं है। यदि सुगंधित शरीर कहा जाए तो केवल उस कन्याकी माँ उस सुगंधका अनुभव कर सकती है। ॥६॥

अनेक शब्दोंके ढेर लगानेकी कोई आवश्यकता नहीं जिनसे अनेक उपसर्गोंसे पूर्ण 'प्रबंध' (काव्य) तो तैयार हो जाएँ, पर पण्डितों का भी अनुमान ठीक न बैठ। संक्षपमें इतना ही कहा जा सकता है कि वह ऐसी नारी थी जिसमें समस्त अद्‌भुत सौन्दर्य स्वाभाविक रीतिसे समा गया था। ॥७॥

(एक बार भी) देखने वाले भूल नहीं सकते (उसके बारेम) सुननेवाले उसको देखने चलते। पास जो रह सके हैं वे उससे अलग होना नहीं चाहते। स्त्रियाँ आ-आकर उससे बातें करनेको आतुर होती हैं। झगड़ा-फिसाद भी उसके पास आकर शान्त हो जाता है। ॥८॥

तजिलुम अरिम्बार मुत्ते
    ताम तमि मडर्मे तांगुम ।
मामयम इस्सा चोत्स
    मेटकलुम मायम कोळचाळ ।
अमियर्कनुम तीमै
    मादिर मच्चम कोळचाळ ।
ममवर तवरि माळुम
    मविरित्तदर पयिपु मम्मुम ॥६॥

तमक्कुक्म तर्मे तायर
    तर्वक्किडुम कुयत्त माम ।
मनक्कुरे ओम्बमिग़ि
    मरुट्.बार एमरु मिग़ि ॥
इनक्कुळे इस्मार तम्मो-
    डिवर्गे पोक मोडि माडि ।
वनक्किळि पोकक्कोम्बि
    वळर्मेवळ वर्मैपिग़ि ॥१०॥

इयर्कीयिन मरुम्मुम मत्कोर
    इर्यैप्पिनाळ मेर्व पच्चुम ।
मोयर्क्याम पगुप्पु मिवक
    मौम्मेयाय तोर्मवाळे ।
मयक्किळा अरिमुम मत्कोर
    मविरित्तुम पोक्कुम वाम्पुगु ।
मियप्पोबुम एमरुम कन्दु
    मिवप्पुर मिळगि निगाक्कळ ॥११॥

अपनेसे बड़ोंके सामने अपनी मूर्खताको प्रकट करनेवाले विनय-हीन वचनोंको वह सुनती हुई भी सहम जाती। परायोंकी भी बुराई करती हुई डरती थी। राजा भी यदि भूल करता तो अपार अतृप्ति जागृत होती। ॥९॥

उसके माँ-बाप उसपर अभिमान करते थे उसे किसी प्रकारकी मानसिक चिन्ता नहीं थी उसे डराने वाला कोई नहीं था उच्च वर्गके लोगोंके साथ रह कर वह बिना किसी कष्टका अनुभव किये वनैले शुकके समान चहकती हुई बढ़ी। ॥१०॥

प्रकृतिका हित और सज्जनोंका सत्संग पाकर वह सुसंस्कृत हुई। मार्जित विद्या आदि भ्रम-विहीन ज्ञान-युक्त और प्रशंसनीय गम्भीरता-युक्त बनी। वह इस प्रकार बढ़ी कि उसको देखने वाले चकित हो जाते थे और उसको चाहने भी लगते थे। ॥११॥

मिकन्जिकुम शेल्वम मिक्क
    मेट्टिम शिरिवुम इस्से।
अकिल्लोर वार्ते येत्तुम
    अहम्बपुम अरिय माट्टाळ॥
सुयम्बर इयल्वि नोक्
    सुयम्बर पयक्कम शेर्युम।
इरन्बर कुमरिक्कुम्मेशि
    एवरैयुम सममाय एण्णुम॥१२॥

पञ्जिळयिल पेण्णाद् काना
    पलगाले कव्वगर्वाक्किल।
मोळ्ळिळय मुरैयिर कट्टे
    नयवेर पट्टम पेट्टाळ॥
वेल्लैयर नागरीक
    विवगळुम विरुम्बिक्कट्ट।
कक्कुळमुम कपट मिन्जि
    कळयिला पयिर्पोल मिन्नाळ॥१३॥

उळेगळिल शुद्दम पार्पाळ
    उणविले शुद्दम पार्पाळ।
करे गळिल कोणुम पण्णम
    कायकरि शुद्दम पार्पाळ॥
मरेमुरै मोपुक्कम काप्पाळ
    मायुरै मलरै काप्पाळ।
तरेपुर नोम्ब पेरै
    तापेम तांगुम तवकाळ॥१४॥

अपार ऐश्वर्य-युक्त होकर भी अहंभाव विहीन थी। कड़ाईका एक शब्द भी तथा घमण्ड तो वह जानती ही नहीं थी। स्वतन्त्र स्वभावकी और स्वतन्त्र आचार विचारकी होकर भी सभीको समान मानकर सभीसे हितकर बातें करती थी। ॥१२॥

स्त्रियोंके उच्च महाविद्यालयोंमें उत्तम रीतिकी शिक्षा पाकर उसने उत्तम उपाधि पाई थी। गोरोंकी रीति रिवाजोंका प्रेमके साथ परिचय पाकर वह निष्कपट स्वभावकी होकर शाखा विहीन शस्यके समान बढ़ने लगी। ॥१३॥

पहनावेमें सफाईका ध्यान रखती थी। खाने-पीनेमें सफाईका ध्यान रखती थी। बाजारोंमें शाक-सब्जी लेती तो उनकी सफाईका ध्यान रखती थी। चाल चलन और बर्तावपर ध्यान रखती थी मुँहसे निकलनेवाले शब्दोंके हितकर होनेका ध्यान रखती थी। संकट प्रस्तोंको माताके समान सम्भालती थी।॥१४॥

कुयलोडु वीणे नादम
    कुरलोडुम इणोयक्कूट्टि ।
पयुवरप्पाडि पेट्पोर
    परवशम मडोयवलोयवाळ ॥
तिपलुर पोपुडु पोवकुम
    वीण सुगम विलम्ब माट्टाळ ।
एविसुडे पेम्मेवकुट्ट
    इवप्पिडमावाळ एम्बोम ॥१५॥

मावगळ सयम कूट्टि
    मगळिरवम उरिमै कावल ।
मावरम तेयुम पेण्णे
    मडिक्कडि मडक्कवलोपृवाळ ॥
तीयुवम वपक्क मेरुक्काम
    तोम्बिड वेम्पुमेरे ।
मोवरम उनकत्तोडुम
    उयीसिडुम मोम्रे मासे ॥१६॥

पेण्णळै इगपुम्मु मुट्_म
    पेडैगळ एम्र पेशि ।
पुयकोळ एपुवि वैत्तु
    पुरै कोळ शेपुडु वापृविन ॥
कयमळिस मोचे कुत्ति
    करितिड शेपुवार एम
एम कोळ एम्नि एम्नि
    एगुवाळ मनुवे एवरूम ॥१७॥

बाँसुरी और वीणाके नादके साथ अपनी कण्ठ ध्वनि मिलाकर मधुर गीत गाकर सुनने वालोंको वह मुग्ध कर देती थी। व्यर्थकी बातोंमें समय नष्ट करनेवाले अल्प सुखोंकी उसे कभी रुचि नहीं थी। उत्तम स्त्रीत्वका आगार थी वह ॥१५।

महिलाओंका संघ स्थापित कर महिलाओंके अधिकारकी चर्चा करती थी और उसके अनुकूल आचरण करती थी। उसकी एक मात्र इच्छा यह थी कि सभी बुरी प्रथाओंको दूर करनेके लिए अवर्णनीय उत्साहके साथ परिश्रम किया जाए॥१६॥

महिलाओंको तुच्छ बताकर उन्हें निरी निन्दनीय बताने वालोंने ऐसी चोट पहुँचाई जो स्वस्थ न होकर फैलती जाती है जीवनके दो नेत्रोंमें से एक को फोड़ डाला। यों बार बार विचार करती हुई इसी विचारमें मग्न रहा करती थी॥१७॥

कुप्पकोडु वीण मायम
    कुरलोडुम इडायक्कूट्टि ।
पपुवरप्पाडि वेल्पोर
    परवशम अडयवव्वेपृवाळ ॥
विपसुर पोपुदु पोमकुम
    वीण सुगम विरमम माट्टाळ ।
एविलुडे पल्मेक्कुट्ट
    इर्पम्पिडमावाळ एम्बोम ॥१५॥

मावर्गळ सगम कूट्टि
    मगळिरवम उरिमी काक्क ।
मावरम तेडुम पेल्वे
    अडिक्काडि मडक्कवव्वेपृवाळ ॥
तोडुवम वपक्क मेस्साम
    तीर्म्पिड वेम्पुमेग्रे ।
मोवरम ळमरतोडुम
    उर्पीतिडुम मोग्रे भास ॥१६॥

पेण्माळी इगपुवु मुड्_म
    पेर्रगळ एम्प वेशि ।
पुणकोळ एपुवि वीत्तु
    पुरै कोळ मेपुडु वापृविन ॥
कण्गळिल मोर्वे कुत्ति
    करित्तिड मेपृवार एम
एम कोळ एण्णि एण्णि
    एंगुवाळ अडुवे एक्कम ॥१७॥

बाँसुरी और वीणाके नादके साथ अपनी कण्ठ ध्वनि मिलाकर विशुद्ध गीत गाकर सुननेवालोंको वह मुग्ध कर देती थी। व्यर्थकी बातोंमें समय नष्ट करनेवाले अन्य सुखोंकी उसे कभी रुचि नहीं थी। उत्तम स्त्रीत्वका आगार थी वह ॥१५॥

महिलाओंका संघ स्थापित कर महिलाओंके अधिकारकी चर्चा करती थी और उसके अनुकूल आचरण करती थी। उसकी एक मात्र इच्छा यह थी कि सभी बुरी प्रथाओंको दूर करनेके लिए अवर्णनीय उत्साहके साथ परिश्रम किया जाए ॥१६॥

' महिलाओंको तुच्छ बताकर उन्हें गिरी निन्दनीय बखान वाग्बाण ऐसी चोट पहुँचाई जो स्वस्थ न होकर फैलती जाती है जीवनके नेत्रोंमें से एक को फोड़ डाला। ' यों बार बार विचार करती हुई इसी विचारमें मग्न रहा करती थी ॥१७॥

मरुमणम मार्वाक्स्से
मरुमेयं विवर्यपाक्ति ।
मरुमणप्पुवु मिग्नि
मस्करोर पुणियुमित्रि ॥
उव मणल तरॆप्पोल
ओळितिरूमोवुंग चेम्पुम ।
शिव मनप्पाम्पेये मम
दलसित मासाम एम्पाळ ॥१८॥

कर्पेम पेशुवागळ
कर्पिमं पेळ्ळे कामल
पपल पेण्म माशि
पक्षप्पलाम आणगळ मट्टम ॥
मर्पुवम आमचागुम
अनियायम इन्व माट्टिम ।
मर्पवम चेयुत वेण्ड
नाळेमाम मैयाळ नगी ॥१९॥

माट्टियम आडप्पेयुवुम
माडगम मडिक्क चेयुवुम ।
पाट्टिपुम पाडचेयुवुम
परत्तेपर कुसमुम पण्णि ।
माट्टिय कदेंगळेल्लाम
माडवक्कनि इन्व ।
मैट्टिये पेणळ एग

यह कहा करती थी, यह संकुचित भाव ही हमारे देशके पतनका मूल कारण है जो विधान करता है कि महिलाओंका पुनर्विवाह नहीं हो सकता छोटी छोटी लड़कीको भी विधवा होनेपर सुगन्धित फूलसे वञ्चित कर, अच्छे कपड़ोंसे वञ्चित कर रेतमें फँसे रथके समान प्रकाशमय होनेपर भी संकुचित कर दिया जाए ॥१८॥

यह देवी दिनभर यह सोच-सोचकर दुखी होती थी कि सतीत्वका गुण मात्र है पर स्त्रियाँ तो उसकी रक्षा करती रहें और पुरुष अनेक युवतियोंसे मेल बढ़ाकर मनमाना करता रहे—इस देशका यह कैसा गजब का न्याय है? इसीने देशका नाश कर दिया है ॥१९॥

यह कहा करती थी कि नाच नचाकर, नाटक खेलने देकर, गीत गवाकर, वेश्या बनाकर पुरुषोंने जो कुछ कर दिखाया उससे उनका यही मनोभाव प्रकट होता है कि स्त्री केवल सुख पहुँचाने वाला शिकार (साधन) मात्र है ॥२०॥

१३ भजन

मीण्कम कगळ , आयम्बु
    मिमिन्बु मगग मासु ।
तीष्पिड कल्लैप्पोलत्
    तिरप्कम इरम्बु तोळुम ॥
तून् एनत्तोवम कालगळ
    तुणैतर भजनकुम पावम ।
आण तगै मुट्ट्म तवल
    मळ्ळोडुम अमपपेट्टाम ॥१॥

मरियोळि वोसुम कणगळ
    अरपुरै पेसुम नाक्कु ।
वोरि वरम शिर्नै वेट्टित्
    तिगयतर शीबि पिट्ट् ॥
पिरिवना पेरिसुम मस्स
    शीरेनुम मूक्किलोवुम ।
कुरिगळुम मेरिगळ यावुम
    गुणमुळान एन्रे कूरम ॥२॥

कण्णवर कळिक्कुम तोट्टम
    केट्टवर मविस्कुम आवुक ।
मर्वीपिल पवक्क मिस्सार
    मडवकमाय अणुगुवर्गळ ॥
मर्वेगळ मडमुम कण्णाल
    मविप्पुगळ माळैप्पुकोळ्ळुम ।
तोण्डु योय एसलाळर
    तुमुक्कोडु ममक्कम केयूवार ॥३॥

[illegible] यह (पुरुष)

लम्बे हाथ, सुडौल उन्नत विशाल वक्षस्थल, छूनेपर पत्थरसे प्रतीत होनेवाले कन्धे, स्तम्भसे प्रतीत होनेवाले दो पैर, उनका साथ देनेवाले चरण, सब तरहसे पुरुष श्रेष्ठके योग्य सारे अंग उचित प्रमाणके थे। ॥१॥

आँखोंसे बुद्धिमत्ता प्रकट होती थी, जीह्वा धर्मकी चर्चा करती थी, सिरके केश काले हुए और सुन्दर सँवारे हुए थे। नाक न छोटी थी न बड़ी, सुन्दर थी। उसके सभी रंग और रूप घोषित करते थे कि वह गुणवान था। ॥२॥

देखनेवालोंको सुख प्रदान करनेवाला रूप था। गुण ऐसे थे कि उसका परिचय पानेवाले प्रभावित होकर उसका आदर करते थे। निकट रहनेका जिन्हें अवसर मिला नहीं था वे नम्रताके साथ उसके पास जाते थे। उसके सामने झगड़े फसाद मिट जाते थे। उसके सेवक अभिमानके साथ उसके सामने सिर नवाते थे। ॥३॥

पडिप्पिनिल पट्टम पेट्राम
    पसुगळ कयार कालाल ।
मडिप्पविल पवक्कम पेट्राम
    अरंगिनिल वेयम पुष्पु ॥
नडिप्पविल परिसु पेट्राम
    नाडिय एवैयुम मगाय ।
मुडिप्पविल मुर्पवि मिक्कान
    मुट्रिलुम चिरप्पु तक्कान ॥४॥

तोल्वरिर तोल्वमेन्न
    सिरप्पुळ पिरप्पु वाय्न्वान ।
कल्विधिल मासे मिक्कोन
    कविर्तेयिल नेसम मिक्कोन ॥
पल्वाय कलैगळ वेष्पि
    पयिर्चियुम मुर्पवि सेय्वान ।
मल वचि एमतक्क
    नडै नोचि मुडय मण्णन ॥५॥

अपगुळ एवैयुम कण्डे
    मळचिला मासे कोळ्वान ।
पयगियुम पयिलुम उळ्ळ
    अपर्पैये कण्डु पेसुम ॥
एपुविलुम एपुत्तिलेल्लाम
    अपर्मैये एट्रि पोट्रि ।
तोपुविलुम वेयुम मागा
    अपरीये तुणिक वैप्पाम ॥६॥

पढ़ाईमें उसने उपाधि प्राप्त की कन्दुक-क्रीडामें (हाथसे खेलने और पैरसे खेलनेमें) पुरस्कार पाए रंगमंचपर नाटक खेलनेमें पुरस्कार पाए। जिसमें ही हाथ लगाता उसीमें मन लगाकर उसे सम्पन्न करता, वह हर तरहसे अनुकरणीय था। ॥४॥

धनिकोंमें धनी माना जाए—ऐसा जन्म उसने पाया। विद्याके प्रति उसका बड़ा प्रेम था। कविताके प्रति बड़ी अभिरुचि थी अनेक प्रकारकी कलाओंका प्रयत्न पूर्वक अभ्यास करता था। वह सदाचारी एव सन्मित्र था। ॥५॥

किसी भी सुन्दर वस्तुपर उसका मन मुग्ध हो जाता था। जिसके भी सम्पर्कमें आता उसके सौन्दर्यपर ही उसका ध्यान जाता। लिखनेमें अक्षरोंकी सुन्दरताको महत्व देता। सौन्दर्यको वह उपास्य देव ही मानता था। ॥६॥

चेंगळिल मयगु पार्पान
उण्कलम मयगु पार्पानि।
कुड तवि पडुक्के मेअ
कुरिक्चियिल मयगु पार्पान॥
कडपळिल मयगाय तोग्र
कण्डे येल्लाम वाँगि।
मरेयुर वोट्टिल पेंगुम
मसंकरित्तपगु पार्पान॥७॥

कार्सैयिल मयगिल पूसु
काय कमि निरेम्गु काट्टुम।
शोर्सैयिन अयगे शोलबाम
सूरियन क्षियम्गु तोण्म॥
मार्सैयिम मयगे पोट्टि
मसैगळिल पडिम्प मेग
चिसैयिन मयगे पोट्टि
चित्तिरक्कोर्ल तोट्टुम॥८॥

कैच्चिव 'कामिरा विल
कण्डवैयेल्लाम 'पोटो"
इन्दे पोल एपुतु कन्दे
इण्टूरै कपुवि पार्पान॥
अच्चिव पतत्तिसेल्लाम
मयपैये पोक्ळाय पेंपि।
मेच्चिवुम मण्परोडु
मिम मिग पोपुडु पोवडुम॥९॥

पहनावेमें सुन्दरताका ध्यान रखता था। भोजन-पात्रमें वह सुन्दरताका ध्यान रखता था। छाता, छड़ी बिस्तर मेज कुर्सीमें सुन्दरता का ध्यान रखता था। बाजारमें कोई सुन्दर वस्तु देखता तो उसको खरीदता था और उसे घरपर सजाकर रखता और शोभाका आनन्द पाता था। ॥७॥

सवेरे-सवेरे सुन्दर फूल-फलोंसे युक्त होकर शोभा पानेवाले पौधोंका वह गुण गान करता। प्रकृतिकी तूलिकाकी बनी सन्ध्या कालीन लाल-सूर्यको और पर्वतोंपर जमे बादलके टुकड़ोंकी शोभाका गुण-गान करता था। ॥८॥

हाथमें लिए छोटे कैमरा के चित्र (फोटो) खूब निकालकर अंधेरे कमरमें उन्हें धोता। उन सभी मित्रोंमें सौन्दर्यको ही महत्व देनेवाले मित्रोंसे वार्तालाप करता हुआ समय बिताता था। ॥९॥

नाटक प्पिरियन, मलक
माट्टियक्कलैयिल आश।
केडयम कत्तियोडु
केरडिगळ पयग आग।
मीडिय नेरम मीरिल
मीडिड निरैय माशी।
ओडमुम साने मोट्टि
उसविड उसप्पान उळ्ळम ॥१०॥

वीररगळ कवैय पोडू म
वेट्टिये वियमु वापत्तुम।
वीरगळ मुबे वापुम्वोर
तिरमैयिन सिरप्प पेशि॥
सूरर्गळ पमा पेर शोम
मुबन्वर उरगळ मोस्कि।
आरोव ममिवर्न्नुम
आण्मये अपगाम एम्बाम ॥११॥

कावले वेयूवम एम्बाम
कडमुळे कावल एम्बाम।
मूवसा वापुनु मुट्ट म
कावत्तिर पोक्मुम एम्बाम॥
मावलाल कावलेमुम
मप्पोळ्ळ मडम्मि लापार।
मावसे मेसाम एम्ब
माट्ट_वाम मात्तिप्पिस्कामस ॥१२॥

नाटकका प्रेमी था। नृत्यमें उसकी अभिरुचि थी। ढाल-तलवार लेकर उनका अभ्यास करता। पानीमें देर तक तैरते रहनेका शौक उसे था। आप ही नाव चलाकर मन बहलाया करता था। ॥१०॥

वीरोंकी कथाकी प्रशंसा करता और उनकी विजयका वर्णन करता। पूर्वकालके वीरोंकी वीरताका गुण-गान करता। कई वीरोंके वचनोंको दुहराता हुआ कहा करता था कि हर मनुष्यमें पौरुष ही प्रधान गुण है। ॥११॥

वह कहा करता था कि प्रेम ही भगवान है और भगवान ही प्रेम है। इस संसारका सारा जीवन प्रेममें समाया हुआ है। इसलिए जिसमें वह महान् प्रेम नहीं है उसका मर जाना ही अच्छा है। ॥१२॥

पेण्णगळ अपगु वेपुम
पिरियोर पिरवि एण्णाल ।
पण्कोळ पाडि आडि
पल कले परिपिपि योडुम ।।
कण गोळ्ळुम उडगळ पूण्डु
कळि तलम काट्टि यापा ।
एण्कोळ्ळुम इनिमक्कोस्साम
इवम्पिड माग एण्णुम ।।१३।।

पण्ण वयियिल माट्टिन
पोडुनकम परिम्बु पेशि ।
मोर्पोयिपाट्ट्क्कळाम
सुवम्बर आशो मूट्ट म ।।
अर्पुव तिरमैयोडुम
अरियुडन अमक्वान
कर्पन मिगुम्ब नल्ल
कवपळ्ळुम काट्टि चोल्वाम ।।१४।।

करैसाम शेपिक्क वेण्डुम
उमिरैसाम कळिक्क वेण्डुम ।
नेरिसा पुडुमै मिक्क
समुदायम निकव वेण्डुम ।।
पारैसाम नमदु माट्टिन
पेरुम्पुगय परप्पि, मक्कळ ।
पोरैसाम ओर्तुण वेण्डुम
एण्णवे पोपुडुम पेण्णाम ।।१५।।

यह कहा करता था कि स्त्री मात्र सौन्दर्य देवीकी प्रतिमूर्ति है। वह मानता था कि गाने और नाचनेवाली अनेक कलाओंका अभ्यास करनेवाली सुन्दर पहनावे पहनकर लोगोंको प्रसन्न करनेवाली युवती हर तरहके माधुर्यका आकर है। ॥१३॥

अनेक प्रकारसे देशके हितकी बातें करनेकी वाकपटुता उसमें थी वह ऐसी अजबकी कहानियाँ सुनानेमें समर्थ था जिनसे देश प्रेमका भाव पैदा होता था और जो कल्पना पूर्ण और ज्ञान वर्धक थीं। ॥१४॥

उसका एक मात्र सपना यह था कि सारा देश हरा-भरा हो। जीव मात्र सुखी हों। सारे संसारमें हमारे देशकी कीर्ति फैले और आपसकी लड़ाई बन्द हो जाए। ॥१५॥

अडिमपळ इरुक्का मायुम
　　अम्बरम अरसु पोम्म ।
कडियरुम वाति वेव
　　कट्पियगळ इरुक्का मायुम ॥
कुडि पोनै कळबिन अव्वम
　　कोम्बमुम इरुक्का मायुम ।
पिडियुम एम्मो वेउ
　　पेण्णैये पिरम्पि पेमुम ॥१६॥

वायुमैयुम करुपै सोन्न
　　वायुमैये वपुत्तुक्कूरी ।
तूयमैये पुगट्टम ओमे
　　इलक्कियम तुरैयाय कोण्डा ॥
तायमोपि तमिप पोमुक
　　तमियरम एन्रे नस्स
माय् पुरै मरिसारवम्मी
　　मडिक्कवि शूट्टुम्पेमुम ॥१७॥

पुदिय मक एण्णम वेण्डुम,
　　वापुक्कैयिर् पुदुमै वेण्डुम ।
मदिप्पुडन मम्मै कण्डु
　　मटू नाडुगरगळेल्लाम ॥
तुदिप्पुडन तोडरा एस्सा
　　तुरैयिलुम पुदुमै तोन्र ।
पिदिप्पयन एग पेण्णै
　　पिट्टिड वेण्डुम एम्मान ॥१८॥

उसके भाषणोंमें उसकी यही इच्छा प्रकट होती कि देशका यह शुभोदय कब होगा कि जब राष्ट्र दासता-मुक्त हो शासक प्रेम और धर्म युक्त हों, फूट डालनेवाला जाति भेद मिट जाए और मद्यपान हत्या और चोरीका नामोनिशान भी न रहे। ॥१६॥

समर्थ विद्वानोंका बार बार समावेश कराकर वह कहा करता था कि साहित्यका एक मात्र उद्देश्य यह हो कि वह समर्थता और करुणाका महत्व प्रकट कर पवित्रताका बोध करावे। इस प्रकारके साहित्यसे माता तमिल भाषा की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। ॥१७॥

वह कहा करता था कि आवश्यकता नई विचार धाराकी है। जीवनमें एक नवीनता आवश्यक है। हमें भाग्यकी बातें करना छोडकर ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि सभी क्षेत्रोंमें नवीनता आ जाए और संसारके सभी देश आतुरता और आदरके साथ हमारा अनुकरण करनेको तैयार हो जायें। ॥१८॥

पिरम्बवर शावचुम्म
　　पेट्रपोभट्रिर्कागा ।
मरम्बरम शिम्बे योडे
　　मम्पुमेर पण्णिगळ माट्टि ॥
इरम्बवरळ्ळे एन्रम
　　इरम्पवर आवार एन्ड ।
शिरम्बिडुम वेश वश्ति
　　मुरैमळे शिम्बं शेयवाल ॥१९॥

मारवम अवम पेरागुम
　　मा पेरुम शेरवार मैम्बम ।
मोडरुम कन्नि कट्टु
　　जयवरम्पडुम पेवुान ॥
तीवरुम मरिविर्कागा
　　वेश मासिरैयुम शेयुवोम ।
एवोव कुरैयुम इन्रि
　　इरवन्नु एयाप्पुरुळ्ळाम ॥२०॥

पनत्तिममेल माश वसु
　　पश्चिप्पैयुम एण्णिपार्तु ।
पुन्दतमुम कोळ्वाम पोट्टि
　　कुम्मतीये कर्पविरामल ॥
मनत्तिनाल मयमे तगळ
　　मरमगन मानिक्कक्कोळ्ळ ।
कण्णिळमा तम्बी तायर
　　कात्तिरुप्पार्गळ कण्णीर ॥२१॥

———

यह सदा देश सबकी बातोंपर विचार करता हुआ यह मानता
ा कि हम सभीका मरना तो निश्चित ही है जो लोग अपनी उत्तम
न्म भूमिकी चिन्ता करते हुये उसकी सेवा करते मरेंगे वे ही अमर
नेंगे। ॥१९॥

उसका नाम था माधव। बड़े धनी परिवारमें पैदा हुआ था।
उत्तम विद्या प्राप्त करके अच्छी उपाधि प्राप्त की। निर्मल ज्ञान प्राप्त
करनेके लिए उसने देशकी यात्रा की थी। उसके जीवनमें किसी बातका
कमी नहीं थी। वह सत्ताईस वर्षका था। ॥२०॥

१४. मोरु नाळिक्कु मोरुवरम

पल्लवि

मोरु नाळैक्कोरुवरम
    मोरु मोळिप्पोपुरेनुम ।
उसैप्पडैत्तवने
    एण्णिक्कुगित्तुम्बो मनमे ॥ (मोरु)

अनुपल्लवि

तिरु नाळुम तेरुम एरुम तोळिमसैन्दरुल
तिम्बने अलैपाससे वियालत्तिल निरुत्तिये (मोरु)

चरणम्

विळियुमुन विदियत्ती
    वेळुन्तुमुन वीट्टै विट्टाय ।
पेम्मोराम इरुत्तुक्कु
    वोवारुपोस मोट्ट मिट्टाय ।
उडलुम मनमुम ळोर्न्दु
    मोयुम्बिळा वीडु वमुम ।
उण्णुमपोयुम कूडा ।
    एण्णम निळप्पविरुल ॥ (मोरु) (१)

१४ एक दिन एक बार

[यह कविता गीत है। तमिलके गीतोंमें पहले पल्लवि नामके चरण होते हैं। यह पल्लवि हिन्दीकी टेक के समान है।

पल्लवि के बाद अनुपल्लवि नामके चरण रहते हैं। गीतका जो राग होता है उसका एक भाग 'पल्लवि' के गानेमें आता है और दूसरा भाग 'अनुपल्लवि' के गानमें आता है। अनुपल्लवि के बाद "चरण" नामक पूरे गीत आते हैं। हर गीतमें रागके दोनों भाग रहते हैं।]

पल्लवि

हे मन! जिसने तुम्हें पैदा किया उसका क्या तुमने एक दिन भी एक क्षण भरके लिए भी स्मरण करके सुख पाया?

अनुपल्लवि

मेले या पर्वके अवसरपर नहीं मनको भटकने न दे कर ध्यान लगाकर (क्या तुमने) ।।टेक।।

चरण

(तुम) सूर्योदयके पूर्व जागे पौ फटनेके पहले घरसे बाहर गए विभिन्न जगहोंको चमगादड़की तरह उड़ते गए शरीर और मनसे थककर आराम के लिए घर आए यहाँ आते हुए भी तुम्हारा मन स्थिर नहीं हुआ ।।१।। टेक

अरेक्काशुक्कानालुम
      ओरु नाळ मुपुम काण्णाय ।
मायिरम पेरयेनुम
      अमुप्पिणिप्पोय पार्पाय ।
उरैप्पार उरगद् केस्काम
      उर्यामिरुम ओल्वनै ।
उमुळ इरप्पवनै
      एण्णिडा नेरा मिस्लै ॥ (ओरु) (२)

शिला माळैक्कविकारम
      शेय्युम ओरुवर्कोम्नि ।
शेय्मा कोल्वर्ब एस्काम
      शेपृवाय नी पस्लै केम्नि ।
पलमाळुम कम्म मेस्काम
      पानिक्कुम अधिकारी ।
परमनै निमैक्कनुम
ओरु कणम उमक्किल्लै ॥ (ओरु) (३)

'माळुम किपमै' एपु
      मस्कार उरसालुम ।
माळैक्कु मागट्ट म
      वेसै मरिक्कम एन्नाय ।
पायुम पमलेत्तेडि
      पडुम पाडु कमविक्कल्लै ।
मगवानै एण्णा मट्ट म
      मनकाशम उमविकल ॥ (ओरु) (४)

एक अधेलीके लिए दिन भर खड़े रहते हो, हजार लोगोंसे मिलना हो तो भी जा जाकर मिलते हो। पर वाग्मयकारोंकी वाणीसे भी परे जो है, तुम्हारे अन्दर जो है उसका स्मरण करनेको समय नहीं है ॥२॥ टेक

थोड़े दिनोंके लिए अधिकार चलानेवाले एक व्यक्तिसे डरकर वह जो कुछ करनेको कहता है वह तुम दाँत दिखाते हुए करते हो पर बहुत दिनों तक—जन्म भर—तुम्हारा पालन करने वाले अधिकारी परमात्माका स्मरण करनेके लिए तुम्हें एक क्षणका भी समय नहीं मिलता ॥३॥ टेक

यदि कोई सज्जन कहे कि आज तीज है, त्यौहार है (इसलिए भगवानका स्मरण करो) तो तुम कहते हो 'आज काम अधिक है कल कर लेंगे। तुम धनके लिए जो परिश्रम करते हो उसकी कोई सीमा नहीं पर भगवानका स्मरण करनेके लिए तुम्हें समय नहीं है ॥४॥ टेक

मरैक्कानुक्कानालुम
　　ओद नाळ मुपुडुम काप्पाय ।
आयिरम पेरयेभुम
　　अलुप्पिरिप्पोय पार्पाय ।
उरैप्पार उरैप्पट केस्साम
　　उर्पत्तिबुम शोत्वन ।
　　उमुळ इरुप्पवनै
　　एण्णिडा नेरा मिल्लै ॥　　　(ओद) (२)

शिला माळेक्कविकारम
　　शोप्पुम ओरुवर्कल्लिर ।
शोम्पा शोल्वर्दै एल्लाम
　　शेयमाय नी पर्कै केल्लिर ।
पलनाळुम जन्म मेस्साम
　　पाविक्कुम अविकारी ।
परमनै निनैक्कवुम
ओद कमम उनविकल्लै ॥　　　(ओद) (३)

'माळुम किपमै एमु
　　मल्कवर उरैतालुम ।
माळैक्कु आणट्ट्म
　　वेकै अविकम एन्नाय ।
पापुम पम्पसैरीडि
　　पडुम पाडु कणविकल्लै ।
मगपानै एण्णा मट्ट्म
　　मनकाशम उनविकर्लै ॥　　　(ओद) (४)

———

एक अफसरके लिए दिन भर खड़े रहते हो, हजार लोगोंसे मिलना हो तो भी जा जाकर मिलते हो। पर वाग्मयवाणीकी वाक्से भी परे जो है, तुम्हारे अन्दर जो है उसका स्मरण करनेको समय नहीं है ।।२।। टेक

थोड़े दिनोंके लिए अधिकार चलानेवाले एक व्यक्तिसे डरकर वह जो कुछ करनेको कहता है वह तुम दाँत दिखाते हुए करते हो, पर बहुत दिनों तक—जन्म भर—तुम्हारा पालन करने वाले अधिकारी परमात्माका स्मरण करनेके लिए तुम्हें एक क्षणका भी समय नहीं मिलता ।।३।। टेक

यदि कोई सज्जन कहे कि आज तीज है, त्यौहार है (इसलिए भगवानका स्मरण करो) तो तुम कहते हो 'आज काम अधिक है कल कर लेंगे'। तुच्छ धनके लिए जो परिश्रम करते हो उसकी कोई सीमा नहीं, पर भगवानका स्मरण करनेके लिए तुम्हें समय नहीं है ।।४।। टेक

२५. इन्दियत्ताय तोत्तिरम

पल्लवि

ताये वनक्कम—इन्दियत्
ताये वनक्कम ।

अनुपल्लवि

वारणि तमिल वेरिल इल्लैयेनप्
पूरम कळन्निणप् पुण्णिय भूमियेम—		(ताये)

चरणङ्गळ

निल वळम नीर वळम निरेन्द भूमाकु
नीण्ड उन परप्पिकुम वेरिले इदु ।
चिलैयिलुम चिळैविलुम मलिन्दवुम वेसम
वेण्णिय यावुम उन एल्लैयिल वासम ॥ (ताये)	(१)

मुप्पतुम पतुमाम कोडि उन मक्कळ
मूकुलमतैयुम आण्डिडसक्कार ।
मधुर मामिय आवुळ्ळळ निरेन्दाय
मरिमात्तनताल मकिमैयिल इरुन्दोम	(ताये)	(२)

पडैयेडुत्तवरुम पणियेडुत्तवरुम
पर्वत नाडार उनैयडुत्तवरे
अडैवुडन मक्कळ पेयरुम तोणि
आवरित्ताय उन मकुणम ओंगा	(ताये)	(३)

वायेगळ पपला पडित्तवळ नीये
पडित्तवन पयमयेसम मकत्तेयुळ्ळाये ।
मातागळ मपडिम मरगळिरणिरन्दाय
अम्मिन वयिपळ्ळि मनैत्तैयुम मरिन्दाय ॥ (ताये)	(४)

१५. भारतमाताका स्तोत्र

पल्लवि

हे माता वन्दे। हे भारतमाता वन्दे।

अनुपल्लवि

तू सम्पूर्ण सम्पन्नता युक्त ऐसी पुण्य भूमि है जिसकी संसार भरमें कोई सानी नहीं है।

चरण

तेरे प्रदेशमें उर्वर भूमि और जीवन प्रद जल भरपूर है। तेरा विस्तार तो असमान है। मूल्यमें और उत्पादनमें तेरा देश उन्नत है। जो कुछ भी आवश्यक हैं उन सब का तेरे अन्दर वास है ॥१॥ टेक

तीस और दस करोड़ तेरी सन्तान है जो तीनों लोकोंका शासन करने योग्य हैं। आश्चर्य जनक समर्थतासे तू युक्त है । हम अपनी मूर्खताके कारण दासतामें रहे ॥२॥ टेक

तेरे पास आने वाले विभिन्न देशके लोग चाहे चढ़ाई कर आए हों, चाहें भूखके मारे आए हों उन सबको अपनाकर सबका पालन करनेका तेरा जो गुण है वह धन्य ॥३॥ टेक

तूने कई भाषाएँ सीखीं , जो कुछ सीखा उसके योग्य तेरा चरित्र है तू इच्छा भावको हटानेवाली धार्मिकतामें श्रेष्ठ हैं। प्रेमके सभी मार्गोंसे परिचित है ॥४॥ टेक

ज्ञानमुम कलैमळ्ळुविलवप्पिडमावाय
   मार्गारिगत्तिन पिरप्पिडमावाय ।
दानमुम तवगळ तोंगिनयुम कै
   वरुमम यावेयुम तयैत्तरुमिगे ।। (सार्ये) (५)

मव वेरि कोयुमैयै माट्र्म उन पोरुमै
   मट्रवर मवर्तयुम पोट्रम उम पेरुमै ।
सवमेनुम सत्तिय सान्तियै पुरैप्पाय
   सम्मार्गत्तवर शिर्मैयिल इरुप्पाय । (सत्ये) (६)

तू ज्ञान और कलाका वासस्थल है। सभ्यताकी जन्मभूमि है। तेरे हाथने दान और तपका धारण किया है। यहीं पर सब-तरहके धर्मकी शोभा हुई ॥५॥ टेक

तेरी सहिष्णुता धर्मान्धताका परिवर्तन करती है तेरी बड़ाई पराए धर्मोंकी प्रशंसा करती है। तेरी आशीः सत्य और शान्ति है। अच्छे सज्जनोंके मनमें तू रहती है ॥६॥ टेक

२५ कळपुळि अरिन्दवर

पल्लवि

अवरे कळपुळे अरिन्दवरावर
अनेकम मविलित तमुम्बवरावर
(अवरे)

अनुपल्लवि

तुम्बप्पवुवोर तुयरम सहियार
तुळ्ळिकुदित्तोडि तुचे सेयप्पुगुवार
इम्बम तमक्केना एवैयुम सेय्यार
यावरुम तुयप्पडा सेवगळ पुरिवार ।। (अवरे)

चरणङ्गळ

पळियास वाळ्विन एवैयुम पार्त्तु
पहैविनै तमक्केन प्परिवपिरदार्तु ।
विधेमाम मुळिम्बवै निरप्पुवन कोडुप्पार
वीण उपचारम विळम्बुवत विडुप्पार ।। (अवरे) (१)

मोयास नळम्बिडुम यावैयुम कण्डु
मोम्बेनञ्चेयुवार एम्कात्तोळ्ळुम ।
तम्याम एनवे तम सुगम एवैयुम
तळ्ळिळ्ळनततभिमानिस तानिवमुवमुम ।। (अवरे) (२)

२६. भगवानको जाननेवाले

पल्लवि

वे ही भगवानको जाननेवाले हैं—सबके आदरके योग्य हैं—

अनुपल्लवि

(जो) दुःखी लोगोंका दुःख न सहकर तड़पते हुए उनकी सहायता करने वाले हैं। अपने लिए कोई आनन्द नहीं चाहते पर इस उद्देश्यसे सेवा निरत हैं कि सब लोग सुखी हों।।टेक।।

चरण

(जो) भूखसे पीड़ित किसीको भी देखकर अपना ही उपवास मानकर कृपा पूर्वक उन्हें सान्त्वना देकर शीघ्र ही अपनी शक्तिभर (अन्न) प्रेम पूर्वक देते हैं और व्यर्थकी औपचारिक बातें छोड़ते हैं।।१।। टेक

बीमारीसे पीड़ित किसीको देखकर, व्रत मानकर सब तरहकी सुश्रूषा करते हैं। कर्तव्य मानकर अपना सो सब सुख छोड़ते और पास रहकर उसकी सेवा करते हैं।।२।। टेक

---

१७ तिरुमुडि शूडुवोम

पल्लवि

तिरु मुडि शूट्टिडुवोम्—शेयुवत्तमिय मोयिवक्कु। (तिरु)

अनुपल्लवि

वरु मोयि एवरक्कुम वारिक्कोडुत्तुदवि
वर्मै मिगुन्द तमिय उम्म उसगरिय। (तिरु)

चरणङ्गळ

पेट्टवळे इपपमु मट्टवरैसोपुवा
पेवैमै शेयुदु विट्टोम मावलि माल मम अवी।
ऊटु अरसियन्दे उरिमै पेरुमै कुगि
उव्ळम बवमिगनवास मिव्ळैगळ शीर्कुलैत्तोम—— (तिरु) (१)

मनेयै मीट्टुम मबळ अरिमण मीविरत्ति
मकिऴ्न मुपुकुम मवळ महिमै विळंवम्येपुवोम।
मुम पेरुमै वम्वे इमुम पुरुमै पेट्टु
मुत्तमिय योस्वियवळ चित्तम कुळिर्न्दिडवे। (तिरु) (२)

तायिम ममम कुळिन्दाल तवम अवुवे ममवक्कु
वारणि तमिस मर्मै यारितिमेल इगपुवार।
मोयुम मोडियुम विट्टु-मुन्वरियोवु मस्स
मूसुम कलैगळ एल्लाम मेसुम मेसुम वळर्प्पोम (तिरु) (३)

---

२७ श्री मुकुट पहनावें

पल्लवि

(हम) श्री मुकुट पहनावें, इसी तमिल भाषाका (टेक)

अनुपल्लवि

आनेवाली सभी भाषाओंको खूब देकर मदद पहुँचाने वाली दानशील तमिलकी सच्चाई दुनिया जाने (इस उद्देश्यसे) ।।टेक।।

स्वरण

हमने यह भूल कर डाली कि जननेवाली माँको छोड़कर अन्योंकी सेवा की। इससे हमारी माँ अपना राज्य खोकर अपने अधिकार और अपनी बड़ाईसे वञ्चित होकर दुःखी हुई इसलिए उसकी सन्तान हम भ्रष्ट हुए ।।१।। टेक

माँका उद्धारकर उसे फिर उसके सिंहासनपर बैठाकर संसार-भरमें उसकी कीर्ति फैलावेंगे। उसका पुराना गौरव प्राप्त हो जाए, और भी नया गौरव प्राप्त करे और त्रितमिल (प्राचीन कालमें, चेर चोल पाण्ड्य नामक तीन प्रसिद्ध राजाओंसे आदर प्राप्त अथवा इयल इसै नाटक—काव्य संगीत और नाटक—नामक तीन विभागोंवाली) का चित्त प्रसन्न हो इस उद्देश्यसे ।।२।। टेक

माताका मन प्रसन्न हो तो वह हमारे लिए तपस्या (तुल्य) है। अब फिर इस संसारमें कौन हमारा अपमान करेगा? आधि-व्याधि रहित होकर, सूक्ष्म बुद्धियुक्त होकर हम ग्रन्थों और कलाओंकी अधिकाधिक उन्नति करें ।।३।। टेक

२८ देशत्तोण्डु

पल्लवि

देस तोण्डुगळ् सेय्दिडुवोम
    देयुवम तुमे वरम्म तोषुवोम । (देसत्)

अनुपल्लवि

मम्मुडे माट्टुं माम माळ
    मम्मैयळ मुन्पोल इनि मीळा ।
एम्मुडैय राज्यिमम इदु वेगॅ
    इन्दिय मणिपुम्बिळ चोम्बमेग्रात्त ।। (देसत्)

चरणङ्गळ्

पन्नलकोदुमैये ओयित्तिडवुम
    भारत माडिमिन्वेपित्तिडवुम ।
मम्युम अडिमैत्तमम नीगि
    मस्बिन आग्मी वेम्बुमेमत्त ।। (देसत्) (१)

घोरम तुन्मुम इस्तामल
    ओम्मियिगेवम्म निस्तामल ।
पीतम पुदुमै पोवुधायचिम
    विपुरमै विम्बम वेम्बुमेमाल ।। (देसत्) (२)

पट्टिनिकिरप्पवर इस्तामल
    पडिक्काडवरेना ओस्तामल ।
एट्टिनमट्टिमुम एस्तायम
    इम्बुम राज्यिमम तेनपडवे ।। (देसत्) (३)

इम्बियर एस्ताम ओर जाति
    याम्बुम इगे ओर नीति ।
मोम्बयर ओरवयम इस्माद
    पुराम भरतियत्त उम्बाम्का ।। (देसत्) (४)

१८ देश सेवा

पल्लवि

देशकी सेवा करें ईशको हाथ जोड़ें कि वह हमारी सहायता रे।

अनुपल्लवि

अपने देशका पालन हम करें, पुरानी भलाइयाँ फिर प्राप्य हों इन उद्देश्योंसे) यदि भारतीयोंको यह मानकर खुशी मनानेका अधिकार ो कि यह हमारा राज्य है तो ।।टेक।।

चरण

अकाल नामक आफतको हटानेके लिए, भारत देशको अधिक र्वर बनानेके लिए यदि तुच्छ वासनासे निवृत्त होकर प्रेमका प्रताप ाना हो तो ।।१।। टेक

यदि (हम चाहें कि) कोई भी अन्न और वस्त्र-विहीन होकर ुस्त न रहे और यदि हम गौरवमय नवजीवन युक्त होकर स्वतन्त्रताका ानन्द पाना चाहें तो ।।२।। टेक

भूखा कोई न रहे अपढ़ कोई न कहलावे और अपना साध्य सब ुख पावें—ऐसा सुखमय राज्य स्थापित करनेके लिए ।।३।। टेक

भारतके सभी लोग एक जातिके हैं सभीके लिए यहाँ समान नियम (कानून) है दुःखी कोई नहीं है—ऐसी स्थिति जिसमें हो वैसा राज्य स्थापित करनेके लिए ।।४।। टेक

वासिक्कोडुमैगळ मीगिडवुम
　　समरस उणर्विगळ मोंगिडवुम ।
मोविक्केल्लाम इरुप्पिडमाय
　　मिर्कुमोर अरसियल वकुप्पडवे ॥　(वेसात्)　(५)

वरिगळै एल्लाम कुरैत्तिडवे
　　वरुम्बडि विळैयुळ निरैन्दिडवे ।
विरिगिरा पोतुप्पणत्तेल्लवे येल्लाम
　　वेट्टुम्बिक्कमम तोट्टिडवुम ॥　(वेसात्)　(६)

पम्मत्तिन पेरुमैय पोविकवेम्पोम
　　पक्कत्तुळ्ळिन बिले तूक्कि वप्पोम ।
गुणत्तिन पेरुमैगळ इल्लाद
　　कुलमुम विरिविलिलन्वोल्लादु ॥　(वेसात्)　(७)

मनिदन मनिदन एयप्पवेयुम
　　मक्कळै पोरिल मायुप्पदुम ।
तनियोर वयिमिल तवुत्तिर मोर
　　वरुमम उलगिनिल तपत्तिडवे ॥　(वेसात्)　(८)

सत्तिय वायमिनै मावुवक्कुम
　　मान्बम्येल्लैगळ कूडुवक्कुम ।
उत्तम गांधियिन उपदेसम
　　उलगुक्कोडुम नम वेसम ॥　(वेसात्)　(९)

ताप्पम्व रेम्बयर इंगिल्लै
　　हरिहिरम नमक्किनि पयिल्लै ।
वायन्दिडुम मरैयिडुम पुमय योयुमोम
　　वाळिलुम उयर्वोम वायन्दिडुवोम ॥　(वेसात्)　(१०)

———

जाति भेद की बुराइयाँ दूर करनके लिए समताका भाव फैलानेके लिए और न्यायका निवास स्थल हो ऐसा एक राज्य स्थापित करनके लिए ॥५॥ टेक

कर कम करनके लिए, आमदनी और उत्पादन बढ़ानेके लिए, विस्तृत होनेवाले सार्वजनिक खर्चको घटाकर किफायत लानेके लिए ॥६॥ टेक

धनके महत्वको हम दूर कर देंगे वस्तुओंकी कीमत हम बढ़ाकर रखेंगे गुण सम्पन्न न हो ऐसा कोई घराना अब नहीं रहेगा ॥७॥ टेक

मनुष्यका मनुष्य खाना दे लोग युद्धमें मर जाएँ—ऐसी रीतिका एक विशिष्ट रीतिसे रोकनके लिए और संसारमें धर्मकी व्याप्ति हो इस उद्देश्यसे ॥८॥ टेक

हमारा देश संसार भरको उत्तम मानव गान्धीजीके उपदेशका बोध करायगा कि वह सत्य-जीवन ग्रहण करे और शान्तिका महत्व जान ॥९॥ टेक

निम्न नामका यहाँ कोई नहीं है। दारिद्रय अब हमारे हिस्सेका नहीं है। जब सब जीवित हों प्रशंसा-योग्य काम करेंगे आकाशसे भी उन्नत होंगे। (अथवा स्वर्गमें भी उन्नत रहेंगे।)॥१०॥ टेक

जाति-भेद की बुराइयाँ दूर करनेके लिए समताका भाव फैलानेके लिए और न्यायका निवास व्याप्त हो ऐसा एक राज्य स्थापित करनेके लिए ॥५॥ टेक

कर कम करनेके लिए, आमदनी और उत्पादन बढ़ानेके लिए विस्तृत होनेवाले सार्वजनिक खर्चको घटाकर किफायत करनेके लिए ॥६॥ टेक

पैसेके महत्वको हम दूर कर देंगे वस्तुओंकी कीमत हम बढ़ाकर रखेंगे, गुण सम्पन्न न हो ऐसा कोई व्यापार अब नहीं रहेगा ॥७॥ टेक

मनुष्यको मनुष्य खाया ? लोग युद्धमें मर जाएँ—ऐसी रीतिको एक विशिष्ट रीतिसे रोकनेके लिए और संसारमें धर्मकी व्याप्ति हो इस उद्देश्यसे ॥८॥ टेक

हमारा देश संसार भरको उत्तम मानव गान्धीजीके उपदेशका बोध करायेगा कि वह सत्य-जीवन ग्रहण करे और शान्तिका महत्व जाने ॥९॥ टेक

"निम्न" नामका यहाँ कोई नहीं है। दारिद्र्य अब हमारे हिस्सेका नहीं है। जब तक जीवित हों प्रशंसा-योग्य काम करेंगे, आकाशमें भी उन्नत होंगे। (अथवा स्वर्गमें भी उन्नत रहेंगे।) ॥१०॥ टेक